श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर
गोपालगंज, सागर (म.प्र.)

तीर्थंकर पार्श्वनाथ की अद्‌भुत प्रतिमायें

2. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, गोपालगंज, सागर, मध्यप्रदेश में सफेद संगमरमर की 5 सर्प फणावलियों से युक्त पद्मासनस्थ जिनबिम्ब विराजित है। इस पर भी 'वृषभ' का लांछन बना हुआ है (चित्र क्र.2)।

संकलनः निर्यापक मुनि श्री अभयसागर जी महाराज, मुनि श्री प्रभातसागरजी महाराज, मुनि श्री चंद्रसागरजी महाराज, मुनि श्री निरीहसागर जी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - www.sanskarsagar.org\knowledge

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		फरवरी 2025	
16	रविवार	चतुर्थी	हस्त
17	सोमवार	पंचमी	चित्रा दिन/रात
18	मंगलवार	षष्ठी	चित्रा
19	बुधवार	सप्तमी	स्वाती
20	गुरुवार	सप्तमी	विशाखा
21	शुक्रवार	अष्टमी	अनुराधा
22	शनिवार	नवमी	ज्येष्ठा
23	रविवार	दशमी	मूल
24	सोमवार	एकादशी	पूर्वाषाढ
25	मंगलवार	द्वादशी	उत्तराषाढ
26	बुधवार	त्रयोदशी	श्रवण
27	गुरुवार	चतुर्दशी/पूर्णिमा	धनिष्ठा
28	शुक्रवार	प्रतिपदा	शतभिषा
		मार्च 2025	
1	शनिवार	द्वितीया	विशाखा
2	रविवार	तृतीया	उत्तराभाद्रपद
3	सोमवार	चतुर्थी	अश्विनी
4	मंगलवार	पंचमी	भरणी
5	बुधवार	षष्ठी	कृत्तिका
6	गुरुवार	सप्तमी	रोहिणी
7	शुक्रवार	अष्टमी-नवमी	मृगशिरा
8	शनिवार	दशमी	आर्द्रा
9	रविवार	एकादशी	आर्द्रा
10	सोमवार	द्वादशी	पुनर्वसु
11	मंगलवार	त्रयोदशी	आश्लेषा
12	बुधवार	त्रयोदशी	मघा
13	गुरुवार	चतुर्दशी	पूर्वाफाल्गुनी
14	शुक्रवार	पूर्णिमा	उत्तराफाल्गुनी
15	शनिवार	प्रतिपदा	उत्तराफाल्गुनी

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभः फरवरी-17,21 मार्च-2,6,7,9,10,14
मशीनरी प्रारंभः फरवरी-17,21 मार्च-10
वाहन खरीदनेः फरवरी-19,21,28 मार्च-8,10

तीर्थंकर कल्याणक

16 फरवरी : भगवान पद्मप्रभजी मोक्ष कल्याणक
18 फरवरी : भगवान सुपार्श्वनाथ जी ज्ञान कल्याणक
19 फरवरी : भगवान सुपार्श्वनाथ जी मोक्ष कल्याणक
19 फरवरी : भगवान चन्द्रप्रभ जी ज्ञान मोक्ष कल्याणक
22 फरवरी : भगवान पुष्पदंत गर्भ कल्याणक
24 फरवरी : भगवान आदिनाथ ज्ञान कल्याणक
24 फरवरी : भगवान श्रेयांसनाथ जन्म तप कल्याणक
25 फरवरी : भगवान मुनिसुव्रतनाथ मोक्ष कल्याणक
27 फरवरी : भगवान वासुपूज्य जन्म तप कल्याणक
02 मार्च : भगवान अरनाथ जी गर्भ कल्याणक
04 मार्च : भगवान मल्लिनाथ जी मोक्ष कल्याणक
06 मार्च : भगवान चन्द्रप्रभ जी मोक्ष कल्याणक
07 मार्च : भगवान संभवनाथ जी गर्भ कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

06 मार्चः रोहिणी व्रत
07 मार्चः अष्टान्हिका व्रत प्रारंभ
13 मार्चः षोडशकारण व्रत प्रारंभ
14 मार्चः अष्टान्हिका व्रत पूर्ण

सर्वार्थ सिद्धि

16 फरवरीः 06/58 बजे से 28/31 बजे तक ।
20 फरवरीः 13/30 बजे से 30/54 बजे तक ।
21 फरवरीः 06/54 बजे से 15/54 बजे तक ।
23 फरवरीः 06/53 बजे से 18/42 बजे तक ।
02 मार्चः 06/47 बजे से 08/59 बजे तक ।
04 मार्चः 26/37 बजे से 30/45 बजे तक ।
05 मार्चः 06/45 बजे से 30/44 बजे तक ।
09 मार्चः 23/55 बजे से 30/40 बजे तक ।
10 मार्चः 06/40 बजे से 24/51 बजे तक ।
11 मार्चः 06/39 बजे से 26/15 बजे तक ।

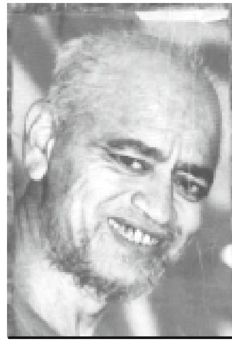

संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 310 • फरवरी 2025
• वीर नि.संवत 2551-52 • विक्रम सं. 2080 • शक सं. 1945

लेख

• एक तपः पूत कवि की काव्य साधना 08
• एक और विद्यानन्दि 11
• मोक्ष आज भी संभव 15
• भेंटः एक भेद विज्ञानी से 21
• जब अंत समय आया तो 31
• श्रमण शतक में क्या है 32
• मूकमृत्तिका महाकाव्य एवं धीवरोदय चम्पूकाव्य का भव्य लोकार्पण समारोह राष्ट्रीय विद्वत् संवाद सफलता पूर्वक हुआ सम्पन्न 46
• **वरिष्ठ नागरिकः** जीवन छोटा है, उसे खूबसूरत बनायें 56
• प्रतिष्ठा पितामह का जन्म शताब्दी महोत्सव 57
• धर्म रोग-सोरायसिस कारण व नियत्रंण उपाय 60

बाल कहानी

• डी.जे. से मौत 63

कविता

• उन्नायक संत विद्यासागर 13
• मुक्तिपथ के राही है 33
• धर्म हृदय का प्रक्षालन हो 55
• हथकरघा कारोबार नहीं 50
• नमामि आचार्य श्री विद्यासागर नमः 61

कहानी

• पुण्य अपना अपना 50

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 14
चलो देखें यात्रा : 34 • आगम दर्शन :35 • माथा पच्ची : 37 • पुराण प्रेरणा : 38
• कैरियर गाइड : 39 • दुनिया भर की बातें : 40 • इसे भी जानिये: 44
•दिशा बोध : 45• हमारे गौरव : 55 • वरिष्ठ नागरिक : 56 • हास्य तरंग-पाककला : 62
• बाल संस्कार डेस्क : 63 • संस्कार गीत व बाल कविता : 64 • समाचार : 65

प्रतियोगिताएं : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर-6232967108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़-94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर-9826593189

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर-9542505311 1
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस-9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली-9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली-94128 89449
डॉ.ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर-8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर-97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन-9425863244
डॉ. पंकज जैन, इंदौर -9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढ़ूमल-9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर-9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

❊ आंतरिक सज्जा ❊
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें ।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: 2100/-	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: 5001/-	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: 11000/-	(सदैव)
-परम संरक्षक	: 15001/-	(सदैव)

अपने शहर के
- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया -**संस्कार सागर**
  खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
- भारतीय स्टेट बैंक -**ब. जिनेश मलैया**
  खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
- आईसीआईसीआय बैंक
  श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
  खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय -संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर -10
फोन नं. : 0731-2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

- लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
- कथा-साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
- पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी-1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, विगत माह संस्कार सागर के अंक 309वें में सनकी राजा कहानी को पढ़ा तो हम अवाक रह गये कि व्यक्ति कैसे इतना क्रूर अधम बन जाता है जो अपनों की ही हत्या कर डालता उसे जरा सी भी आत्मीयता शेष नहीं रहती है करूणा और प्रेम की धारा जब सूख जाती है और मन में धन की चाहत नाम की कामना अहं और स्वार्थ की पराकाष्ठा व्यक्ति को क्रूर बना देती है। कहानी बहुत ही रोचक लगी। कहानी का आधार सत्य बीती हुई घटना है कथावस्तु बहुत ही क्रमबद्ध शब्द साधन्य बहुत ही सरल सुबोध है वाक्य रचना सीधी सपाठ होने से बोधगम्य है।

सुरेश जैन, इंदौर

• सम्पादक महोदय, जनवरी 2025 को हमने जैन विद्या ज्योतिष पंचाग के मई और जून महिने के पृष्ठ भाग को पलटकर देखा तो शिरपुर तीर्थ की बहुत कुछ जानकारी पढ़ने को मिली पढ़कर सहम सा गया इतनी सारी जानकारी देना और अंतरिक्ष पार्श्वनाथ के दिगम्बर होने का सच सामने परोसना हकीकत में बहुत ही श्रम साध्य कार्य है। ब्र. जिनेश मलैया के लिए जितना साधुवाद दे उतना कम है। व्रत तिथि की जानकारी के सिवाय एक तीर्थ गहन अध्ययन कर उसे विशिष्ट शैली में प्रस्तुत करना इस पंचाग की अपनी अलग ही पहचान है। इस पंचाग की सफलता हेतु ढेर सारी बधाईयाँ।

आकाश महाजन, शिरपुर

• सम्पादक महोदय, विगद दिनों राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत के एक बयान ने कई अखबारों में टीवी पर बहसें छेड़ दी हर तरफ चारों दिशाओं में कोहराम गया जिनके विचार कभी नहीं मिलते ऐसे सभी विपक्षी भाई भागवत के पक्ष में खुलकर आ गये है। उनका कथन यह रहा कि **हर मस्जिद के नीचे शिवलिंग की खोज मत करो** यह बात काफी गंभीर थी मगर सर संघ चालक की बात को भी कोसने वाले कम लोग नहीं है। सच यह है कि भागवत जी के बयान को न तो पक्ष समझ आया और न विपक्ष के प्रवक्ता गण वे कहना चाहते थे कि हर गली मोहल्ले में यदि मस्जिद के नीचे शिवलिंग खोजा जाने लगा तो अराजकता फैल जायेगी। भागवत जी के बयान को गहराई से समझना चाहिए इसी से सबका भला है।

राकेश गोहिल, सिरोंज

• सम्पादक महोदय, विगत माह संसद के बाहर प्रदर्शन करते हुए भाजपा कांग्रेस सांसद आमने सामने हुए एक दूसरों के विरूद्ध एफ.आई.आर दर्ज कराये गये इसे देखकर मुझे अपने कालेज के दिन याद आ ही गये आखिर झूठे आरोप लगाने का दौर कब थमने का नाम लेगा। संसद परिसर में होने वाले नाटकीय प्रदर्शन को अगर नहीं रोका गया तो निश्चित तौर पर ये प्रदर्शन हिंसक प्रदर्शन में बदलने में देर नहीं लगेगी। सांसद एक जन प्रतिनिधि है उसे अपने कर्तव्य पथ पर चलने के लिए प्रतिबद्ध होना आवश्यक है जनता के प्रति अपने वादे ईमानदारी से निभाना चाहिए अपनी बात जोरदार तर्क के साथ रखना चाहिए मात्र चीखना और हंगामा करना देश की जनता के साथ गद्दारी है।

सुबोध मारौरा, इंदौर

भक्ति तरंग

जपि माला जिनवर नाम की

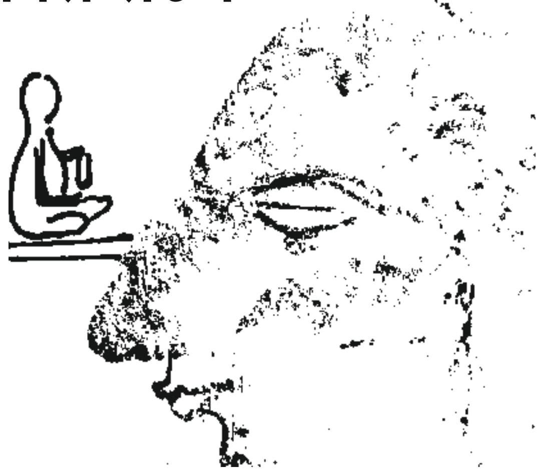

जपि माला जिनवर नाम की।
भजन सुधार ससों नहिं धोई, सो रसना किस काम की ।। जपि.।।
सुमरन सार और सब मिथ्या, पटतंर धूंवा नाम की।
विषय कमान समान विषय सुख, काय कोथली चाम की ।।1।। जपि.।।
जैसे चित्र नाग के मांथै, थिर मूरति चित्राम की।
चित आरुढ़ करो प्रभु ऐसे, खोय गुंडी परिनाम की ।।2।। जपि.।।
कर्म बैरि सहनिशि छल जोवैं, सुधि न परत पल जानकी।
भूधर कैसे बनत विसारैं , रहना पूरन राम की ।।3।। जपि.।।

(हे भव्य !) श्री जिनवर की माला जपो। जिनेन्द्र की भत्ति स्तवन से जिसने अपनी रसना (जीभ-जिह्वा) को नहीं धोया वह रसना (जीभ) अन्य किस मतलब की है ?

जिनेन्द्र का स्मरण ही सारयुत्त है, उनकी तुलना में और सब झूठ है, नाम मात्र का है, थोथा है। यह देह चमड़े की थैली हे और विषयों के सुखाभास कठोर बाण के समान पीड़ादायक हैं, कष्टदायक हैं।

भित्तिचित्र में चित्रित नाग के सिर पर विराजित भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति प्रशान्त और स्थिर है, उस स्थिर मुद्राको फल की इच्छा/चिन्ता रहित होकर अपने में आरूढ़ करो और अपना चित्त भी उनके समान स्थिर करो।

ये कर्म-शत्रु दिन-रात इतना छल रहे हैं कि एक क्षण भी उनका (भगवान पार्श्वनाथ का) स्मरण नहीं होता। भूधरदास कहते हैं कि उसके स्मरण नहीं होता। उसके स्मरण के बिना तेरा प्रयोजन कैसे सिद्ध होगा अर्थात उनके जप-स्मरण से ही तेरी सिद्धि होगी।

संस्कार प्रवाह

विश्व वंद्य श्रमणः विद्यासागर

18 फरवरी का दिन तिथि के अनुसार 6 फरवरी परम पूज्य विद्यासागर जी के लिए समर्पित दिन है। इस दिवस की पवित्रता परम पूज्य आचार्य विद्यासागर जी की समाधि स्मृति का पुनीत पर्व है विश्व शांति के लिए आचार्य श्री के उपदेश आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने अहिंसामयी विश्वधर्म को प्रभावी तरीके से जन मानस के पटल पर रखा। उनके समक्ष मैत्री प्रेम करुणा समता आदर्श जीवन दर्शन का लक्ष्य सदैव रहा है। भाषा संस्कृति के उत्थान का चिंतन भी उनका काफी गम्भीर रहा।

पूज्य श्री ने देशोन्नति की पवित्र भावना को अपने मन मंदिर में सदैव संजोकर रखी। श्रावक धर्म पालन में रोजगार की भूमिका को स्वीकार कर आचार्य श्री ने रोजगार में स्वाभिमान अहिंसा और करूणावृत्ति जीवंत रहे इस हेतु पूज्य श्री ने हथकरघा को प्रोत्साहित करते हुए विदेशी आकर्षण को समाप्त करने की दिशा में ठोस कदम उठाया। पूज्य श्री की दूर दृष्टि का मूल्य उनको समझ में जरूर आता है जो आग्रह से शून्य होते है।

आज भी तीर्थोद्धारक आचार्य श्री का चिन्तन अपनी उपलब्धि प्रस्तुत कर रहा है तीर्थ मात्र वंदनीय नहीं अपितु सच्चे मोक्षमार्ग के प्रेरणा स्रोत है आज विवाद के केन्द्र तीर्थ को बनाने श्वेताम्बरीय फितरत के सिवाय कुछ नहीं आचार्य श्री का शिरपुर वर्षायोग होना उनकी गहन तपस्या एवं तीर्थ रक्षा की भावना का श्रेष्ठ प्रकटीकरण ही था उन्होंने अपने आप को विवाद मुक्त रखकर जो योजनाएँ दी वे उनके तीर्थ वात्सल्य का अनुपम उदाहरण है अब हम सब उनकी तीर्थ रक्षा की परम भावना का सम्मान करते हुए उनके विश्व वंदनीय होने का तथ्य हृदयंग करें तो उनके प्रति हमारी सर्वोच्च श्रद्धांजलि होगी। गुरुदेव का समाधि स्मरण हमें कर्त्तव्य मार्ग का अनुगामी बनाता है।

एक तपः पूत कवि की काव्य-साधना

❊ श्रीमती आशा मलैया ❊

ऐसा लगता है कि उपमा कालिदासस्य के समान यमक विद्यासागरस्य का आभाणक प्रसिद्धि को प्राप्त होगा।

संस्कृत साहित्य में वीर, श्रृंगार एवं करुण रसों की ही प्रधानता रही हैः लेकिन आचार्य श्री की तपः पूत लेखनी का स्पर्श पाकर शांत रस अपनी संपूर्ण गरिमा से सर्वोपरि प्रतिष्ठित हो गया है।

जब तपः पूत लेखनी से काव्य प्रसूत होता है तब निःसन्देह की वह साधना ही आराधना का ही परिपाक होता है। वास्तविक काव्य-साधना तो उस कवि की ही हो सकती है, जिसका तन,मन, वचन सब कुछ अन्तर एवं बाह्य तप से परिपूर्ण हो उठा हो। वास्तव में ऐसा तपस्वी कवि आज के भौतिकवादी युग में सुदुर्लभ ही है, लेकिन भाग्यवशात् हम लोगों के बीच एक ऐसे **तरूण तपस्वी कवि** का उदय हुआ है, जिसके काव्य को साधना कहा जा सकता है। ये तपस्वी कवि हैं परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी। यद्यपि मैं अज्ञ हूँ, तथापि अपनी अल्पमति के अनुसार आचार्य श्री की काव्य-गरिमा की एक सामान्य झाँकी प्रस्तुत कर रही हूँ। आचार्य श्री का काव्य मम्मट की निम्न उक्ति को पूर्णतः चरितार्थ कर रहा है-

नियतिकृतनियमरहितां ह्लार्दकमयोमनन्यपरतन्त्राम्।
नवरसरुचिरां निर्मितिमादधतो भारती कवेर्जयति॥

मम्मट ने काव्य को **कान्तासम्मितं तयोपदेशयुजे** माना है, लेकिन जब हम आचार्य श्री के काव्य का अवलोकन करते है तब प्रतीति होती है कि आचार्य प्रवर का काव्य **मातासम्मिततयोपदेशयुजे** है, क्योंकि **कान्तासम्मित** उपदेश में तो किञ्चित् स्वार्थ हो भी सकता है, लेकिन **मातासम्मित उपदेश** तो हर परिस्थिति में कल्याणकारी ही होता है। आचार्य श्री के काव्य का प्रत्येक पद श्रेयोमार्ग की ओर उन्मुख करने वाला है, अतः वह **माता सम्मित** ही हो सकता है।

संस्कृत साहित्य में वीर, श्रृंगार एवं करुण रस की ही प्रधानता रही है, लेकिन आचार्य श्री की तपः पूत लेखनी का स्पर्श पा शान्तरस अपनी गरिमा और महिमा से सर्वोपरि प्रतिष्ठित हो गया है। आचार्य - प्रवर के काव्य का रसास्वादन कर ऐसी प्रतीति होती है कि **शान्त एवं एकोरसः**। शान्तरस स्वभावतः माधुर्य और प्रसाद की वृष्टि करता है। यदि इसका परिपाक किसी शान्त तपस्वी की लेखनी द्वारा हो तो उसके चमत्कार का क्या कहना। आचार्य श्री का शान्तरस से आप्लाचित काव्य, हृदय के अतल तल का स्पर्श कराता हुआ हृदयतंत्री के समग्र तन्तुओं को एक साथ झंकृत कर अलौकिक आनन्द की वर्षा कराता है। शान्त रस की छटा दिखाने वाला यह उदाहरण-

चारित्र के मुकुट से शिर ना तजोगे,
आरूढ़ संयममयी रथ पें न होगे।
स्वाध्याय में रत रहो तुम तो भले ही,
ना मुक्ति-मंजिल मिले दुःख ना टले ही।। जैन गीता

लगता है आचार्य श्री को **शतक-काव्य** की परम्परा विशिष्ट रूप से प्रिय है। शतक-

काव्य की गणना संस्कृत-साहित्य में मुक्तक काव्य के अंतर्गत की जाती है। मुक्तक का अर्थ हे वह काव्य, जो बिना किसी बाह्य उपकरणों (सन्दर्भादि) के उचित महत्त्वपूर्ण है-

मुक्तकेषु प्रबन्धेषु इव रसबन्धाभिनिवेशिनः कवयो दृश्यन्ते।

इस प्रकार शतक-काव्य में एक अनुपम माधुरी होती है, जो सहृदयों को रस-विभोर कर देती है। आचार्य श्री की तप-पूत लेखनी से संस्कृत-शतकों की त्रिवेणी तथा हिन्दी-शतकों का चतुवर्ग प्रसूत हुआ है। संस्कृत तथा हिन्दी के ये **सप्तशतक** सप्तसिन्धु की सप्तधारा के समान सम्पूर्ण भारतवर्ष के शुष्क जीवन को रस-सिञ्चित कर शान्ति की हरीतिमा में परिवर्तित कराने में सर्वथा समर्थ हैं। ये सप्तशतक हैं- 1. श्रमण शतकम् (संस्कृत): आर्याछन्द में निबद्ध यह शतक अनुपम माधुरी से युक्त है। (2) निरञ्जन शतकम् (संस्कृत): द्रुतविलम्बित छन्द में निबद्ध यह शतक, एक अलौकिक संसार का परिचय कराता सा लगता है। (3) भावना शतकम् (संस्कृत): इसमें चित्रालंकार का विशिष्ट अयोग मुरज वन्ध के माध्यम से किया गया है, हिन्दी शतक- (1.) श्रमण शतक (2) निरञ्जन शतक (3) भावना शतक (4) निजानुभव शतक। इन चारों शतकों में वसन्ततिलका छन्द प्रयुक्त हुआ है।

वसन्ततिलका आचार्य श्री का सर्वप्रिय छन्द है, क्योंकि जैन गीता तथा कुन्द कुन्द का कुन्दन भी इसी छन्द में निबद्ध है। जिस प्रकार कालिदास मन्दाकान्ता में सिद्धहस्त है, उसी प्रकार आचार्य श्री वसन्ततिलका में प्रवीण। उन्होंने अपने इस छन्द के बारे में एकाधिक बार कहा भी है -

वे कामधेनु सुरपादप स्वर्ग में ही
सीमा लिए दुख धुले सुख दे विदेही।
मै आपका स्तवन शाश्वत मोक्ष-दाता
ऐसा वसन्त तिलका यह छन्द गाता।। निरंजनशतक (हिन्दी)

विविध अलंकारी का मञ्जुल प्रयोग काव्य-माधुरी के वर्द्धन में पूर्णतः सफल सुफल है। श्रमण शतकम् (संस्कृत) के आर्याछन्द में निबद्ध निम्न श्लोक में यमक की मनोहारी छटा दर्शनीय है -

भव हेतु भूता क्षमा, व्यक्ता जिनेन या स्वीकृता क्षमा।
तो विस्मर नृदक्ष! मायतः सैव शिवदाने क्षमा।।

ऐसा लगता है कि उपमा कालिदासस्य के समान यमक विद्यासागरस्य का आभाणक (कहावत) प्रसिद्धि को प्राप्त होगा। निम्न श्लोक में अपह्नुति की विशिष्ट मनोहारी छवि है-

असित कोटिमिता अमिताः तके,
नहि कचा, अलिमा स्तव तात! के।
वरतपोऽनलतो बहिरागरता
सघन धूम्रमिवेण हि रागता।। निरंजनशतकम् (संस्कृत)

मुक्त काव्य के रूप में आपकी अन्य हिन्दी रचनाएँ है-समाधिशतक, योगसार, कल्याण मंदिर स्तोत्र तथा एकीभाव स्तोत्र (मन्दकान्ताछन्द)। प्रबन्ध काव्य के रूप में जैन गीता (समणसुत्तं का भावानुवाद) और कुन्द कुन्द का कुन्दन (समयसार का भावानुवाद) वैसे तो ये

दोनों काव्य अनुवाद ग्रंथ की कोटि में आते हैं, लेकिन आचार्य श्री की मौलिक प्रतिभा के समावेश से दोनों ही मौलिक सुषमा से अनुप्राणित हैं। सर्वत्र मौलिक उपमाओं, नित-नवीन कल्पनाओं, अधुनातन दृष्टान्तों से परिपूर्ण हैं ये दोनों प्रबन्ध-काव्य। अनुवाद को भी इतना सरस बनाया जा सकता है, इसका उदाहरण ये दोनों है। देखिये जैन गीता में णमोकार मंत्र का भावानुवाद-

हे शान्त सन्त अरहन्त अनन्त ज्ञाता,
हे शुद्ध बुद्ध शिव सिद्ध अबद्ध धाता।
आचार्य वर्य उवझाय सुसाधु सिन्धु,
मैं बार बार तुम पाद पयोज वन्दूं।।

निश्चित ही उपर्युक्त उद्धरणमात्र अनुवाद न होकर, रस-सिद्ध कवि की मौलिक प्रतिभा का पारस-स्पर्श पा एक नयी आभा का सृजन कर रहा है।

इसी प्रकार कुन्दकुन्द के कुन्दन के निम्न छन्द की छटा दुरूह सिद्धान्तों को किस सरसता एवं सहजता से प्रस्तुत किया जा सकता है, इसका परिचय कराने में समर्थ हैं-

मोहादिका उदय पाकर जीवरागी
होता स्वयं नहि कभी कहते विरागी।
धूली बिना जल कलंकित क्या बनेगा ?
क्या अग्नि योग बिन नीर कभी जलेगा ?

इसी प्रकार **भावनाशतकम्** के अंत में द्रुतविलम्बित छन्द में निबद्ध, गीर्वाणवाणी में प्रस्तुत शारदा-स्तुति कोमलकान्त पदावली के माध्यम से रसान्विति के नये क्षितिज का दर्शन कराती है-

असि सदा हि विषक्षय करिणी,
भुवि कुदृष्टहयेऽतिविरागिनी।
कुरु कृपां करुणे कर वल्लकि,
मयि विभोः पदपंकज षट्पदे।।

जैन गीता की **मनोभावना** तथा **कुन्दकुन्द की कुन्दन** की **अन्तर्घटना** देखकर लगता है आप मात्र **पद्य-कवि** ही नहीं उच्चकोटि के **गद्य-कवि** भी हैं। जन्मना, कन्नड़ भाषी होते हुए भी हिन्दी पर इतना अधिकार! आपके सशक्त गद्य का अवलोकन कर, यह अपेक्षा है कि गद्य के क्षेत्र में भी आपसे कुछ नवीन मौलिक साहित्य का सृजन होगा।

आप जब प्रकृति-प्रदत्त स्वर-लहरी में उपर्युक्त किसी भी छन्द का गायन करते हुए तब ऐसा प्रतीत होता है कि संगीत की स्वयं मूर्तिमान होकर मुखरित हो उठा हो। तपस्वी, संगीतज्ञ कवि के मुख से काव्य-पाठ का श्रवण कितना आनन्ददायी होता है, इसका प्रत्यक्ष अनुभव ही किया जा सकता है, शब्दों में उसका प्रकटीकरण असम्भव है।

परम पूज्य तपस्वी कवि से समाज को अनेक आशायें हैं। जिस प्रकार सहस्रांशु अपनी सहस्र-सहस्र किरणों से लक्षातिलक्ष कणों को आलोक से परिप्लावित कर देता है उसी प्रकार आचार्य प्रवर का **काव्य-सूर्य** कोटि-कोटि सहृदयों को रससिक्त कर स्वानुभव का पान करा, मोक्षमार्ग पर आरूढ़ करेगा, यह विश्वास है।

एक और विद्यानन्दि

✻ नीरज जैन ✻

क्या नाम है ? - प्रेम-सनी वाणी में एक छोटा सा प्रश्न था।

विद्याधर- उत्तर इससे अधिक संक्षिप्त हो नहीं सकता था।

हमारे साथ रहोगें तो विद्यानन्दि बना देंगे। -गुरु की इस स्वस्ति पूर्ण आश्वस्ति में गहन अर्थ गर्भित था। बस, उस दिन, उसी क्षण विद्याधर का सर्वस्व ही विलीन हो गया। बनने में तो समय लगा पर मिटना तो तत्काल हो गया।

साधु के साथ आडम्बर और गृहस्थ के साथ परिग्रह-पाप होते हुए भी आज की भौतिक मानसिकता में पाप माना नहीं जाता। साधु-संस्था में यत्र-तत्र दिखायी देने वाले शिथिल यत्नाचार और आरम्भ-प्रियता को देखते-देखते हम उस बात के आदी हो गये हैं और हमनें यह बात प्रायः स्वीकार कर ली है कि ज्ञान ध्यान और तप की सतत आराधना करने वाला, पूर्णतः निरारम्भी और यथार्थ अपरिग्रही साधु, अब केवल कथा-पुराण और आगम में ही ढूंढा जा सकता है। यदि कहीं कोई विरल साधक अपनी निर्मल साधना से आचार्य समन्तभद्र द्वारा प्रदत्त तपस्वी की परिभाषा को चरितार्थ करते भी हैं तो उन तक हमारी दृष्टि पहुँचना बड़े भाग्य की बात है, क्योंकि ऐसे तपस्वी लोकरंजन की भावना से रहित जनमेदिनी से असंपृक्त, भौतिक कोलाहल से दूर ही कहीं मिल पाते हैं।

हम भाग्यशाली हैं कि मोक्षमार्ग के साक्षात् उपासक ऐसे दिगम्बर तपस्वी संतों की परम्परा हमारी पीढ़ी तक अक्षुण्ण और अविच्छिन्न बनी हुई चल रही है। भौतिकता के इस मादक विषाक्त वातावरण में विज्ञान की चकाचौंध के बीच जहाँ जीवन की सारी मानवीय स्थापनाओं का घोर अवमूल्यन हो रहा है, धर्म और दर्शन के क्षेत्र में भी जहाँ कथनी और करनी की दूरी निरन्तर बढ़ती ही जा रही है वहीं कुछ ऐसे साधक भी हैं जो अपनी एकान्त निष्ठापूर्वक मूक साधना में संलग्न हैं। जो दिगम्बर मुद्रा के निर्भीक, निःस्पृह और स्वाधीन जीवन-दर्शन को अपने पर ही मूर्तिमान करते हुए भगवान् कुन्द कुन्द की मूल साधना-पद्धति की व्यावहारिकता का निःशब्द उपदेश दे रहे हैं। ज्ञान, ध्यान और तप के अतिरिक्त न जिनके पास कहने को कुछ है, न करने की।

बुन्देलखण्ड की एक सुन्दर उपत्यका में , सिद्ध क्षेत्र नैनागिरि की सनातन तपोभूमि पर इस वर्ष 1978 में चातुर्मास योग-धारण करने वाले कठोर तपस्वी और अतिशय ज्ञानाराधक आचार्य श्री विद्यासागर जी एक ऐसे ही साधक हैं। तीस-बत्तीस वर्ष की अल्प वय, शुभ लक्षणों वाला, गौर, सुकोमल शरीर, गरिमा-मण्डित सुदर्शन मुखाकृति और ओज-पूर्ण, किन्तु स्नेह-सनी वाणी। तन से नितान्त निरीह और मन से अति निःस्पृह। नम्रता और सौम्य की साकार प्रतिमाः

पिछले तीस महीनों में मुझे लगातार उनका सत्संग मिल रहा है। जब 1976 और 77 के दो चातुर्मास कुण्डलपुर में हुए तब उनके दर्शन का खूब लाभ हुआ। बाद में भी दर्शनों का योग लगता रहा। पाँच इन्द्रियों के विषयों पर उनके प्रवचन सुने। समयसार कलश की टीका पर उनकी पैनी और विश्लेषणात्मक टिप्पणियों का आकलन किया। अकलंक देव के राजवार्तिक पर उनके अनूठे चिन्तन की झलक पायी तथा षट्खण्डागम की अतल गहराइयों से चुने मणि-मुक्ताओं का उनका संकलन भी देखा।

विद्यासागर जी के गुरु स्वनामधन्य आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज स्वतः एक तप-पूत मनीषी

थे। संस्कृत के वे अद्वितीय विद्वान् थे। उनकी साधना ही उनके इस सुयोग्य शिष्य के रूप में आज साकार विचरण कर रही है। प्रथम दर्शन में जब बच्ची मिट्टी के लौंदे की तरह एक बालक अध्ययन-साधन की ललक से उनके समक्ष उपस्थित हुआ तभी उनकी अनुभवी और भविष्यचेता दृष्टि ने उस अनगढ़ शिला में एक कुशल शिल्पी की तरह मनोहर शिल्प-सौंदर्य की सारी संभावनाएँ स्पष्ट देख ली थी। अबोध शिष्य के साथ अनुभवी गुरु का बहुत संक्षिप्त वार्तालाप उस दिन हुआ।

क्या नाम है ? प्रेम-सुनी वाणी में छोटा सा प्रश्न था।

विद्याधर- उत्तर इससे संक्षिप्त हो नहीं सकता था।

हमारे साथ रहोगे तो विद्यानन्दि बना देंगे-गुरु की इस आश्वस्ति में गहन अर्थ भरे थे। इसमें जैन आगम के उद्भट प्रणेता, श्लोकवार्त्तिक अलंकार के रचनाकार आचार्य विद्यानन्दि की ज्ञान-गंगा के प्रति प्रणति भी थी। एक अबोध-जिज्ञासु पात्र को योग्यतम आचार्य, चिन्तक और लेखक के रूप में विकसित करा देने की अपनी क्षमता के आत्म विश्वास की घोषणा भी थी और विद्याधर को एक निरापद और श्रेयस्कर अभय अवलम्बन का अश्वासन भी था। बस, उस दिन उसी क्षण विद्याधर का सर्वस्व ही विलीन हो गया। आगे बनने में तो समय लगा पर मिटना तत्काल हो गया।

और तब से जो घटता गया वह एक दीर्घ साधक, समर्पित साधु की साधना-यात्रा का वृतान्त है, जो न कहीं लिखा है न छपा है। जो उस उदय के साक्षी है उनकी स्मृतियों में से यदा-कदा उसकी झलक मिल जाती है। महाराज के स्वमुख से सुनने या उनकी लेखनी से लिखे इस वृत्त को देखने की लालसा दो वर्षों से अधूरी है, शायद कभी पूरी हो।

शिष्य ने धर्म, दर्शन, न्याय, व्याकरण, और साहित्य रचना की सीढ़ियाँ जब तक पार की, तब तक साथ ही साथ व्रती, ब्रह्मचारी, गृहत्यागी बनाते हुए महाव्रती के दुर्गम शिखर तक, उस अनुकम्पावान महात्मा ने अपने इस भव-भ्रमण-भीरु बटुक को जैसे अंगुली पकड़ाकर ही पहुँचा दिया।

एक दिन वह दुर्लभ घड़ी आयी जो गुरु के जीवन की सबसे कोमल और सबसे अधिक प्रतीक्षित बेला होती है। वह घड़ी जब कोई गुरु अपने ही शिष्य को अपने से बड़ा बनाकर गौरवान्वित होता है। उस घड़ी का आनन्द या तो गुरु को मिलता है या माता को।

आचार्य ज्ञानसागर जी ने आचार्य-पद अपने इस सुयोग्य शिष्य को सौंप कर उस दिन स्वतः अपने इस नवाभिषिवत आचार्य की प्रथम वन्दना करके विनय और मार्दव का एक अनुपम उदाहरण समाज के समक्ष प्रस्तुत किया।

इस प्रकार विद्याधर से विद्यासागर और फिर आचार्य विद्यासागर बन कर इस महान् आत्मा ने ज्ञान, ध्यान और तप की जिस त्रिवेणी में अपने आपको सरोबार किया उसका अमृत जन-जन को पान कराते अत्यन्त निरपेक्ष भाव से उनका विहार हो रहा हैं। उनकी जीवन पद्धति पूर्णतः निराडम्बर और सादगी पूर्ण है। संघ में किसी को ब्रह्मचर्य का व्रत देना हो या ऐलक दीक्षा, केशलुंच हो या बिहार, हर कार्य बिना प्रचार के, बिना दिखावे के, अत्यंत शास्त्रोक्त पद्धति से वे करते हें। समीपवर्ती श्रावकों को भी वाद में ही इस सब कार्यकलाप की सूचना हो पाती है।

आज एक ओर जहाँ साधु-मार्ग भी हमारी आडम्बर प्रियता में डूब गया है, वैराग्य भी जहाँ महोत्सवों का मुखापेक्षी है, केश-लुंच भी जहाँ पूर्व-प्रचारित और जनाकुल शाभियाने में शोभा

पाते हैं, दीक्षाएँ भी जहाँ पोस्टर चिपका कर और पर्चे बँटवाकर भीड़ धर्मा ढंग से ली और दी जा रही है, वहाँ आचार्य विद्यासागर जी की निर्दोष साधना साधु-मार्ग के अकम्प दीपक की तरह प्रज्वलित है। इतना ही कठोर है शिष्य-मण्डली पर उनका अनुशासन। उनके बटुक शिष्य भी अपनी लगन, विनम्रता और ज्ञान-भक्ति द्वारा यही आश्वस्त करते हैं कि उनमें भी भविष्य के विद्यासागर हैं।

इन विशेषताओं के ही कारण, आज दो वर्ष से बुन्देलखण्ड में आचार्य विद्यासागर के दर्शनार्थी भक्तों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। कानों-कान उनकी कीर्ति देश के कोने-कोने तक व्यापती जा रही है सामान्य भक्त हो या साधक, विद्वान् हो या व्यापारी, मुमुक्षु हो या त्यागी, जो एक बार उनके प्रभावक व्यक्तित्व की छवि निहार पाता है, वह सदा के लिए उनका भक्त हो जाता है। जो एक बार स्याद्वाद-सम्मत उनकी **विविधनय-कल्लोल विमला** वाणी का अमृत चख पाता है, वह बार-बार उसके आस्वादन का आकांक्षी बनकर उनके चरणों में मस्तक झुका देता है।

हम गौरवान्वित है कि आचरण में अहिंसा, वाणी में स्याद्वाद और विचारों में अनेकान्त ही जिसका जीवन सिद्धान्त हो ऐसे साधु इस कलिकाल में भी एक दम असंभव नहीं है। ऐसी साधना का एक उत्तम उदाहरण हमारे भाग्य से हमारे पड़ोस में ही विराजमान है, जिसका शुभ नाम हैं प्रातः स्मरणीय आचार्य विद्यासागर।

कविता

उन्नायक संत विद्यासागर

✻ संस्कार फीचर्स ✻

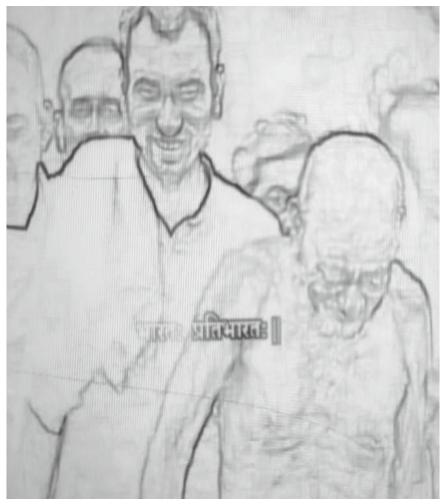

जन्म सार्थक केले तुम्ही दूर करिता अंधकार
मुकमाटी बोलली ती भाव ठेवा निर्विकार ।

हवा भारत नको इंडिया उदघोष केला स्वदेशीचा
हरकरघा हे प्रमाण देऊनी दिला न्याय कपाशीला ।

क्षत्रतेल अंगी तुमच्या मनी रंगले विमर्ष भाव
निर्विकल्प विचार तुमचे न्यनी पाझरे करुणाभाव

ज्ञानसूर्य तुम्हास म्हणती संस्कृत तुमची विद्वत्ता
प्राकृत तुमचे अंगोपांगी समयसारात गुणवत्ता

धरतीवर नजर तुमची नयन कधी ना उठते
नजर उठते जेंव्हा तुमची सृष्टि मंगलमय होते

ज्ञानसागरा विद्यासागरा संघस्थ दिले मुनी महान
ज्ञानपोर्णिमा नियमसागर सुधा प्रमाण दैदिप्यमान

बीज रोवीले जीवदयेचे गौ रक्षा हे कार्य महान
मुली शिक्वा मुली वाचा प्रतिभास्थली केला सम्मान

बीज रोवीले जीवदयेचे गौ-रक्षा हे कार्य महान
मुली शिक्वा मुली वाचवा प्रतिभास्थली केला सन्मान

ह्या युगाचे वीर तुम्ही करितो आम्ही वंदना ।
अंतरी मम तू दिसावा हीच अमुची प्रार्थना ।।

विद्यासागर नाम तुमचे विश्ववंद्य तव साधना ।
उत्थान व्हावे भारताचे झिझले सम शीलचंदना ।।

अमृत फल अमरुद

लेटिन नामः सोडियम गुयायावा

अमरुद भारी और ठण्डा होता है। रात को अमरुद नहीं खायें। अमरुद में विटामिन सी सेब तथा नारंगी से अधिक पाया जाता है। इसमें विटामिन बी-1 तथा निकोटिन पाये जाते हैं। अमरुद में खनिज जैसे-कैल्शियम, लोहा, फॉस्फोरस तथा मिनरल्स पाये जाते हैं। इसमें रेशा (Fibre) मिलता हैं, जो कि हमारे शरीर के लिये आवश्यक है। भोजन को पचाने में भी अमरुद उपयोगी हैं।

प्रकृति – न ठण्डा न गर्म।

नशा– अमरूद खाने से अफीम, गाँजा, चरस का नशा उतर जाता है।

सिगरेट पान मसाला– खाने की आदत छुड़ाने के लिये अमरुद के तीन तीन पत्ते नित्य तीन बार चबाकर रस चूस जायें और पत्तों का चुरा थूक दें।

स्वस्थ संतान– अमरुद पौष्टिक भोजन है। गर्भावस्था में नियमित अमरुद खायें बच्चा हष्ट-पुष्ट जन्मेगा।

हड्डियाँ कमजोर– अमरुद नियमित खाते रहने से हड्डियाँ मजबूत बनती हैं तथा मजबूत रहती हैं।

हर्निया– यूकेलिप्टस के 5 पत्ते, जामुन के 5 पत्ते, अमरुद के 5 पत्ते और आम के 5 पत्ते इनको धोकर एक लीटर पानी में टुकड़े करके उबालें। उबलते हुए 250 ग्राम (चौथाई भाग) रहने पर छानकर ठण्डा करें। नित्य एक बार पियें। दो सप्ताह प्रयोग करके देखें। हार्निया में लाभ होगा।

गुदा निकलना– शौच के समय किसी-किसी की गुदा (Anus) बाहर आती है। गुदा को अंदर करके अमरुद के पत्तों को पीसकर इसकी लुगदी मलद्वार पर बाँधने से गुदा बाहर निकलना बन्द हो जाता है।

उन्माद (Mania)– इलाहाबादी मीठे अमरुद पाव भर प्रातः और इतने ही पुनः शाम को पाँच बजे नित्य छह सप्ताह खायें। चाहें तो साथ में नींबू, कालीमिर्च, नमक स्वाद के लिए अमरुद पर डाल सकते हैं। इससे मस्तिष्क की मांस पेशियों को शक्ति मिलेगी, गर्मी निकल जायेगी, उन्माद दूर होगा। अमरुद खाने से मानसिक चिन्ताएँ भी दूर होती हैं।

दो अमरूद पानी के भरे भगोने में रात को डाल दें और इन्हें प्रातः भूखे पेट खायें। इससे उन्मादन, मस्तिष्क की गर्मी ठीक हो जाती है। अमरूद खाने से मस्तिष्क के स्नायुयों को भरपूर शक्ति मिलती हे। यह मस्तिष्क को शांत रखता है। नित्य अमरूद खाने से मस्तिष्क का संतुलन ठीक रहता है।

मोक्ष आज भी संभव

✼ आचार्य विद्यासागर जी ✼

निराकुलता जितनी-जितनी जीवन में आये, आकुलता उतनी-उतनी घटती आए, उतना-उतना मोक्ष आज भी है।

मोह का अभाव हो जाए, तो आप आज ही मुक्ति का अनुभव कर सकते हैं। मुक्ति का मार्ग है, तो मुक्ति भी है। मुक्ति है तो आज भी राग-द्वेष का अभाव है।

प्रतिक्रमण का अर्थ– आक्रमण संसार है, प्रतिक्रमण मुक्ति है। प्रतिक्रमण का अर्थ है किये हुए दोषों का मन-वचन-काय से, कृत-कारित-अनुमोदन से विमोचन करना। मोचन शब्द से ज्ञात होता है कि छोड़ने के अर्थ में मोक्ष शब्द आया है। अनादिकाल में धर्म छटा है और छोड़ा जाएगा, यही पाप है।

संसारी प्राणी दूसरे को दण्ड देना चाहता है, पर अपने-आप दण्डित नहीं होना चाहता। मुनि ही एक ऐसा जीव है जो दूसरे को दण्ड देना नहीं चाहता है और यह खुद प्रत्येक प्राणी के सम्मुख वह सुने या न सुने अपनी पुकार पहुँचा देता हैः एकेंद्रिय से लेकर पंचेद्रिय तक सब जीवों के प्रति मैं क्षमा धारण करता हूँ, मैं क्षमा करता हूँ ओर मेरे द्वारा मन-वचन-काय से, कृत-कारित-अनुमोदन से किसी भी प्रकार से आप लोगों के प्रति दुष्परिणाम हो गये हों, तो उसके लिए क्षमा चाहता हूँ और आप लोगों को भी क्षमा करता हूँ। ये प्रतिक्रमण के भाव हैं।

लेकिन आप तो आक्रमक बने हैं। आक्रमक क्रोधी, मानी, मायावी, लोभी, रागी और द्वेषी होता है। प्रतिक्रमणी रागी नहीं होगा, मानी होगा वह तो मन के ऊपर मान करेगा कि मैं तेरे से बड़ा हूँ, तुझे निकाल ही दूंगा। मान का अपमान करने वाला यदि कोई संसार में है, तो वह मुनि है। वह क्रोध का उदय आ जाए, तो खुद शान्त बन जाता है। क्रोध यदि जलता रहे और उसके लिए ईधन नहीं लिये, तो अग्नि थोड़े ही जलेगी, वह तो शान्त हो जाएगी। इस प्रकार दशलक्षण धर्म के माध्यम से वह सारी कषायों को शान्त कर देता है। वास्तविक क्रोधी, मानी, मायावी ओर लोभी तो मुनि है वह इनसे, जैसे लोभ को भी प्रलोभन देकर अपना काम निकाल देता है। इस तरह वह प्रतिक्रमण करने वाला बड़ा काम कर रहा है, वह अपना काम गुपचुप करता रहता है। उसकी भावना अहर्निश चलती रहती है।

आत्मा को निर्दोष बनाना ही मुक्ति है। मोक्ष तो फल है और निर्जरा साधना है। साधना का अर्थ एकदेश मुक्ति का मिलता है। एक देश आत्मप्रदेशों में दोषों का निवारण होना निर्जरा है। पूर्णरूपेण अभाव को प्राप्त होना मोक्ष है।

हमारा जीवन जो मुक्ति के लिए आगे बड़ रहा है, उसके लिए साधक कम से कम बने। संसारी प्राणी अनादिकाल से इसमें रचता पचता आ रहा है। उसके लिए कोई छोर नहीं है, विगनिंगलेस है, आदि नहीं हैं, अंत भी नहीं है। यह संसार तो अनादि अनंत है। हम इसमें भटकते भटकते आ रहे हैं। तात्कालिक पर्याय के प्रति जो आस्था है, उसको भूलना होगा और त्रैकालिक जो आ रहा है उस पर्याय को धारण करने वाला द्रव्य है मैं आत्मा कौन हूं, इसके बारे में चिन्तन करना होगा। प्रायः हमारे आचार्यों ने इस पर्याय को क्षणिक बताते हुए क्षणभंगुरता और निस्सारता के बारे में उल्लेख

किया है। सारी की सारी पर्याएँ निस्सार हो होती है, ऐसा नहीं है किन्तु संसारी प्राणी को मोक्षमार्ग पर चलने के लिए पर्याय ही हेयता बताना अति आवश्यक है। इसके बिना उसकी आत्मा उस पर्याय से हटकर त्रैकालिक जो द्रव्य है, उसके प्रति नहीं उठ सकती है जब तक उसकी दृष्टि उस अजर-अमर द्रव्य के प्रति नहीं जाएगी, तब तक संसार में रचना-पचना छूटेगा नहीं।

संसारी प्राणी की स्थिति यह है कि क्षेत्र का प्रभाव उनके ऊपर ऐसा पड़ जाता है कि उस चकाचौंध में जब वह फंस जाता है, तब अतीत में बहुत ही अच्छा भी क्यों न कार्य किया हो, उसे भी वह भूल जाता है और जीवन के आदि से लेकर अंतिम समय तक यों कहना चाहिए वह उन्हीं भोगों में व्यस्त हो जाता है। चारों गतियों में सारे जीव व्यस्त हो जाते हैं, लेकिन मनुष्य गति ही एक ऐसी है, जिसमें व्यस्तता नहीं पायी जाती। व्यस्तता बनायी भी जा सकती है और मनुष्य जीवन में ही व्यस्तता को धक्का लगाया जा सकता है। वह एक विशेष कोटि का विवेक जागृत कर सकता है। यह विवेक एक छोटे बच्चे में भी पाया जा सकता है।

मुनिचर्या में वीतरागता की झलक- इस प्रकार जिस व्यक्ति को सम्यग्दर्शन हो गया, वह चारित्र पर अग्रसर होगा ही। उसके अन्दर तड़प लगी रहती है कि किस प्रकार मैं मुक्ति के मार्ग को प्राप्त करूं, वह कहाँ पर है, किस कोने में है, उसको ढूंढता रहता है। कोई उदाहरण के लिए आ जाए, तो वह कह देता है कि बस अब बताने की कोई आवश्यकता नहीं । सम्यग्दृष्टि को मुनि की प्रत्येक क्रिया में वीतरागता दिख पड़ती है। इसमें कोई सन्देह नहीं, मुनिचर्या के विधान के अंतर्गत जो नियम हैं , वे सारे वीतरागता के द्योतक हैं । मुनि तो उन्हें निर्जरा का निमित्त बनाता है। वे सभी कार्य उसके लिए निर्जरा के निमित्त बन सकते हैं । इस प्रकार चौबीसों घण्टे बैठते, उठते, चलते और बोलते फिर बोलते-चलते समय भी आप मुनियों के माध्यम से शिक्षा ले सकते हैं । सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान चरित्र की भूख को तीव्र बना देते हैं। इनके उत्पन्न होने के उपरान्त चारित्र की तीव्रता बढ़ जाती है, क्योंकि उसमें जल्दी से जल्दी मुक्ति की भावना होती है। आसन्न भव्य में हमारी गिनती नहीं आ रही है, अतः जल्दी करना चाहिये, शीघ्रम्।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि मुक्ति का मार्ग छोड़ने के भाव में है और जो छोड़ने के भाव में है और जो छोड़ देगा, उसमें प्राप्त होगी निराकुल दशा। उसको कहते हैं, वास्तविक मोक्ष। वास्तविक मोक्ष अर्थात् निराकुलता । निराकुलता जितनी-जितनी जीवन में आये, आकुलता जितनी-जितनी घटती जाए, उतना-उतना मोक्ष आज भी है। निर्जरा के माध्यम से भी एक देश मुक्ति मिलती है, पूर्ण नहीं मिलती। एक देश आकुलता का अभाव होना यह उसी का प्रतीक हैं कि सर्वदेश का भी अभाव हो सकता है। राग-द्वेषादि जितने-जितने भाग में हम आकुलता के परिणामों को समाप्त करेंगे, उतने-उतने भाग में निर्जरा बढ़ेगी, उतनी निराकुल दशा का लाभ होगा। तो आकुलता को छोड़ने का नाम ही है मुक्ति। आकुलता को छोड़ने का अर्थ ही यह हुआ आकुलता के जो कार्य हैं, आकुलता के जो साधन हैं , द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव-सबको छोड़कर जहाँ निराकुल भाव जागृत हो, उस प्रकार का

अनुभव करने का नाम ही तो निर्जरा है। इसीलिए बार-बार एक-एक समय में भी आप निर्जरा को बढ़ा सकते हैं, निर्जरा के बढ़ने से मुक्ति भी अपने पास आयेगी।

मोक्षः आत्मा का उज्जवल भावः सात तत्त्वों में एक तत्व मोक्ष भी है और वह आत्मा से पृथक् तत्व नहीं है, जो आत्मा का ही एक उज्जवल भाव है। यह मोक्ष-तत्त्व बाकी के जितने भी तत्त्व हैं , वे सारे के सारे तत्त्व एक दृष्टि से गौण हो सकते हैं , समाप्त हो सकते हैं, लेकिन मोक्ष-तत्त्व अनन्तकाल तक रहेगा, क्योंकि वह फल के रूप में है। सभी का उद्देश्य वहीं है, अपने को मोक्ष प्राप्त करना।

नियतिवाद का सम्यक् स्वरूपः जिस समय जो होने वाला है, आने वाला है, उस समय वह आ ही जायेगा। मुक्ति तो अपने को मिल ही जायेगी। प्रयास करने से कैसे मिलेगी ? प्रयोग करना व्यर्थ है। बिलकुल ठीक है, यदि नियत ही आपका जीवन बन जाए, तो उस जीवन को मैं सौ-सौ बार नमन करूँ। जिस समय जो पर्याय आने वाली है, उसी समय आयेगी, अपना यहाँ पर कुछ नहीं चल सकता। होता स्वयं जगत् परिणाम अपने-अपने स्वयं परिणमन होते रहते हैं, लेकिन मैं जग का करता क्या काम ? इस ओर भी तो ध्यान देना चाहिए ना ? होता स्वयं जगत परिणाम तो बहुत अच्छा लगता है और मैं जग का करता क्या काम नहीं-सब काम, क्योंकि मुक्ति के मार्ग पर तो आने के लिए कहता है, समय पर सारी पर्यायें नियत हैं। प्रत्येक समय में प्रत्येक पर्याय होती है और वह पर्याय यदि नियत है-यह श्रद्धान हो जाए, तो मुक्ति दूर नहीं है। वही मुक्ति है। नियतिवाद के ऊपर डट जाना ही मुक्ति है। नियतिवादी के सामने सब आत्मसमर्पित (सरेंडर) हो जाते हैं।

ध्यान रखना कि नियतवादी को क्रोध नहीं आता, मान नहीं आता। उसे किसी की गलती नजर नहीं आती। उसके सामने मात्र नियत, प्रत्येक पर्याय नियत है। देखो, जानो, बिगड़ो मत-यह सूत्र अपनाया जाता है। वह देखता रहेगा, जानता रहेगा, लेकिन बिगड़ेगा नहीं। लेकिन आप बिगड़े बिना रहते नहीं। देखते हैं जानते भी हैं और बिगड़ जाते हैं इसलिये नियति को छोड़ देते हैं। नियति के माध्यम से सारे शत्रु आत्मसमर्पित हो जाते हैं। भगवान् ने देखा वह नियत देखा, बिलकुल सही-सही देखा, वह तो कुछ पर्याय निकलती है, यह तो भगवान ने देखा था उसी के अनुसार हो गया। क्रोध-मान-माया लोभ के लिए कोई स्थान नहीं । क्रोधादि के ऊपर यदि विश्वास ज्यादा हो जाता है, तो क्रोध कर लेते हैं , तो ध्यान रखना आप नियतिवाद के ऊपर ही क्रोध कर रहे हैं और भगवान् के ऊपर ही क्रोध कर रहे हैं , क्योंकि भगवान् ने जो देखा, उसको मान नहीं रहे हैं। क्रोध करने का अर्थ सारी की सारी व्यवस्था के ऊपर पानी फेर देना है।

बिलकुल क्रम से पर्यायें आती हैं-यह भगवान् और उसके जो दास हैं भक्त, वे भी जानते हैं। लेकिन मामला कहाँ बिगड़ रहा है ? बिगड़ तो वहाँ रहा है, जिधर कषाय के वशीभूत होकर आत्मा अपने स्वरूप को भूलकर नियतवाद से स्खलित हो जाता है। जिस समय वह बिलकुल शुद्ध रहता है, नियतिवाद का अर्थ भी यह है कि अपने-आप में समता के साथ बैठ जाना, कुछ भी हो

परिवर्तन सामने, उससे किसी प्रकार का हर्ष-विषाद नहीं करना। यह नियतिवाद का वास्तविक अर्थ है। प्रत्येक कार्य के पीछे संसारी प्राणी अहंबुद्धि या दीनता का अनुभव करता रहता है। कार्य तो होते रहते हैं, लेकिन वह आत्मा उनसे कर्तृत्व भी रखता है, यह बात नहीं है । भगवान इसीलिए तो सारे विश्व के लिए पूज्य हैं कि उन्होंने कर्तृत्व को एक द्रव्य में सिद्ध करके भी बाह्य कारण के बिना उसमें किसी भी कार्यरूप परिणत होने की क्षमता नही होना दर्शाया है। कार्य रूप जो द्रव्य परिणत होता है उससे बाहर का भी कोई हाथ है, इससे वह अभिमान कर नहीं सकेगा, मैंने किया ऐसा कह नहीं सकेगा।

मुक्ति-इच्छा का अभाव- दूसरी बात यह है बाहरवाला ही सब कुछ करता हो तो उस समय दीनता आ जाएगी, तो उस समय बाह्य तथा इतर अपना उपादान है और निमित्त कई प्रकार के हैं-द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव अलग-अलग हैं। इस प्रकार जो बाह्य और अन्दर है, उसे कहकर दीनता को समाप्त करने का एक कारण उन्होंने बताया, आभ्यंतर कारण उपादान नहीं, उसके माध्यम से यह कार्य होता है। उसमें कार्य में ढलने की क्षमता उपादान है, इसलिये दीनता नहीं अपनाना चाहिए। सारे के सारे कार्यों में मेरा हाथ है- इस पथिक के मन में अहंभाव जागृत न हो इसलिए वे कह देते हैं कि तेरे अंदर क्षमता तो है, लेकिन वह क्षमता व्यक्ति के रूप में तभी व्यक्त हो सकती है, जबकि दूसरे का भी उसमें हाथ लग जाता है। इस प्रकार कहने से दीनता और अहंभाव दोनों हट जाते हैं, कार्य निष्पन्न हो जाता है। इन दोनों को हटाने के लिए नियतवाद रखा है, अर्थात् मैं कर्त्ता हूँ, यह भाव निकल जाए, समय पर सब कुछ होता है, मैं करने वाला कौन ? यह भाव आ जाए, इससे तो समता आ जाए। जब वह दूसरे पर निर्भर है तो मैं कहाँ कर सकूंगा , क्योंकि समय पर होना इसके लिए आचार्यों ने बताया है। उन्होंने यह भी बताया कि मुक्ति के लिए ऐसे कोई हम पकने वाले नहीं हैं। जिस प्रकार आम डाली के ऊपर पक जाते हैं और उनको मुक्ति मिल जाती है। इस प्रकार हम संसार में नहीं रह सकेंगे। जो आसन्न भव्य बन जाता है, वह पाल रखकर अपनी आत्मा को तपा देता है, लेकिन उतावली आ गयी तो ऐसी की ऐसी स्थिति हो जाती है।

आप निराकुल होकर, एकाग्र होकर जो साधना बनानी चाहिये, वह साधना बनाओ। यहाँ तक कि आप मोक्ष के प्रति भी इच्छा मत रखो। इच्छा का अर्थ ही संसार-मोह हैं और इच्छा का अभाव ही मुक्ति है। मुक्ति ऐसी चीज है, जिसे निराकुल भाव का उद्घाटन करके अंदर प्राप्त करना है, जहाँ पर जाना है। आज तक राग का ही बोलवाला रहा है, अब वीतराग अवस्था का ही मात्र उद्घाटन करना चाहिए।

वीतरागता- संसारी प्राणी को दुःख क्यों हो रहा है ? इसका कारण है राग। सकल संसार त्रस्त है, आकुल-व्याकुल है। इसका कारण विषय राग को हृदय से नहीं हटाना है। वीतरागता को हृदय में नहीं बैठाया, जो शरण है, तारण-तरण। इसलिए हमें वीतराग अवस्था को ही अपने हृदय में स्थान देना है, राग को फेंक देना है। यह ध्यान रखना, रोग के लिए एक जगह दी जाए और वीतरागता के लिए भी एक जगह दी जाए, ऐसा होगा नहीं , क्योंकि इन दोनों के बीच में लड़ाई होती

है। दोनों की लड़ाई में विजय किसकी होगी-कह नहीं सकते कि अब किसका बल ज्यादा हो। इसलिए राग रहेगा, तो वीतराग अवस्था नहीं होगी। हाँ, राग में कमी आ सकती है, राग में कमी आते-आते एक बार समापनपूर्ण वीतराग भाव प्रकट होंगे, वह स्वभावनिष्ठ प्राणी बनेगा और उसके सामने संसार ही नतमस्तक हो जाता है।

सुख को चाहते हुए भी यह संसारी प्राणी राग को छोड़ नहीं रहा है और दुःख को नहीं चाहते हुए भी दुःख इसीलिए पा रहा है। राग जो है वह दुःख का कारण है ओर सुख का कारण वीतराग है। वीतरागता कोई बाहर से नहींआती। राग बाहर को अपेक्षा रखता है, किन्तु आत्मा में होता है और वीतराग भाव पर की अपेक्षा नहीं रखता, किन्तु आत्मा की अपेक्षा रखता है इसलिए आत्मा की अपेक्षा आपको आज तक हुई नहीं और पर की अपेक्षा हुई, इसलिए अपेक्षा का अर्थ है यह संसार और आत्मा की अपेक्षा का अर्थ है मुक्ति कौन चाहता है अपेक्षा ? संसारी प्राणी किसी न किसी में अपेक्षा रखता है मात्र अपेक्षा आतमा की रहे और संसार से उपेक्षा हो जाए तो ऐसा प्राणी मुक्त हो सकता है, अन्यथा नहीं। इसलिए संसार-दशा से ऊपर का उपक्रम और मुक्ति पाने का उपक्रम यही है कि सम्यग्दर्शन-ज्ञान - चारित्र को अपनाकर निर्ग्रन्थता को अपनायें। जब तक आप अपने को बिलकुल खुला नहीं बनायेंगे, अकेले आप नहीं रहेंगे, तब तक आपको मुक्ति भी नहीं मिलेगी। तब वे मुक्ति का पथ खुलेगा नहीं।

मुक्ति का पथ- मुक्ति का पथ है सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः। ये वीतरागता के प्रतीक है। इन तीनों के साथ कोई भी सांसारिक आडम्बर नहीं रहेगा, सांसारिक परिग्रह का कोई भी सम्बन्ध नहीं रहेगा। एक मात्र शरीर रहेगा और उस शरीर को भी परिग्रह कब माना है, जब शरीर के प्रति मोह हो जाता है। शरीर को मात्र उस मोक्ष पथ में साधक मानकर जो चलता रहता है, वह व्यक्ति निःस्पृह ही मुक्ति का भाजन बन सकता है।

आज भी मुक्ति का अनुभव किया जा रहा है। यह भी ध्यान रखिये, एक द्रव्यमुक्ति होती है ओर दूसरी भावमुक्ति। द्रव्यमुक्ति भावमुक्तिपूर्वक ही होती है। भावमुक्ति हुए बिना द्रव्युमक्ति होती नहीं। द्रव्यमुक्ति का अर्थ एक प्रकार से शरीर और आठ कर्मों का टूटना है। भावमुक्ति का अर्थ भाव छोड़ना है। भाव छोड़े तो फिर क्या रहेगा, तो फिर द्रव्य रहेगा। इस प्रकार मोहभाव हट जाना ही मुक्ति है। जो भी दृश्य दिखने में आ रहे हैं, उन सभी के साथ मोह है, जिन-जिन के साथ आपका मोह है, वही तो संसार है और जिन-जिन पदार्थों के प्रति मोह नहीं है, उन पदार्थों की अपेक्षा से तो आप मुक्त हैं। आपके साथ जो पदार्थ हैं, उन पर आपने जो स्वामित्व जमाया है, उस अपेक्षा से आप बन्धित है। किनको छोड़ना है, यह सीमित है, वह भाव हट जाए, मोह का अभाव हो जाए, तो बस आज मुक्ति है। आप आज ही मुक्ति का अनुभव कर सकते है।

आज भी रत्नत्रय के आराधक रत्नत्रय से शुद्ध आत्मा को जिन्होंने बनाया है, ऐसे मुनि महाराज हैं, जो आत्मा के ध्यान के बल पर आज स्वर्ग चले जाते हैं , स्वर्ग में भी इन्द्र होते हैं अथवा

लोकान्तिक होते हैं और वहाँ से सीधा मोक्षमार्ग मिल जाता है। लौट कर आ जाते हैं और मुक्ति को प्राप्त कर लेते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आज भी मुक्ति है। जिसका सम्यग्दर्शन नहीं छूटता है, रत्नत्रय की पूर्ण भावना की थी, वह भावना वहाँ जागृत होती है। रत्नत्रय नहीं हो, तो भी उसकी भावना मुझे कब मिले- इस प्रकार उसका एक-एक समय कटता रहता है और उस श्रुत को कहना एक प्रकार की भूल है। मुक्ति का मार्ग है, तो मुक्ति है और मुक्ति है तो आज भी राग-द्वेष का अभाव है, वह किस अपेक्षा से है, आपको समझना चाहिये। सांसारिक पदार्थों की अपेक्षा से जो किसी से राग नहीं है, द्वेष नहीं है, वह मुक्ति है। इसको आचार्यों ने बार-बार नमस्कार किया है। यह जीवन आज बन जाए, तो कम नहीं है। ये भी सिद्ध परमेष्ठी के समान बन सकते हैं। उम्मीदवार अवश्य हैं, कुछ ही समय के अंदर उनका नम्बर आने वाला है। यह सौभाग्य आज आपको भी प्राप्त हो सकता है लेकिन अभी आप सभी की धारणा कुछ अलग हो सकती हैं, विश्वास अलग हो सकते हैं, रुचियाँ अलग हो सकती हैं।

मोक्षमार्ग वातानुकूलित नहीं- आज स्वर्ण जैसा अवसर है, यह जीवन बार-बार नहीं मिलता है। जीवन की सुरक्षा जीवन का विकास-उन्नयन जो कोई भी है, वे सारे जीवन का मूल्यांकन समझने वालों को मिल सकते हैं। उसको जो व्यक्ति बहुमूल्य समझता है, वह साधना पथ पर कितने ही उपसर्ग हों, किन्तु सहर्ष उसे अपनाता है। दुःखों, परीषहों और उपसर्गों को सहर्ष अपनाने वाले मुनि हैं। प्रतिकार करने वाले मिलेगें, लेकिन रास्ता ही इनमें से होकर हैं, हम क्या करें ? भगवान महावीर ने जो रास्ता बताया वे देखकर स्वयं ही वहीं से गये हैं, वह उपसर्ग और परीषहों में ही होता है, वह रास्ता कोई वातानुकूलित हो, एयर कण्डीशन हो, उस रास्ते से चले जाएँ, ऐसा कोई है नहीं। काल्पनिक रास्ता तो हो सकता है, लेकिन मोक्षमार्ग तो वही है, जो परीषह-उपसर्गों से ही प्राप्त होता है। जो उसे धारण करने के लिए तैयार है, उनको यह अवश्य मिलता है। उसे उत्साहपूर्वक सहर्ष सारा तन-मन-धन लगा कर अपनाना चाहिये। जो व्यक्ति एक बार भी इस रास्ते पर चलना आरंभ कर देता है, उसे फिर भागने की आवश्यक नहीं है। आपको वहाँ अनन्तकाल तक विराम मिलेगा, फिर एक समय ऐसा आयेगा, जब आप अपनी सत्ता में रहेंगे, जब सारे के सारे ज्ञेय पदार्थ आपके अधीन रहेंगे। आप ज्ञाता एक मौलिक द्रव्य बने रहेंगे, अतः उस मुक्ति के भाजन हम बन सकते हैं, लेकिन इस सकने की अपेक्षा से अभव्य भी बन सकते हैं। हमारे पास जो भी शक्ति है, क्षमता है, उसके अनुसार प्रारम्भ कर देना चाहिये।

प्रतिक्रमण का अर्थ है, मुक्ति का अर्थ है अपनी ओर देखना। प्रतिक्रमण अर्थात्, आत्मा की ओर आना और आक्रमण अर्थात् बाहर की ओर जाना। इस प्रकार मुक्ति का अर्थ प्रतिक्रमण है, निर्जरा है। यदि आप समझना चाहें , तो सब कुछ हैं , नहीं समझना चाहें, तो कुछ भी नहीं है।

मुक्ति अविपाक निर्जरा का एक फल है और यह तप के माध्यम से होती है। आप इस प्रकार तप कीजिए जिससे आत्मा तप कर एक मात्र स्वर्ण बन जाए, स्वर्ण ही रह जाए। आप भगवान से प्रार्थना कीजिये, अपनी आत्मा से भी यह प्रार्थना कीजिए, अपने भावों के सामने भी यही पुकार कीजिए कि आपके मोह जन्य भाव पलट जाएँ और हमारे अंदर जो मोक्षजन्य भाव हैं, जो निर्विकार भाव हैं, वे जागृत हो जाएँ।

भेंटः एक भेद विज्ञानी से

✻ श्रीमति आशा मलैया ✻

स्वाध्याय-चर्चा, नैनागिरि तीर्थ सिद्धशिला, सोमवार 30 अक्टूबर 1978, कार्तिक कृष्णा 14वी. वि. सं. 2504, वि. सं. 2035, पूर्वाह्न 11.20-1150, चर्चाकार- आचार्यश्री विद्यासागर जी, जीवनकुमार सिंघई, श्रीमति आशा मलैया, डॉ. नेमीचन्द्र जैन, संकेत-वि. आचार्य श्री विद्यासागर जी, जी.-जीवनकुमार, आ.- आशा मलैया, ने- नेमीचन्द्र जैन।

ने- प्रायः सभी जानते हैं कि भेदविज्ञान जैन धर्म की रीढ़ है, किन्तु कोई इसकी स्पष्ट इबारत नहीं करता। कारण स्पष्ट है। इवारत हर आदमी नहीं दे सकता। वस्तुतः परिभाषा करने/देने का अधिकार उसे है, जो उसमें डूबा हो, पल-पल उसे जी रहा हो, अतः यदि आप इसे परिभाषित करेंगे, तो यह हम सब पर बड़ा उपकार होगा।

वि. बात यह है कि हम इसे समझने में प्रारंभ में ही भूल करते हैं। ज्ञान तो हमें पाना नहीं है उसे सम्यक् बनाना है। ज्ञानधन तो हम स्वयं है। वह आत्मरूप है। ज्ञान और विज्ञान में भी भेद की एक सूक्ष्म रेखा है। ज्ञान में जब पार-दर्शन की शक्ति आती है तब वह विज्ञान हो जाता है। ज्ञान पर्याय में अटकता है, सम्यग्ज्ञान उसके पार निकल जाता है। सामान्य जन ज्ञेय पर फिसल जाता है, सम्यग्ज्ञानी अचूक चलता है, अनबरूद्ध चलता है।

ने- आइन्स्टोन को जैनधर्म का विशेष ज्ञान नहीं था, किन्तु वह सब्स्टेन्स और फॉर्म की विशिष्टताओं से परिचित था। जानता था कि पर्याय में संघर्ष है, वस्तु में नहीं है। बहुधा हम पर्याय में अटक जाते है वस्तु को सटीक नहीं देख पाते। मैं मानता हूँ कि भेद विज्ञान इसमें हमारी काफी-कुछ सहायता कर सकता है।

वि- बिलकुल। मेरी समझ में चिन्तन के द्वारा सत्य का साक्षात्कार होता है। चिन्तन करने के लिए बैठने से वह नहीं होता। इस तरह तो चिन्तन चिन्ता में बदल जाता है (हँसी)ः इसलिए चिन्तन को सहज-मुक्त छोड़ना होता है। चिन्तन ही वस्तुतः एक ऐसा माध्यम है, जो सत्य के आमने-सामने हमें खड़ा कर सकता है।

ने- उसमें से तो गुजरना ही चाहिये : किन्तु यदि हम है को जगह (था) या (गा) में चले गये तो वहाँ विचलन का खतरा है।

वि- आचार्यों ने होने को हानिकारक नहीं कहा है। चिन्तन करने को यानी कर्तृत्व को क्षतिकारक बताया है।

ने- मेरी समझ में होने को छोड़कर करने में विभाव की स्थिति है, स्वभाव का आच्छादन है।

वि- हाँ।

ने- होने में स्वभाव है, करने में विभाव।

वि- वैसा होगा ही।

ने- इस तरह भेद विज्ञान स्वभाव और विभाव को पहिचानने-जानने और उनके पृथक्करण का विज्ञान है।

वि- जितने भी मनीषी हुए है, सारे के सारे पहले लिखने की और आकृष्ट नहीं हुए, लखने

(आत्मावलोकन) की ओर हुए। बात यह है कि जब भी हम लिखने की ओर प्रवृत्त होते हैं, देखने की हमारी धारा टूट जाती है, और होने यह लगता है कि जो भी हमने देखा होता है, उसे भी लिपिबद्ध करने में हम खुद को असमर्थ पाते हैं।

ने- यह क्षण बीत जाता है न।

वि- बिलकुल ।

ने- लखने का क्षण अपना काम संपन्न करने के बाद जब लौट नहीं पाता तब फिर उसे लेखबद्ध करना तो कठिन होगा ही।

वि- बिलकुल।

ने- लिखा भी गया तो वह आत्मदर्शन से भिन्न कुछ इतर ही होगा, कोरा लेखन होगा लखना नहीं होगा।

वि- बिलकुल। स्मृति में कुछ भी लाना मानो ज्ञान को सताना है। स्वाभाविक धारा यों होगी कि लेखनी लिखे, आत्मा लखे, आत्मा लिखे यह असंभव है।

ने- सल्लेखन में भी तो लेखन आता है (हंसी)।

वि- सल्लेखन में लेखन का अर्थ लेखन नहीं है। यहाँ लेखन का अर्थ क्षीण करना है। सल्लेखन के दो भेद है- कषाय सल्लेखन, काया सल्लेखन। प्रमुख अर्थ है कषाय का क्षीण करते जाना।

ने- स/ल्ले/ख/न।

वि- हाँ, यहाँ लिखने को कुछ नहीं होता, लखने को ही सब कुछ होता है।

ने- मैंने तो यह प्रसंग वातावरण को किञ्चित् विनोदमय करने के लिए उठाया था, किन्तु इससे काफी सीख सका।

वि- ठीक है। यही कहा तो ठीक ही है। कषाय-सल्लेखना कषाय को निरन्तर क्षीण करते जाना है। बिलकुल सहज होते जाना सल्लेखना है। इस तरह तब हम कषाय नहीं करते है तो जो कषाय पहले से हैं, वे आपोआप कटती जाती है। कोई भी प्राणी जब विभाव परिणति के साथ कर्तृत्व-बुद्धि को जोड़ता है, तब कषायें और सघन हो जाती है। वे विभाव हैं, इसलिए उन्हें सहज ही सर्वथा छोड़ना चाहिये।

ने- कई बार कई लोग ऐसा सोचने लगते हैं कि जब आत्मा दिखती नहीं है तब वह होती ही शायद हो। वह उसके होने में शंकालु हो जाते हैं। अब आप ही बतायें ऐसे आदमी को आत्मा है इसकी प्रतीति कैसे करायें ?

वि- आत्मा होती है, या नहीं होती है, इस तरह की शंका करने वाला ही तो आत्मा है। वह होती है अथवा नहीं होती है- यह तलाश कौन कर रहा है कौन सोच रहा है इस तरह ? वही तो वह है।

ने- जो प्रश्न कर रहा है, वह आत्मा होती है स्वयं, ठीक है।

वि- उसके बिना तो कुछ हो ही नहीं सकता।

ने- कई बार मेरे सम्मुख धर्मसंकट तब आ उपस्थित होता है, जब कोई युवा पूछ बैठता है कि कम से कम शब्दों में बताओं कि जैन धर्म क्या है ? कम से कम शब्दों में धर्म की परिभाषा देना मुझे

कई बार असमंजस में डाल देता है। आप बतायें इस उलझन को कैसे सुलझाया जाए ?

वि- शब्दों में तो जैन धर्म समझाया ही नहीं जा सकता, उसे दिखाया जा सकता है (हँसी)। वस्तुतः उसे जीना आवश्यक है, यानी चरित्र में लाना आवश्यक है। सर्वार्थसिद्धि की उत्थानिका में पूज्यपाद स्वामी ने एक मार्के की बात कही है कि भव्य वही है जो परहित नहीं चाहता, स्व-हित चाहता है। आज हम समझाने में लगे हुए हैं, कोई ऐसा नहीं दिखता जो समझना चाहता हो। जो स्व-हित का लक्ष्य लिये हुए है भव्य उसी का संबोधन है।

ने- लोग स्व-हित में स्वार्थ सूघेंगे।

वि- वास्तव में जो व्यक्ति स्वयं अपना हित नहीं करेगा, वह दूसरे का हित भी नहीं कर पायेगा।

ने- स-हित होना जरूरी है।

वि- बिलकुल । आप कर ही क्या सकते हैं तब तक, जब तक उस मार्ग को अपनाते नहीं हैं समझते नहीं है। मार्ग को पहले जब स्वयं समझेंगे, तभी दूसरों को समझा सकेंगे, यह समझना ही स्व-हित हैं, इसमें पर-हित स्वयमेव सन्निहित है। जैसे, जिसे भव्य कहा है, वह आकर पूछता है कि भगवन् सत्य क्या है ? क्या है आत्मा का स्वरूप ? यद्यपि देशना की यह प्रभा भगवान् के शरीर माध्यम से प्रकट हो रही है, तथापि भव्य जिज्ञासा कर रहा है। दूसरे से कोई सरोकार ही नहीं है। मोक्ष का मार्ग, और उसका उपाय सरल है।

आ- मैं जानती हूँ मोक्ष मार्ग इतना सरल नहीं है।

वि- बहुत सरल है।

ने- जो आचार्य श्री बहुत सरल होता है, यहीं बहुत कठिन भी तो होता है।

वि- किन्तु कब तक ?

ने- जब तक सरलतम नहीं हो पाता।

वि- इसी को कहते है राई की ओट पहाड़।अब कठिन कहें तो ठीक है, सरल कहें तो ठीक है।

ने- कहीं पढ़ा था, अच्छा लगा यह कि **टू सिम्प्लिफाइ ए थिग इज टू यूनिवर्स लाइज इट**-अर्थात् किसी चीज का सरलीकरण उसका सार्वभौमीकरण है। इस तरह आपने भेदविज्ञान को जीकर काफी सरल कर दिया है। वस्तुतः सरल हो जाती है जटिलताएँ जब जीने लगता है आदमी उन्हें। अगला प्रश्न है आचार्य श्री कि अगर हम भेद विज्ञान को जीना चाहें तो वैसा करना कहाँ से शुरु करें ? इसका क,ख,ग कहाँ से करना होगा ?

वि- जिसके पास भेद विज्ञान हो कम से कम उसे देखे तो वह, उसके भलीभांति दर्शन तो करें (हँसी)।

जी-हाँ, यह बिलकुल ठीक है। जो जिसका मालिक है यह अपनी मिल्कियत देखे तो उसके दर्शन तो करें ।

ने- इसे थोड़ा और स्पष्ट कीजिए।

वि- (हँसते हुए) और स्पष्ट कैसे करें, (हँसी)।

आ- जब देखना आपको है, तब स्पष्ट दूसरा कैसे करेगा ?

ने- हाँ, बिम्ब ही है, प्रतिबिम्ब होता तो उसकी सतही सफाई हो सकती थी।

आ- उस मार्ग पर चढ़ने की प्राथमिकताएँ पूछ रहे होंगे शायद।

वि- प्राथमिकताएँ स्पष्ट हैं। जहाँ जाना है वहाँ के दर्शन तो हों कि हमें वहाँ पढ़ने को नहीं कहता, उसे जीने को कहता हूँ।

ने- कम से कम से आशय यहाँ क्या है ?

वि- जब प्रारंभ हो जाएगा तब मिनिमम (कम से कम) में से मैक्झिमम (अधिकतम) स्वयं हो जाएगा। आचार्यों ने कहा है कि जिनवाणी के माध्यम से आँखें खुलने के बाद ही उनमें ज्योति आ सकती है, लेकिन गुरु के समागम से तीनों मिल जाते हैं। उनकी वाणी जिनवाणी होती है, उनकी मुद्रा देखते हैं तो वह जिनेन्द्र भगवान् के समान होती है, और चर्या देखते है तो मोक्षमार्ग के पथिक की अनुभूति हो जाती है। इस तरह गुरु में तीनों का समावेश हो जाता है। हमारे भगवान् बोलते नहीं है समझाते नहीं है, मौन रहते है, बल्कि यूं कहना चाहिये कि शास्त्र पढ़ने में कई बार गडबड़ हो जाती है क्योंकि शास्त्र मूक होते हैं, व्याख्या नहीं कर पाते। कभी यह इंगित नहीं कर पाते कि इसका यह अर्थ निकालो। सत्य को देखते हुए भी सत्य का कथन नहीं करते भगवान्। यो कहना चाहिये कि जिस समय भगवान् को केवलज्ञान होता है, उनकी वाणी खिरती है। जो भी है वह वचनयोग है। जिनशासन तो चलता है, वह गणधर परमेष्ठी के योग की बात है। भगवान को जैसे केवलज्ञान हुआ वैसे ही उनके पास वचनयोग है। वह वचनयोग ठीक वैसा ही है, जैसे मैनलाइन में विद्युत् तरंगे लेकिन स्विच के बिना इन तरंगों का क्या कुछ हो सकता है ? स्विच गणधर परमेष्ठी है। वे न आयें तो बैठे रहो। भगवान् के पास केवलज्ञान से लेकर तीव्र शुक्लध्यान पर्यन्त अन्तर्मुहूर्त आयु शेष रहती है, तबतक वचनयोग तो होता ही है। इसे उन्होंने रोका नहीं। उसका निग्रह नहीं किया। श्रुत अर्थात् समुद्र जिस प्रकार केवलज्ञान समुद्र हैं, उसी तरह श्रुत भी समुद्र हैं, अन्तहीन है। हाँ उसके माध्यम से जो ग्रहण किया जाता है, वह सान्तसीमित है। लट्टू जलता है, 10 वाट का, 100 वाट का, जीरो वाट का, किन्तु विद्युत तो पूरे बेग से प्रकट है। दूसरे हम तो लट्टू पर ही लट्टू हो रहे हैं, हमारा ध्यान मैनलाइन पर कहाँ है ? (हँसी)।

आ- असली बात यही है। गाड़ी यहीं अटक गयी है।

वि- यही तो बात है। क्या-क्या कहा जा सकता है, क्या - क्या कहा जा चुका है, विपुल है- किन्तु इसके कथन के लिए तो केवलज्ञानी चाहिये। स्वयं गणधर परमेष्ठी भी उसे हजम नहीं कर सकते। बहुत अद्वितीय-अनुपम है वह। वह पर के लिए है। वचनयोग का लक्ष्य अभय है। भगवान् की दिव्यध्वनि विश्व को अभय देने वाली है। एक को भी भयभीत करने वाली वह नहीं है। विश्व को वे अभय किस तरह दे रहे हे ? तत्त्वनिर्देश द्वारा। जब से उन्हें केवलज्ञान हुआ है, तब से तृतीय शुक्लध्यान तक वे धाराप्रवाह कह रहे हैं-चतुर्दिक्। जैसे बिजली चारों ओर से आती है, वाणी भी आयी हुई है। गणधर परमेष्ठी चार बार स्विच दबाते हैं। गणधर छद्मस्थ हैं। उन्हें आहार चाहिये : वे नगर जाते हैं, उनके कुछ कर्तव्य हैं, तब बिजली बन्द हो जाती है। लगभग पन्द्रह साल हुए, मैं पोस्टऑफिस गया था लिफाफा लेते। उस समय तारबाबू तार भेज रहे थे। तार भेजने में मोर्सकोड का उपयोग होता है। उधर से मोर्स-संकेतों में शब्द आ रहे थे, इधर तारबाबू उन्हें रोमन में रूपान्तरित कर रहे थे। मोर्सकोड क्या है ? यह कौन सी भाषा है ? तारबाबू से पूछा

कि यह भाषा कौन-सी है। वे बोले-यह ध्वनि-प्रतीकों की एक विशिष्ट भाषा है। एक तरह का शॉर्टहैण्ड है। इन विशिष्ट ध्वनि-संकेतों के माध्यम से हम शब्द पकड़ लेते हैं। इन संकेतों में कहाँ कौन सा वर्ण छिपा है, इसे तार ग्रहण करने वाला और दूसरे सिरे पर तार भेजने वाला बाबू जानता है। भगवान की दिव्यध्वनि भी मोर्सकोड जैसी ही है, वहाँ शब्द नहीं संकेत है। इन संकेतों को अक्षर रूप देने में गणधर परमेष्ठी माध्यम बनते हैं। वे बीच के सेतु हैं। हम उन ध्वनि-संकेतों के जानने वाले नहीं हैं, अन्य जीव भी उन्हें नहीं जानते। दिव्यध्वनि आरंभ हुई। कब वह आरंभ हुई, नहीं मालूम। इस सबको जानने के लिये तो गणधर परमेष्ठी चाहिये। ज्यों-ज्यों विद्युतधारा समयोजित होती गयी, संकेत खुलते गये। प्रवाह तो चल ही रहा था, वचनयोग के माध्यम से जो प्रकट होना था, वह हो रहा था। संपूर्ण घटना से गणधर परमेष्ठी के संयुक्त होते ही दिव्यध्वनि खिर गयी। सब उल्लास में कहने लगे- ध्वनि खिर गयी, खिर गयी। तदनन्तर उसे भाषा में ढाला सँवारा गया।

ने- दिव्यध्वनि को हम चरित्र-ध्वनि भी कह सकते हैं।

वि- हाँ, कोई भी नाम हम उसे दे सकते हैं। यह स्वभाव है उनका। एक तरह से यों कहना चाहिये कि भगवान् ने जो अथक साधना की, अब वे उसे बाँट रहे हैं। यह भी उल्लेख मिलता है कि यदि एक और पुण्यवान् वहाँ चला जाता तो उसके माध्यम से कुछ और वाणी खिरती। इसका तात्पर्य यही हुआ कि वाणी तो वहाँ पहले से खिर ही रही है, कोई और पुण्यवान् होता तो वह उसे झेलता और रूपान्तरित करता, अन्यों के लिए ग्राह्य बनाता।

आ- अर्थात् वह पुण्य के कारण खिरती है, पुण्य के निमित्त ऐसा होता है।

वि- ऐसा प्रस्फुटन जो हमारी इन्द्रियों को ग्राह्य-सह्य होता है, वह उस व्यक्ति के पुण्य निमित्त से मिल जाता है।

ने- ग्राहकता की इसमें काफी प्रशस्त भूमिका है।

वि- हाँ।

ने- ग्राहकता का बड़ा योग्य है। वस्तु हो तो उसे रिसीव्ह (ग्रहण) करने वाला कोई संवेदनशील अस्तित्व तो चाहिये। विद्युतकम्पन हों और रेडियो सेट न हो तो सब कुछ व्यर्थ होगा। ऐसी ही स्थिति दिव्यध्वनि को समझनी चाहिये।

वि- वाणी की आवश्यकता भी है।

ने- किन्तु ग्रहण तो उसे होना चाहिये। कुछ आकाश में व्याप्त हो, और यदि उस व्याप्त को झेलने वाला कोई न हो तो सब कुछ निरर्थक हो जाएगा।

आ-यहाँ पुण्यवान् से तात्पर्य मात्र लौकिक है, पुण्यवान् एक लौकिक अभिधान है।

वि- नहीं, उसमें कुछ विशिष्ट गुण हैं क्वालिटियाँ है। झेलने के लिए जरूरी संवेदनशीलता उसमें है।

ने- हाँ, वहीं उच्चकोटि की ग्राहकता।

जी- ग्रास्पिंग पॉवर (धारणा-शक्ति)।

वि- यह धारणा-बल (ग्रास्पिंग पॉवर) गणधर परमेष्ठी को उपलब्ध है। उस ध्वनि को झेलने/पचाने की क्षमता हरेक में नहीं हो सकती। बाद में वह बँट जाती है। गणधर परमेष्ठी

मैनलाइन से जुड़कर उसे छोटी-छोटी नहरों में काट देते हैं।

वि- हाँ, एक तरह का रूपान्तरण होता जाता है। गणधर परमेष्ठी में वह सुस्थित होता जाता है, और बाद को छोटी-छोटी धाराओं में बँटता जाता है। इतना क्षमतावान गणधर परमेष्ठी के अलावा अन्य कोई नहीं होता। जब बाढ़ आती है तब वे उसे निकाल देते जाते है। इस तरह दिव्यध्वनि ट्रान्सफॉर्म होती जाती है।

ने- यदि उसे उसके मूल रूप में आने दें तो जीव उसे सहन नहीं कर पायेगा।

वि-फ्यूज उड़ जायेगा। बात खत्म हो जाएगी। कुछ घटित ही नहीं होगा (हँसी)। आप लोगों के घरों में ऐसा साधारणतः होता ही होगा, इसीलिए डायरेक्ट लाइन नहीं दी जाती अन्यथा समूचा लाइट-फिटिंग ही निष्फल हो जाए।

जी- इसके लिए अदिग की व्यवस्था भी होती है।

वि- बिलकुल।

ने- जिससे खतरा कम हो जाता हैं।

वि- बिलकुल। अतः भगवान् की वाणी को झेलने और उसके व्यवस्थित सम्प्रेषण के लिए गणधर परमेष्ठी की आवश्यकता होती हे।

आ- दिव्यध्वनि को सब पशु-पक्षी भी समझ सकते थे, यह कैसे होता था ? तिर्यंच भी उसे समझ लेते थे।

वि- जैसे संगीत होता है। वह जब चालू हो जाता है, तब आबालवृद्ध, स्त्री-पुरुष सभी सारे के सारे पशु-पक्षी उसे मन्त्रमुग्ध सुनते हैं। क्या वह उनकी समझ में आता है। भाषा में समझ में आये न आये लेकिन आनंद तो उन्हें आ ही जाता है। इसी तरह भगवान् की दिव्यध्वनि के माध्यम से आनंद तो आ ही जाता है।

आ- समझते होंगे तभी तो आनंद आता होगा।

वि- यह आनंद ही सारे प्रश्नों का अंतिम समाधान है, इसीलिए वहाँ सारे प्रश्न, कुतूहल और जिज्ञासाएँ शान्त होती है।

ने- हमारे यहाँ मुर्तियाँ हैं। उनकी वीतरागता स्वयमेव भाषा है। आप उन्हें देखते है और आनंद में डूब जाते हैं। यहाँ भाषा जरूरी कहाँ है ? यह भाषातीत स्थिति हैं। दिव्यध्वनि की भी स्थिति यही है।

वि- इसीलिए हमारे आचार्यों ने शास्त्र की अपेक्षा जिनबिम्ब दर्शन ओर गुरु समागम पर अधिक बल दिया है।

ने- भाषातीत होने में जो आनंद है, वह भाषा के बंधन में नहीं है। ध्यान में जो अवस्था होती है, मैं मानता हूँ ऐसी ही कुछ अवस्था दिव्यध्वनि के समय होती होगी मन प्राण की।

वि- दूसरी बात यह है कि शास्त्र है किन्तु ध्वनि वहाँ नहीं है, लिपि दृश्य हैं, ध्वनि नहीं है।

ने- हाँ, ध्वनि पर रखी हुई सूई है वह। जैसे रिकार्ड पर सूई रखते ही ध्वनन होने लगता है, वैसे ही लिपि-संकेतो पर दृष्टि पड़ते ही वे सार्थक हो उठते हैं।

वि- टेपरिकॉर्ड में तो फिर भी ध्वनि है, किन्तु ग्रंथ में तो वह भी अनुपस्थित है। वह कुछ भी

नहीं है, एक सुभीता सिर्फ है।

आ-कुछ भी न होकर सब कुछ है।

वि- इसमें से निचोड़नेवाला बहुत आगे का व्यक्ति चाहिए।

ने- पुस्तकों से भ्रम फैलने की आशंका रहती है। वहाँ समझाने, या टीका- व्याख्या करने वाला कोई नहीं होता, इसलिये कई बार भ्रम भी फैलने लगते है। वस्तुतः ग्रंथ के लिए सद्गुरु चाहिये। यदि आपके पास कोई ग्रंथ है, तो वह अनुपयोगी है तब तक जब तक कोई सुलझा हुआ, परिपक्व व्याख्याकार, या विशेषज्ञ आपको उपलब्ध नहीं है।

वि- इसीलिए गुरु की व्युत्पत्ति कुछ विशिष्ट है। (गु) अर्थात् अंधकार (रु) यानी नाश करने वाला इस तरह जो अंधकार को नष्ट करता है, वह गुरु है।

ने- गुरु तो आज कल अंधकार पैदा कर देता है। उलझन खड़ी कर देता है।

वि- आप गुरु यहाँ किसे मान रहे हैं ? हरेक को गुरु मत मानिये। ठीक ही तो है जो अंधकार नहीं मिटा सकता वह कु-गुरु है।

ने- आचार्य श्री एक जिज्ञासा मन में है। मैं इस उलझन का कोई समीचीन समाधान नहीं ढूंढ पाया हूँ कि आपकी आध्यात्मिक साधना और काव्य दोनों परस्पर इतने धनिष्ठ मित्र क्यों कर हैं ? काव्य तो लालित्य से जुड़ा है, और आपका सीधा सरोकार अध्यात्म से है, फिर यह श्रमणशतकम्, निरंजनशतकम् जैनगीता आदि आप कैसे लिख पाते हैं ? इससे आपकी आध्यात्मिक साधना में व्यवधान तो नहीं पड़ता है ?

आ- किंतु क्या आप नहीं मानते कि इस समय यहाँ का वातावरण भी काव्यमय है ?

ने- पर उत्तर तो आशाजी मुझे आपसे नहीं चाहिये।

वि- काव्य रचना के लिए जब बाहर आता हूँ, तब मुझे विश्राम मिल जाता है (हँसी)।

ने- अर्थात् काव्य आपके लिए विश्राम है।

वि- मनोरंजन भी तो होना चाहिये (हँसी)।

ने- किन्तु हमें तो इसमें से भी काफी गहन-सघन सत्य मिल जाता है। आपका मनोरंजन भी विलक्षण हैं, हमें तो इसमें भी भीतर से प्राप्त होने वाली वस्तु मिल जाती है।

आ- वस्तुतः जो आपके लिए मनोरंजन होता है, यह हम सबके लिए निरंजन होता है।

वि-आचार्य कुन्दकुन्द ने चौरासी पाहुड़ों की रचना की थी। यों उनका साहित्य तो विपुल है, सिद्धांत भी गहन हैं, किन्तु जिस शैली का अनुधावन उन्होंने किया है वह बड़ी अनूठी और विलक्षण है। उनकी हर गाथा परमसत्ता का एक चरम-अचूक संकेत हैः यथा-

जो पस्सदि अप्पाणं अबद्धपुट्ठं अणण्णमविसेसं।
अपदेसमुत्तमज्झं परसदि जिणसासणं सव्वं ।।15।।

इसमें ध्वनि वही ले आ रही है। इंगन की उसी ओर है। उनके साहित्य की यह एक विशेषता है। कि प्रत्येक गाथा, प्रत्येक शब्द उधर ही पग उठाये है। उक्त गाथा कितनी गहरी है ? क्रम भी अद्‌भुत है, क्योंकि यहाँ कहाँ है कि जो पुरुष आत्मा को अबद्धस्पृष्ट, अनन्य, अविशेष तथा उपलक्षण से नियत और असंयुक्त देखता है, यह समस्त जिन-शासनको देखता है जानता है। उक्त

गाथा में प्रथम और द्वितीय पाद मुख्य हैं, तृतीय और चतुर्थ गौण। ये दृष्टान्तरूप में संयोजित है। वस्तुतः दृष्टान्त में ही मुख्य बात कहीं जानी चाहिये, किन्तु वह आरंभ में ही कह दी है। सूत्र की ओर उनकी दृष्टि गयी है, लेकिन कह दिया है कि यह तो वह आत्मदृष्टा यूं ही (चुटकी बजाते) जान लेगा। हम यहाँ सहज ही जिज्ञासा कर सकते हैं कि कुन्द कुन्द ने जिन-शासन वाली बात पहले क्यों नहीं कही ? इसकी पीठ पर भी एक गाथा उल्लेख नहीं है। प्रस्तुत गाथा के भी दो पदों में इसका उल्लेख नहीं है और अंतिम पाद में कह दिया गया है कि वह जिन-शासन को यूँ ही (पलक मारते) जान लेगा। जिस व्यक्ति ने अपनी आत्मा को जान लिया है उसका अनुभव कर लिया है, उसे देख लिया है-उसके लिए जैन शासन को अंतिम स्थान देना भी उनकी शैलीगत विलक्षणता हैं। जो तथ्य मुख्य था उसे अंतिम पाद में दिया है, और जो गौण था, उसे प्रथम-द्वितीय पाद में अभिस्थापित किया हैं। वास्तव में आचार्य ने जिन शासन को इसलिए प्रथम स्थान नहीं दिया कि आत्मा के अतिरिक्त अन्य सब ज्ञेय हैं अथवा हेय हैं-उपादेय तो मात्र आत्मा है। यह गजब है। यहीं आचार्य कुंदकुंद की शैली चमत्कृत करती है।

आचार्य कुन्दकुन्द की एक गाथा हम और लेते हैं (आचार्य श्री ने बड़े भाव-विभोर होकर गाना शुरु किया)-

उप्पण्णोदयभोगी विओगबुद्धीए तस्स सो णिच्चं।
कंखामणागयस्स य उदयरस्स ण कुव्यए णाणी ।।215।।

इसमें भी कही त्याग का कथन, नहीं है, तथापि कह वही रहे हैं। ज्ञानी वही है, जो छोड़ता है। छोड़ो यह नहीं कहा है किन्तु कहा जा रहा है कि जो छोड़ रहा है, वह ज्ञानी है। अर्थात् ज्ञानी जीव के वर्तमानकालीन उदय का भोग सतत् वियोगबुद्धि से उपलक्षित रहता है अर्थात् वह वर्तमान भोग को नश्वर समझ कर उसमें परिग्रह बुद्धि नहीं रखता और अनागत-भविष्यकालीन भोग की वह आकांक्षा नहीं करता। यहां से जो भोगोपभोग प्राप्त हैं, उनके प्रति वह हेय बुद्धि से देख रहा है, और उसमें भावी की आकांक्षा अनुपस्थित है तथा भूत की कोई स्मृति नहीं है। वह ज्ञानी है निकंख। यह है त्याग की परिभाषा उसकी चरम सीमा पर। छोड़ो यह नहीं कह रहे है, किन्तु कह रहे है कि ज्ञानी वही है जो छोड़ना तो दूर आकांक्षा भी नहीं करता है। किसी वस्तु का ग्रहण तो यहाँ दूर की बात है, ज्ञानी बहुत अच्छी है यह भी नही कहता है, और जो व्यक्ति किसी वस्तु को लेता है तो वह बिना आकांक्षा के तो उसे लेता नहीं है, लेकिन ज्ञानी तो यह जो पड़ा हुआ है उसे देखकर भी यह नहीं कहता कि यह अच्छा है। आकांक्षा ही उसमें अनुपस्थित है। अनुवाद है (गाकर)-

न भूत की स्मृति, न अनागत की अपेक्षा।
भोगोपभोग मिलने पर भी उपेक्षा ।।
ज्ञानी जिन्हें विषय विष दीखते हैं।
वैराग्य पाठ उनसे हम सीखते है ।।

यह है ज्ञानी की परिभाषा। ज्ञानी से वैराग्य की सीख मिलनी ही चाहिये, राग का पाठ यदि उससे मिलता है, तो वह ज्ञानी कहाँ हुआ, अज्ञानी ही है। जिनसे राग पाठ मिलता है वे ज्ञानी थोड़े ही कहलायेंगे।

ने- आचार्य श्री यदि हम बच्चों तक जैन धर्म को पहुँचाना चाहें तो उसका व्यवहार रूप या

मैदानी रूप क्या होगा ? अपने आचरण में से उन्हें हम जैनधर्म दें, यह तो ठीक है कि हम देव-दर्शन करें, णमोकार मन्त्रादि पढ़ें-पढ़ायें, किन्तु बुनियाद में यह कोई तर्कसंगत अप्रोच नहीं है। आप तो स्वयं शिशु की पुनीत-पावन भूमिका में आठों याम रहते हैं और आचार्य कुन्दकुन्द ने प्रवचनसार की गाथा क्रमांक 5 में दिगम्बर मुनि को सद्यः जात शिशु कहा हैः और चूकि आज का शिशु या बालक कल का युवा होगा अतः मेरे उक्त प्रश्न की सार्थकता मुझे स्पष्ट दिखायी देती है।

आ- शायद कहा जा रहा है कि शिशु को आपकी भूमिका में कैसे लायें ?

ने- आशाजी, मेरा प्रश्न शब्दशः वैसा नहीं है।

वि- शिशु को भेज दो हमारे पास, शिशु तो भेज नहीं रहे हैं, प्रश्न कर रहे (हँसी) शिशु को भेजेंगे तो उसे बता देंगे उसे नहीं भेजेंगे तो बात कैसे बनेगी ?

आ- ने.- सूचना तो उसे देनी होगी, हाँ सिखाने का काम सीधे होने दीजिए ।

वि- वह ठीक है। शिशु को कुछ भी सिखाने में प्रारंभ में ही हमें काफी क्षमता और सावधानी बरतनी चाहिये। आप उससे कुछ भी न कहें। शिशु सीढ़ी सहज जैसे चलती है, चलने दें। उसमें व्यर्थ के तनाव उत्पन्न न करें। सहज ही उसे जीवन में पाँव रखने दें और उसकी स्वभाविक गति-मति को नोट करते जाएँ, फिर उसी जाने हुए वातावरण में उसे पालते जाएँ। देखिये न, जब आपका शिशु आयेगा तो सीधे पिच्छी उठा लेगा। आप कहेंगे-उसे मत उठाओं, उसे मत छुओ (हँसी)। यह स्वाभाविकता का अवरोध है। वह सोचने लगेगा, अजीव बात है कि मेरे माता-पिता भी इतनी सुन्दर वस्तु को नहीं छू रहे हैं ओर मुझे भी नहीं छूने दे रहे हैं (हँसी)। सहज निष्कर्ष है कि जो जिस वस्तु को उठाता है, वह उसे अच्छी लगने के कारण ही उठाता है संभव है उसके ऐसा करने से उसका जीवन बनता ही (हँसी)।

जी- शिशु तो पिच्छी कुतूहलवश उठाता है, उससे विवेक कहाँ होता है ?

वि- हमारे आचार्यो ने कहा है कि जो व्यक्ति कुतूहलवश भी आत्मानुभूति की चर्चा सुनता है या उमसें प्रवृत्त होता है, तो उसमें भी काफी आध्यात्मिक संभावनाएँ है। अमृतचन्द्राचार्य का एक कलशा है -

खेल खेलता कौतुक से भी रूचि ले अपने चिन्तन में।
मर जा पर कर निजानुभव कर घड़ी-घड़ी मत रट तन में ।।

इसमें कोई संदेह नहीं कि यदि कोई कौतुक से भी किसी काम को कर ले तो उसके उसमें प्रवृत्त होने की नाना संभावनाएँ सन्निहित है, अंदर तो रूझान उसमें है किन्तु कोई शक्तिशाली निमित्त उपलब्ध नहीं हे।

आ- एक प्रश्न मेरी पुत्री ने मुझसे बड़ा विचित्र किया है। उसे अन्यथा न लें। इस प्रश्न ने मुझे उलझन में डाल दिया है। मोक्षशास्त्र में नरक का वर्णन चल रहा था। आभा ने सहज ही प्रश्न किया। नरक क्या है, उसे ऐसे समझाओं जैसे कोई आँखों देखा हाल हो। मैंने कहा- मैं ऐसा वर्णन तो नहीं कर सकती, हाँ, आचार्य विद्यासागर जी अवश्य उसके बारे में बता सकेंगे। इस पर उसने तपाक् से कहा-क्या वे कभी नरक गये हैं ? उन्हें नरक का अनुभव हैं ? उस दिन उसने स्पष्टतः आगाह कर दिया कि मैं किताब से धर्म नहीं पढ़ूंगी या तो मुझे लेक्चर दो, या प्रत्यक्ष बताओ। अब आप ही बतायें उसे क्या उत्तर दूं ?

वि- उत्तर क्या उसे यही ले आओ।

आ- मौका नहीं मिला अन्यथा लाना तो था ही।

ने- निश्चय ही बच्चोंको पढ़ाना, और उन्हें किसी प्रश्न के बारे में स्वस्तिकर समाधान देना, बड़े साहस और कौशल का काम है। हमें भी बालक की भूमिका में ही पृच्छा करना चाहिये, उतनी ही पवित्रता, स्वाभाविकता और वीतरागता के साथ। प्रश्न भी स्वाध्याय ही है।

वि- वहाँ उसे समझाना चाहिये - नरक अर्थात् एक दुःख। यहाँ हम मनुष्यों के दुःखों को तो देखते ही हैं, कहना चाहिये कि नरक के दुःख इनसे अधिक भयानक होते हैं। हो सकता है हमारी इस शैली से उन्हें नरक की कोई परिकल्पना हो सके। इसके बाद भी यदि वे चाहें तो स्वयं अनुभव कर लें। जैसे अग्नि को बेटा एक बार तो हाथ लगायेगा ही। इसके बाद जब उसे आग की प्रतीति हो जाएगी तो जैसे-जैसे आप उसके पास लालटेन लाते जाएगे वैसे-वैसे वह सीधे हटाता जाएगा, पीछे सरकता जाएगा। उसके हाथ-पाँव धूजने लगेंगे। लेकिन दुख के कारणों से आप स्वयं बचते नहीं है, और कहते हैं वह दूर हो जाए, इस विरोधाभास का प्रभाव बालक के मन पर पूरा पड़ता है। जब एक बार किसी को अनुभव हो जाता है तब वह उसे जीवन भर नहीं भूलता है। इसी तरह बेटा भी कभी नहीं भूलेगा। एक बार अनुभव हो जाने के बाद फिर इस आग को चाहे जितना सुहावना बतायें बेटा उसे छुएगा नहीं। ऐसा क्यों है ? असल में वह अनुभव कर चुका है स्वयं कि आग जलाती है, वह दुःख का कारण है। एक और अंतविरोध है। हम उसे दुःख के बारे में समझाते जाते हैं, और हंसते भी जाते हैं, इसलिये वास्तविकता क्या है इसका बोध उसे नहीं हो पाता। जैसे कोई हंसते हुए आकर कहे कि महाराज, हम बहुत दुःखी है। हमें उपदेश दीजिये। कहाँ है आप दुःखी ? आप तो हंस रहे है। दुःख का जिक्र करने में दुःख की अनुभूति भी तो होनी चाहिये। उसे भी शब्दों-शब्दों तक सीमित रखा गया है। दुःख जब बताते हैं तब हमारी आँखों से आंसुओं की धार भी प्रवाहित हो उठे तो बच्चों को मालूम पड़े कि वस्तुतः दुःख क्या होता है।

आ- किंतु हमें भी तो याद रहे कि वर्णन कहां का चल रहा है, और हम क्या कह रहे है ? वास्तव में आज सब कुछ औपचारिक ही रह गया है।

वि- इसीलिए जब उत्तर नकली होता है, तो प्रश्न भी नकली होते है। आचार्य वीरसेन ने धवला में लिखा है- रत्नत्रय की भूमिका में उतरने का अधिकार सबको नहीं है। बहुत गहरी बात यहाँ उन्होंने कह दी है। जहाँ चरित्र का अभाव है, वहाँ रत्नत्रय का उपदेश कैसे सार्थक हो सकता है ? रत्नत्रय को शब्दों में बताना व्यर्थ है, वस्तुतः उसे जिया जाना चाहिये।

आ- एक प्रश्न और है आचार्य श्री। जैनों की एक लोकप्रिय प्रार्थना है -प्रभु पति पावन में अपावन, चरण आयो शरणजी। आभा ने मुझसे कहा कि मैं इसे नहीं बोलूगी। मैं स्वयं को अपावन नहीं मानती। मैंने कोई अपावन कार्य नहीं किया है। जब यह अंश मुझ पर घटित ही नहीं हैतब मैं इसे आखिर कहूं ही क्यों ? तब तो मैं चुप रही, किन्तु अब बतायें मैं उसे क्या उत्तर दूं ?

वि- कहो प्रभु को पतित कर लो (हँसी) अर्थात् कहो-प्रभु पतित, पावन मैं...।

आ- बच्चों में इतना साहस कहाँ होता है ?

ने- साहस, आशाजी, वही तो बच्चों में अधिक होता है। बच्चों का, ध्यान रखिये, दूसरा नाम साहस और जिज्ञासा ही है।

जब अंत समय आया तो

❊ निर्यापक मुनि श्री प्रसाद सागर महाराज ❊

जीते हैं शान से व मरते हैं शान से ये वाक्य आजादी के दीवाने स्वतंत्रता संग्राम सेनानी कहते थे या वतन की रक्षा करने वाले सेना के नौजवान कहते हैं पर यह विरले ही जानते हैं कि धर्म के रखवाले, अहिंसा के पुजारी संत, महंत, आचार्य मुनिराज आदि जीवन के हर क्षण, हर पल इन पंक्तियों को आत्मसात करते रहते हैं। उसी कड़ी में 21वीं सदी, जिन संत के नाम से जानी जाती है, मूकमाटी रचयिता आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने यह अद्भूत कार्य कर दिखाया। 56 वर्ष तक श्रमण संस्कृति को व अपनी आत्म शक्ति को, शान के साथ उन्नति प्रदान की, साथ ही उसी दम खम से, शान से उस मृत्यु महोत्सव, सल्लेखना के क्षणों को सार्थक कर दिखाया सन 1975 के आसपास गाँधीवादी विचारक संत आचार्य विनोबाभावे जी जब आचार्य प्रवर के दर्शनार्थ पधारे व उनके अध्यात्मिक चिंतन संथारा, सल्लेखना के विचारों से अवगत हुए तो उन्होंने कहा- कि गीता से बढ़कर व जैन दर्शन के सल्लेखना आदि महावीर के सिद्धांत से बढ़कर मेरे ऊपर और कोई प्रभाव नहीं पड़ा (गुरुमुख से सुना) समणसुंतं (जैनगीता) प्रस्तावना में उल्लेख भी और उसी का परिणाम रहा कि विनोबा जी ने अपने अंतिम समय में, महाराष्ट्र के अपने वर्धा आश्रम में, वह किया जो उन्होंने आचार्य श्री से प्रेरणा प्राप्त की थी। पूज्य गुरुदेव ने वह किया जो उन्होंने आचार्य श्री से प्रेरणा प्राप्त की थी। पूज्य गुरुदेव ने जब तिल्दा तेवरा (दिसम्बर 2023) पंचकल्याणक के बाद, अपनी काय की स्थिति देखी स्वयं के अंतर्ज्ञान में वस्तु स्वरूप दिखा होगा और वापस रायपुर, राजनांदगांव होकर चन्द्रगिरि (डोंगरगढ़) की ओर आ गये। साथ में मुनि श्री चन्द्रप्रभ सागर जी व मुनि श्री निरामय सागर जी जो कि हर पल, हर क्षण हम सभी, साथ में स्थिति, परिस्थिति में नजर रखे रहते थे, वापस चन्द्रगिरि में आकर स्वाध्याय ग्रंथ प्रतिक्रमण ग्रंथत्रयी पूज्य गुरुमुख से प्रारंभ किया गया। 13 जनवरी 2023 को जब पेट के दाहिने हिस्से में , लीवर के ऊपर सूजन जैसी एक गाँठ उभर आई तब पूज्य गुरुदेव ने मुझे ईशारा किया कि देखो यह क्या है ? हाथ लगाकर देखा, स्थिति को गंभीरता से लिया गया पता चला गॉल ब्लेडर (पित्ताशय) से पित्त रिलीज नहीं हो रहा है। भूख में कमी, कमजोरी, अरूचि आदि तो लगातार दिखाई दे रही थी, यह नई समस्या सामने आ गई तब मैने गुरूदेव से कहा, ये रोग मेहमान की तरह है। आये है व चले जायेगें। तब आचार्य श्री ने आध्यात्मिक चिंतन देते हुए कहा कि ये बताओ प्रसाद इन मेहमानों को बुलाने वाला कौन है ? हमनें स्वयं ने इन्हें बुलाया है। अपने कर्मों का ही परिणाम है। ऐसे गहन चिंतक के चरणों से हम नतमस्तक हो गये। स्वयं गुरुदेव तभी से और अधिक सतर्क अपने व्रतों के प्रति हो गये। निरीह वृति व अप्रमत्त दशा को लेकर, हर पल सजग रहे। इतनी वृद्ध अवस्था, रोग की अवस्था, अत्यंत कमजोरी की अवस्था में भी करवट बदलते समय पिच्छी से परिमार्जन का ध्यान रखना, ऐसा ईशारा करना। ऐसी चर्या केवल आत्मनिष्ठ, शुद्धोपयोगी महान साधक के द्वारा ही हो सकती है, जो कि उनके उत्कृष्ट तप साधना का परिचायक है। 18 फरवरी को उस महान आत्मा का संदेश तो मैने यही समझा कि **जब अंत समय आया तो, संकेत किया चलते हैं खुश रहना धर्म के प्यारो, अब हम तो सफर करते हैं**

उस महान साधक का सफर, शीघ्र सिद्ध अवस्था पर पूर्ण होगा, प्राप्त होगा ऐसे श्री चरणों में भावभीनी विनयांजलि।

श्रमण शतक में क्या है।

✻ ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर ✻

परम पूज्य आचार्य विद्यासागर जी ने अपनी साहित्य रचना की श्रृंखला में पहला संस्कृत शतक सन् 1974 में सृजित किया था। प्रस्तुत शतक में एक सौ एक छन्दों का नियोजन किया गया है। आर्या छन्द की सुंदर दो रचनायें उपमायुक्त और अनुप्राश अलंकारों की सुन्दर सी छटा प्रस्तुत शतक में देखने को मिलती है। वसन्ततिलका छन्द हिन्दी भाषा की रचना देखकर कोई भी श्रावक सहजता से गुन गुनाने लगता हैं। भाषा की सहजता उदाहरणों की प्रभुक्ति भावों की गंभीरता और जैन दर्शन और अध्यात्म के गंभीर सूत्रों को समेटे हुये श्रमण शतक में साहित्य की श्रृंखला में नई कड़ी जोड़ी है। श्रमण शतक का अर्थ करने के लिए बड़े-बड़े विद्वान भी अपने माथे पर पसीने की बूंद ले आते है। विद्वान भी यह कहने लगते है कि इनके अनेक श्लेषित अर्थ निकालना हर एक विद्वान की बात नहीं है। पंडित पन्नालाल साहित्याचार्य ने इस श्ताक के भावों को स्पष्ट करने के लिए अथक परिश्रम किया है। वे भी कही नहीं अपने को जब अटका हुआ पाते थे तो आचार्य श्री के पास आकर ही स्पष्ट कर पाते थे। सफल पुनीत श्रमण शतक का अध्ययन करना किसी पुण्यशाली अल्प आत्मा का ही पुरुषार्थ होगा।

श्रमण शब्द का अर्थ दो रूप में उपलब्ध होता है। प्रथम व्युत्पत्ति रूप है। जो श्रम शब्द से उत्पन्न होता है। श्रमधातु से ल्युट प्रत्यय से यह शब्द बनता है। तप और उससे उत्पन्न खेद इसका अर्थ होता है लेकिन परम्परा की दृष्टि से प्रचलन यह शब्द तपस्यिों के प्रभुत्व होना रूढ हो गया है। जैन और बौद्ध परम्परा में श्रमण शब्द साधुओं के लिए दृढ़ हो चुका है। जिसमें ध्यान और साधना दोनों मतों में समान पायी जाती है। परंतु दिगम्बर जैन परंपरा में श्रमण की साधना अतुलनीय है। ऐसे श्रमण को संबोधित करने के लिए आचार्य श्री ने 101 छन्दों के माध्यम से अजमेर नगरी में बैठकर इस अमूल्य कृति का जैन साहित्य संस्कृति में अवदान दिया है। आपका यह उपकार युगों युगों तक जैन दार्शनिक आध्यात्मिक परम्परा विस्मृत नहीं कर पायेगी।

श्रमण शतक ग्रंथ का प्रारंभ पूज्य आचार्य श्री ने मंगलाचरण से किया है पाँच छन्दों के मंगलाचरण में अरिहंत भगवान को स्मरण करके भद्रबाहु स्वामी कुंदकुंद आचार्य सरस्वती माता और आचार्य ज्ञानसागर जी के गुणों का अनुवाद किया है लेखन का उद्देश्य श्रमण के हित एवं सुधात्म अनुभूति की प्राप्ति बताते हुये आगे लिखा है कि मुनि बने बिना आत्म अनुभूति का अभाव होता है वासना का त्याग ही निज की उपासना है पुण्य पाप को पुद्गल मय बताया है।

प्रस्तुत ग्रंथ में आत्मानुभूति की समग्र विधि और अत्मानुभूति की उपलब्धि आत्मानुभूति के पात्र तथा आत्मानुभूति की महिमा बीस छन्दों में निबद्ध की है। (19,23,16,21,27,29 76,81,82,84)

आत्मानुभूति के विशेष प्रसंगों को अनुभूति के गहरे सागर में कल्लोले करते हुये आत्म रसिक बनकर लेखन किया है श्रमण शतक के (30,50,51,62,65,72,77,84,88 93,99) छन्दों में विषय को समायोजित किया है निजानुभव के विषय में 41 में छन्द में लिखा है।

बोधि मुमुक्षु का वर्णन करते हुये मिथ्यात्व और पर का तत्त्व की निंदा स्पष्ट शब्दों में की गयी है।

श्रमण की सोम्यता धन की असारता क्रमशः 36 व 37 छन्द में बताई गयी है। ज्ञान अवगाही आत्मा और आत्मा का स्वरूप 47 और 74वें छन्द में बताया है। महाव्रत लेने की प्रेरणा और परभाव का फल तथा वीतरागता की महिमा इस ग्रंथ में विशेषता से बतायी गयी है। पुण्य और पाप दोनों को त्यागने का उपदेश दिया है। बहिरात्मा अंतरात्मा और परमात्मा का खूब सरल शब्दों में वर्णन किया है।

रत्नत्रय की महिमा भावश्रुत की महिमा और देव भी दुखी होते है इस सच को श्रमण शतक में स्पष्टता विवेचित किया गया है। दिगम्बरत्व सार्थकता बताते हुए काय विषय पर गहरा प्रकाश डाला है और दिगम्बरत्व रूप धारण करने वाले को इन्द्रिय विषय और क्षमा धारण करना चाहिये तथा मदमुग्ध साधना होना चाहिये क्षमता युक्त होते हुये ममता का काम अटके सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यग्चारित्र युक्त होकर दिगम्बर मुनि को दुर्ध्यान से दूर रहकर धर्म ध्यान से हमेशा लीन रहना चाहिये। श्रमण वही होगा जो आर्त रोद्र, ध्यान से दूर रहेगा तथा इस भव के अंत में आत्मानुभूति का झरना उसी के झरता है जो विषय चाह की दाह से रहित होता है। अंतिम प्रेरणा देकर अंत में मंगलाचरण के साथ अविद्या तब के विद्यासागर बनने की भावना भायी है।

श्रमण शतक के लक्ष्य एक नजर में

1. ग्रंथ का नाम श्रमण शतक मूल ग्रंथ संस्कृत
2. मूल ग्रंथ की भाषा- संस्कृत
3. मूल ग्रंथ का छन्द- आर्या
4. मूल ग्रंथ का परिमाण- 101 छन्द
5. अनुवाद की भाषा- हिन्दी (राष्ट्रभाषा)
6. अनुवाद का छन्द- वसन्ततिलका
7. मूल ग्रंथ लेखाकार- 6 मई सन् 1974
8. अनुवादकाल- 18 सितम्बर सन् 1974
9. स्थानमूल मूल्य रचना- अजमेर
10. अनुवाद स्थली- सोनी जी की नसिया अजमेर

कविता

मुक्तिपथ के राही है

संस्कार फीचर्स

सदा सत्य है दोष मुक्त है काम वासना मुक्त सदा
नहीं विकार छू सकता है उनको भेष दिगम्बर अनुपम है
पुरुष नारी में देह गेह में जिनकी परिणति अति सम हे
लज्जा रहित शील सहित वे परिषह सहते अति भारी
आत्म साधना संयम तप त्यागी साधक
मुनि दिगम्बर मुक्ति पथ के राही है।

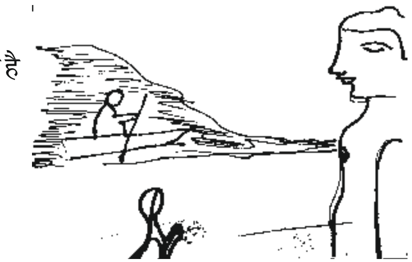

चलो देखें यात्रा

ऐतिहासिक तीर्थ खंडगिरी-उदयगिरी

खंडगिरी-उदयगिरी में 2 पहाड़ियां है जिन्हें एक सड़क अलग करती है। धर्मशाला से यह पहाड़ी नजदीक है। उदयगिरी में 18 और खंडगिरी में 15 गुफायें है। खंडगिरी और उदयगिरी से अनेकों मुनियों का निर्वाण हुआ है।

क्षेत्र पर धर्मशाला में एक शांतिनाथ भगवान का आधुनिक मंदिर है। यहां से लगभग 50 गज चलने पर खंडगिरी पहाड़ी पर अनंत गुफा के ऊपर 4 मंदिर है। गुफा में तीर्थंकरों की मूर्तियों के अलावा शासन देवियों की प्रतिमाए हैं। यहाँ के मूलनायक कलिंग जिनेन्द्र आदिनाथ भगवान है।

उदयगिरि में पर्वत पर हाथी गुफा की छत पर उत्कीर्ण शिलालेख 2400 वर्ष प्राचीन है। यह शिलालेख सम्पूर्ण भारत में सबसे अधिक प्राचीन है। उदयगिरी के गुफाओं में रानी गुफा सबसे बड़ी एवं आकर्षक है।

क्षेत्र पर भुवनेश्वर 8 किमी, कलकत्ता 440, पुरी 60, शिखरजी 615, कोणार्क 69, नंदन कानन (जू) 21, कटक-35 किमी है। निकटतम रेल्वे स्टेशन (8), भुवनेश्वर है। हवाई अड्डा (8) एवं रेल्वे स्टेशन से ऑटो टैक्सी उपलब्ध है। स्टेशन एवं बस स्टैण्ड 12 किमी।

नाम: श्री खंडगिरी उदयगिरी दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र
खंडगिरी भुवनेश्वर - 751030 फोन 0674-2384530
मो. 9438730773, प्रबंधक विनीता जैन
संपर्क सूत्र : श्री पवनकुमार बाकलीवाल 9040040983
ऑफिस: 9438555775

सुविधा: सुविधायुक्त 6, सामान्य 14, एसी-2, हॉल-1 है। भोजन उपलब्ध है। पारस ट्रेवलर्स- सुविधा उपलब्ध है। संपर्क 9438555775, 8249879675।

विशेष: उडीसा के अनेक जिलों में मुर्तियां एवं शिलालेख प्राप्त हुये हैं। कटक को जैन यात्रा में शामिल किया जाना चाहिये।

आगम दर्शन

जिनकल्प की अवधारणा और दिगम्बरत्व

जिनकल्प की विच्छिन्न होने की घोषणा कितनी आगमिक हैं इसका चिन्तन करना आवश्यक है। आगम रत्नाकारों ने कल्पना के आधार जिनकल्पी विच्छन्न की घोषणा करना कितना उचित है श्वेताम्बर मान्य कथा को स्वीकार कर लें तो शिवभूति ने जिनकल्प (दिगम्बर मत) को स्वीकार किया था, उसका कारण इसके अतिरिक्त और क्या हो सकता है कि जिनकल्पी मार्ग से भ्रष्ट साधुओं में फिर से जिनकल्प (दिगम्बरता) का प्रचार किया जाये। कथा के अनुसार शिवभूति गुरू के मुख से जिनकल्प का उपदेश सुनकर उसे धारण करने में निश्चित प्रतिज्ञ हुए थे। उससे पता चलता है कि शिवभूति से पहले भी जिनकल्प अवश्य था जो इस समय शिथिल हो चुका था।

श्वेताम्बर ग्रंथों में ऐसा उल्लेख पाया जाता है- **संयमो जिनकल्पस्थ दुःखसाध्योऽयं ततोऽछुना। व्रतं स्प्राविरकल्पस्य तस्मादस्मामिरक्षितम्।** तथा- **दुर्धरों मूलमार्गोऽयं न धर्त्तु शक्यते ततः।** इस उद्धरण से स्पष्ट कहा गया है कि जिनकल्प ही मूल मार्ग है, परंतु काल की करालता के कारण आज उसका धारण किया जाना शक्य नहीं है। इसीलिये हमने स्थिर कल्पना का आश्रय लिया है। इधर तो श्वेताम्बराचार्य ऐसा लिखते हैं दूसरी तरफ दिगम्बराचार्य क्या कहते हैं-

विषयाशावशातीतो निरारम्भो परिग्रहः। ज्ञानध्यान तपोरक्तस्तपस्वी स प्रशसस्यते /10- जो विषयों की आशा के वश न हो और परिग्रह से रहित तथा ज्ञान ध्यान तप में लवलीन हो वह तपस्वी गुरु प्रशंसनीय है।

इसके अतिरिक्त विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में से वराहमिहिर भी नग्न साधुओं का उल्लेख करते देखे जाते हैं-

विष्णोभार्गवनामयकच सवितुर्विप्रा विदुब्राह्मणः मातृणामिति मातृमण्डलविदः शंभोः पाश्रिताः स्वविधिता ते तस्य कुर्यः क्रियाम्। भाव यह है कि वैष्णव लोग विष्णु की प्रतिष्ठा करे।

सूर्योपजीवो लोग सूर्य की उपासना करें, विप्र लोग ब्रह्म की करें, ब्रह्मणी व इन्द्राणी प्रभृति सप्त मातृमण्डल की उनकी मानने वाले अर्चना करें, बौद्ध लोग बुद्ध की प्रतिष्ठा करें, नग्न (दिगम्बर साधु) लोग जिन भगवान की पर्युपासना करें थोड़े शब्दों में यों कहिए कि जिस-जिस देव के जो उपासक हैं वे उसकी अपनी-अपनी विधि से उपासना करें।

महाभारत जो कि वेदव्यास जी द्वारा ईसवी पूर्व बहुत प्राचीन काल में रचा गया था, वह भी दिगम्बर मत कहता है। यथा-

साधयामस्तावदित्युक्तवा प्रतिष्ठतोतङ्कस्ते कुण्डले ग्रहीत्वा सोऽपश्य पथि नग्न अपककमागच्छन्न मुहुर्महूर्दृश्यगानं च। (महाभारत परिच्छेद 3)- इसके अतिरिक्त भी महापुराण अश्व में अतधिकार में 46/5/पृ. 6201 पर दिगम्बरत्व व अस्नानत्व का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। तथा 46/18/पृ. 6166 पर दिगम्बर साधु सरीखी ही आहार विहार चर्या आदि सम्बन्धी उल्लेख पाया जाता है।

इसके अतिरिक्त भी दिगम्बराम्नाय में कुन्द कुन्द प्रभूति आचार्यों कृत ईसवी पहिली शताब्दी के ग्रंथ उपलब्ध होते हैं , जब कि श्वेताम्बरों के इतने प्राचीन ग्रंथ प्राप्त नहीं है।

श्वेताम्बर के अनुसार दिगम्बर मत की उत्पत्ति- यह सात विषय उत्तराध्ययन सूत्र/ अध्याय 3/ चूर्ण सूत्र 578 की श्री शांति सूरिकृत संस्कृत वृत्ति के तथा उसमें उद्‌धृत विविध आगमोक्त के आधार पर संकलित किया गया है।

द्विविध कल्प निर्देश- दिगम्बर मत की उत्पत्ति से पूर्व दिगम्बर व श्वेताम्बर ऐसे दो सम्प्रदायों का नाम नहीं था, परन्तु साधुओं के दो कल्प अवश्य थे- स्थविर कल्प व जिन कल्प जिनके लक्षण व भेद निम्न प्रकार हैं।

उत्तराध्ययन टीका/पृ. स्थविराश्च स्थिरीकरणकारिणः। (पृ. 252)।

यः स्याजिन इव प्रभुः। (पृ. 179 पर उद्‌धृत श्लोक) स च प्रथम संहनन एवं (टीका पृ. 279)। तात्पर्य यह कि-

क्र	स्थविर कल्प	जिन कल्प
01	हीन संहनन धारी	उत्तम संहनन धारी
02	अपवादनुसारी मृदु आचारवान	जिनेन्द्र प्रभुवत् उत्सर्ग मार्गानुसारी कठोर आचारवान्।
03	मंदिर मठ आदि में ससंघ आवास	एकाकी वन विहारी
04	श्रावकों के भोजन काल में भिक्षावृत्ति	श्रावकजन खा पीकर निवृत्त हो चुकें ऐसे तीसरे पहर में भिक्षा वृत्ति। बचा कुचा मिला तो ले लिया अन्यथा उपवास किया।
05	राग आदि होने पर उसका उपचार करते हैं	उपचार न करते हैं न करवाते हैं।
06	आँख में रजाणु पड़ जाने पर अथवा पाँव में शूल लग जाने पर उसे निकालते या निकलवाते हैं।	न निकालते हैं न निकलवाते हैं।
07	सिंह आदि के समक्ष आ जाने पर भागकर अपनी रक्षा करते हैं।	वहाँ ही ध्यानस्थ होकर खड़े हो जाते हैं।
08	साँझ पड़ने पर भी उचित स्थान की खोज करते हैं	जहाँ दिन छिपा वही खड़े हो जाते हैं।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता जनवरी 2025

गुणीजन का सम्मान

प्रथम-

प्रेम का हो संचार, अहं है दुर्षिचार
अहंकारता अपमान,
विनय उन्नति का विज्ञान
जो मन का अभियान
करो गुणी जन का सम्मान

श्रीमति रजनी जैन, राहतगढ़

द्वितीय-

गुण की पूजा जो करें
तजे सकल अभिमान
विनय भाव मन में बसे
गुणि का सम्मान

श्रीमति अनीता जैन, इंदौर

तृतीय-

उपकारी का उपकार जो माने
गुण निधन गुण नित्य बखाने
गुण की पूजा शिव सुख धाम
कर नित गुणी जन का सम्मान

राजेश जैन, गंजबसौदा

वर्ग पहेली क्र. 302
दिसम्बर 2024 के विजेता

प्रथम : श्रीमती विनीता जैन, मुंबई
द्वितीय : श्रीमती अनीता जैन, अहमदाबाद गुजरात
तृतीय : श्रीमती अभिलाषा जैन, भोपाल

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. आ द् अ द्द अ द्ढ ण् आ अ ल् अ र् ष् द्द
2. ई ओ अ स् आ क् अ र् अ प् र् व् न् त् त् र् सं
3. क् इ ओ त् इ आ य् ग् त् इ आ इ न् द् ए द् श प्र
4. स् अ र् अ आ आ ट् आ स् अ व् इ र् अ उ र् प् अ व् द् य् ग वि
5. अ स् क् आ र् अ आ स् ग् अ र् सं

परिणाम :
अगस्त 2022: (1) संस्कार सागर (2) जैन संदेश (3) कुन्दकुन्द वाणी (4) अर्हत वचन (5) शोधादर्श

पुराण प्रेरणा

पुण्य पाप का विज्ञान

सद्भूतस्यापि दोषस्य परकीयस्यं भाषणम्।
पापहेतुरमोघ्यः स्यादसद् भूतस्य किं पुनः ।।

दूसरे के विद्यमान दोष का कथन करना भी पाप का कारण है फिर अविद्यमान दोष के कथन करने की तो बात ही क्या हैं ? वह तो ऐसे पाप का कारण होता हैं जिसका फल कभी व्यर्थ नहीं जाता अवश्य ही भोगना पड़ता है।

वक्ता श्रोता च पापस्य यन्नात्र फलमश्नुते।
तदमोधाममुत्रास्य वृद्धयर्थमिति बुद्धताम्।।

पाप का वक्ता और श्रोता जो इस लोक में उसका फल नहीं प्राप्त कर पाता है वह मानो परलोक में वृद्धी के लिए ही सुरक्षित रहता है ऐसा समझना चाहिये भावार्थ- जिस पाप का फल वक्ता और श्रोता को इस जन्म में नहीं मिल पाता है उसका फल परभव में अवश्य मिलता है और ब्याज के साथ मिलता है।

त्यजन वाचसत्यमलीद्धतां भजत सत्यवचो निखद्यताम।
विजयशो विशदां सगुणोद्यतां विजयिनी त्विह विश्वविदोदिताम्।।

असत्यरूप दोष से उद्धत वाणी को छोड़ो और सत्य वचन से उत्पन्न उस निर्मलता का सेवन करो जो अपने यश से विशद है, गुणी मनुष्यों के प्राप्त करने में उद्यम है। इस लोक में विजय प्राप्त कराने वाली है और सर्वज्ञदेव के द्वारा निरूपित है।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेने के बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया,संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

केरियर

आई.टी.आई औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान

यह एक तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा केन्द्र है, जहाँ युवाओं को उद्योगों में काम करने के लिए जरूरी कौशल और ज्ञान दिया जाता है। आई.टी.आई में कई तरह के कोर्स होते है जिनमें इंजीनियरिंग और गैर इंजीनियरिंग दोनों शामिल है। आई.टी.आई करने के बाद सरकारी और प्राइवेट दोनों ही क्षेत्रों में नौकरी मिल सकती है।

आई.टी.आई की कुछ प्रमुख ट्रेड ऐसे है-

कोर्सेस

1. इलेक्ट्रॉनिक मैकेनिक
2. इलेक्ट्रीकल
3. फिटर
4. वेल्डर
5. प्लंबर
6. इलेक्ट्रीशियन
7. स्टेनोग्राफी
8. कम्प्यूटर ऑपरेटिंग एण्ड प्रोग्रामिंग असिस्टंट
9. मेकनीक मोटर व्हिकल
10. बेसिक कॉस्मेटोलॉजी
11. ह्युमन रिसोर्स एक्सीक्युटीव्ह
12. लेदर गुड्स मेकर
12. हॉस्पिटल हाऊस किपींग
14. मार्केटिंग एक्सीक्युटीव्ह
15. हॉरीकल्चर
16. लीथो ऑफसेट मशीन

अवधि- 1. सर्टिफिकेट कोर्स- 3,6 माह से 2 साल तक
डिप्लोमा- 1 से 2 साल

फीस- प्रतिवर्ष- 5 हजार से 50 हजार तक

नौकरी- बांधकाम, कृषी, वस्त्रोद्योग, आणि ऊर्जा क्षेत्र, इलेक्ट्रॉनिक्स, वेल्डिंग, रेफ्रीजरेशन आणि एयर कंडिशनिंग मेकॉनिक्स

वेतन- 10000 से लेकर 2.5 लाख तक

इस्टीट्यूटः गर्वमेंट इण्डस्ट्रियल ट्रेनिंग इन्सिट्यूट- मुंबई, पुणे, सतारा, वाशीम, अकोला, बुलढाणा, तथा हर जगह प्राइवेट इण्डस्ट्रियल ट्रेनिंग इन्सिट्यूट भी लगभग हर जगह है।

दुनिया भर की बातें

■ 1 दिसम्बर

- गढ़चिरोली: महाराष्ट्र तेलंगाना सीमा पर पुलिस ने 7 नक्सलियों को मार गिराया।

- वाशिंगटनः एफ . बी. आय के संचालक पद पर भारतीय मूल के काश पटेल को नियुक्त किया गया।

- अमरवतीः आंध्रपदेश में वक्फ बोर्ड को चंद्रबाबू नायडू की सरकार ने निलंबित किया।

■ 2 दिसम्बर

- संसद में 7 दिन बाद गतिरोध टूटा काम काज शुरु होगा।

- अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन ने अपने बेटे हंटर बाइडेन की सजा माफ की।

- अहमदाबादः मुस्लिम शिक्षक ने 50 लाख का मकान हिन्दू लड़की अस्मिता झाला के नाम किया।

■ 3 दिसम्बर

- ढाकाः सनातनी जागरण जोत के प्रवक्ता चिन्मयकृष्ण दास को कोई वकील नहीं मिला अतः जमानत दो जनवरी तक टली।

- श्रीलंकाई नौ सेना ने 18 भारतीय मछुआरों को गिरफ्तार किया।

- दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति यून सुकयोल ने मार्शल लाँ लागू किया।

■ 4 दिसम्बर

- स्वर्ण मंदिर के गेट पर पूर्व आतंकी के हमले में पूर्व मुख्यमंत्री सुखबीर बादल बाल बाल बचे।

- यू.पी. पुलिस ने विपक्ष नेता राहुल गांधी को संभल जाते हुए रोका।

- नामीबिया अफ्रीकी देश की पहली महिला राष्ट्रपति नेटुम्बो नंदी नदैतवाह बनी।

■ 5 दिसम्बर

- महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री पद की शपथ देवेन्द्र फडवनीस ने ली तथा एकनाथ शिंदे एवं अजीत पवार ने उपमुख्यमंत्री की शपथ ली।

- हैदराबादः अल्लू अर्जुन की फिल्म देखने भीड़ उमड़ी सिनेमाघर में दम घुटने से एक महिला की मौत हुई।

- रूस के राष्ट्रपति ने भारत की भारत फर्स्ट नीति और मेक इन इंडिया महल की प्रशंसा की।

■ 6 दिसम्बर

- राज्यसभा के सांसद अभिषेक मनु संघवी की सीट पर 500 नोटों की गड्डी मिली।

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा त्वरित सुनवाई मौलिक अधिकार है। विचाराधीन कैदी को अनिश्चित काल तक कैद में नहीं रखा जा सकता है।

- छतरपुर सरकारी स्कूल के 12वीं के छात्र ने प्रिंसीपल सुरेन्द्र सक्सेना की गोली मारकर हत्या कर दी।

■ 7 दिसम्बर

- इंफालः मणिपुर के थाउबल जिले से गोला बारूद का जखीरा जब्त किया सुरक्षा बल ने।

- ढाकाः उपद्रवियों ने इस्कॉन के केन्द्र को आग के हवाले किया।

- सीरिया के तीसरे बड़े शहर होम्स पर विद्रोहियों का कब्जा हुआ।

■ 8 दिसम्बर

- सीरिया के राष्ट्रपति वसर अल असद देश छोड़कर भागे विद्रोही राजधानी दमिश्क में घुसे।

- मुरैनाः पुलिस शास्त्रागार से 200 कारतूसों की चोरी हुई।

- डी मुकेश ने 11वीं बाजी जीत विश्व शतरंज चैंपियन शीप में 1 अंक की बढ़त हासिल की।

■ 9 दिसम्बर

- भारतीय रिजर्व बैंक के नये गवर्नर संजय मल्हौत्रा बने।

- रूस ने सीरिया के पूर्व राष्ट्रपति बसर असद को शरण दी।

- बांसवाडाः (राजस्थान) जिले के अंबापुर थाना क्षेत्र के नलदा गाँव जहरीली चाय पीने से तीन की मौत हुई।

■ 10 दिसम्बर

-विपक्ष ने उपराष्ट्रपति के प्रति अविश्वास का नोटिस दिया।

- पूर्व विदेश मंत्री एस एम कृष्णा का निधन हुआ वे 12 वर्ष के थे।

- फतेहपुरः बांदा बहराइच हाईवे पर स्थित नूरी मस्जिद का हिस्सा ढहाया।

■ 11 दिसम्बर

- हिंदी लेखिका सूर्यबाला को व्यासपीठ सम्मान की घोषणा हुई।

- काबुलः तालीवान शरणार्थी मंत्री खलील हक्कानी सहित 3 लोगों की मौत आत्मघाती हमले से हुई।

- एक हंपबैक व्हेल ने 1300 किमी. का लम्बा सफर कर वैज्ञानिकों को चौंकाया।

■ 12 दिसम्बर

- डी मुकेश शतरंज में विश्व चैम्पियन बने। वे 18 साल के है।

- सुप्रीम कोर्ट ने केन्द्र सरकार को 1 माह के अंदर अपना पक्ष रखने के लिए कहा अब सरकार उपासना स्थल एक्ट पर अपना पक्ष रखेगी।

- एक देश एक चुनाव कराने वाले विधेयक को कैबिनेट ने स्वीकृति दी।

■ 13 दिसम्बर

- कोलकाताः डॉक्टर (ट्रेनी) के बलात्कार हत्या मामले में आर जीकर मेडिकल कॉलेज के पूर्व प्रिंसीपल को जमानत मिली।

- फिल्मी अभिनेता अल्लू अर्जुन को हाईकोर्ट से जमानत मिली। प्रिमियर के दौरान भगदड़ में महिला की मौत के आरोप में उन्हें गिरफ्तार किया गया था।

- फ्रांस्वा बायरु फ्रांस के प्रधानमंत्री नामित हुए।

■ 14 दिसम्बर

- दिल्ली जा रहे किसानों पर आंसू गैस के गोले दागे गये 17 किसान घायल हुए।

- दक्षिण कोरिया में मार्शल लॉ लगाने वाले राष्ट्रपति यून सुकयोल के विरूद्ध महाभियोग पारित हुआ।

- उच्चतम न्यायालय की न्यायाधीश बेला त्रिवेदी महानदी जल न्यायाधिकरण की अध्यक्ष बनी।

■ 15 दिसम्बर

- नागपुरः भाजपा के 19 शिवसेना के 11 और राकांपा के 9 मंत्री बने कल 39 मंत्रियों ने शपथ ली।

- तबला वादक उस्ताद जाकिर हुसैन का निधन हुआ वे 73 वर्ष के थे।

- इजरायल हमले में 7 लोगों की मौत हुई तथा 12 घायल हुए।

16 दिसम्बर

- भोपालः विधानसभा काँग्रेस विधायकों ने खाद की खाली बोरियों के साथ प्रदर्शन किया खाद की कमी के विरूद्ध आवाज उठाई।

- दिल्ली में डीजल में चलने वाले माल वाहकों पर प्रतिबंध लगा।

- जयपुरः एक कोचिंग सेंटर में गैस लीक होने से 12 छात्राएँ बेहोश हुई। दो छात्राएँ गंभीर हुई।

17 दिसम्बर

- मास्कोः परमाणु जैविक और रसायनिक रक्षा बलों के प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल शगरो किरिलोव की मौत हुई।

- दक्षिण प्रशांत महासागर के तट पर स्थित वानु आतु द्वीप में 7.5 तीव्रता से भूकम्प आया।

- जम्मू कश्मीर में पारा माइनस से नीचे 5.3 गया 30 मीटर ऊंचा द्रंग झरना जमा।

18 दिसम्बर

- मुम्बईः वेट वे ऑफ इंडिया के मॉस नौका टकराने से डूबी नॉव में सवार 13 लोगों की मौत हुई 101 को बचाया।

- लखनऊः पुलिस के साथ झड़प में काँग्रेस कार्यकर्ता प्रभात पांडे की मौत हुई।

- भारतीय टीम के क्रिकेटर अश्विन ने सन्यास लिया उन्होंने 106 मैच खेले 537 टेस्ट विकेट लिये।

19 दिसम्बर

- संसद परिसर में प्रदर्शन के चलते भाजपा और विपक्ष के बीच धक्का मुक्की हिंसक हुई प्रताप सारंगी मुकेश राजपूत घायल हुए। राहुल गांधी पर एफ आई आर हुई।

-संभल के सांसद जिया उर्रहमान बर्क बिजली चोरी के मामले में उलझे।

- कुलगाम (जे.के.) सुरक्षा बल के साथ मुठभेड़ में 5 आतंकी ढेर हुए।

20 दिसम्बर

- जयपुरः अजमेर-जयपुर एन.एच. पर ट्रक टेंकर में टक्कर में आग लगने से 35 वाहन जले 12 लोगों की मौत हुई 35 लोग झुलसे।

- हरियाण के पूर्व सी.एम. ओम प्रकाश चौटाला का निधन हुआ वे 89 वर्ष के थे।

- भोपालः जंगल में एक कार से 52 किलो सोना 11 करोड़ नगद जब्त हुए।

21 दिसम्बर

- पूर्व न्यायाधीश मदन बी लोकुर संयुक्त राष्ट्र संघ की आंतरिक न्याय परिषद के अध्यक्ष नियुक्त हुए।

- देवासः एक घर में आग लगने से एक ही परिवार के चार लोगों की मौत हुई।

- रूस पर यूक्रोनी ड्रोनों का हमला हुआ।

22 दिसम्बर

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को कुवैत का सर्वोच्च सम्मान द आर्डर ऑफ मुबारक अलकबीर से नबाजा गया।

- कांगो में बुसिरा नदी में नाव पलटने से 38 लोग मरे।

- बड़वानी : जिले के नारालबाड़ी के पास चलती बस में आग लगी।

23 दिसम्बर

- प्रसिद्ध फिल्मकार श्याम बेनेगल का निधन हुआ वे 90 वर्ष के थे।

- पीलीभित्तिः खालिस्तानी समर्थक 3 आतंकी मुठभेड़ में ढेर हुए। दो ए.के. 47 और 2 पिस्टल मिली।

- केन्द्र सरकार ने 5वीं 8वीं तक अनुत्तीर्ण करने की नीति को समाप्त किया।

24 दिसम्बर

- चुनाव आयोग ने मुख्य विपक्षी दलों के आरोपों को सिरे से खारिज किया।

-आरिफ मोहम्मद खान बिहार के राजेन्द्र आर्लेकर केर लर्क अजयकुमार भल्ला मणिपुर के हरी बाबू कम्भापत्ति उड़ीसा के राज्यपाल नियुक्त हुए।

- साहित्यकार दयानंद पांडेय को मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी ने राजा सिंहदेव पुरुस्कार से सम्मानित किया।

25 दिसम्बर

- अजर बैजान एयर लाईन का यात्री विमान ऐंबार्क 190 कजाकिस्तान में क्रेश 30 यात्री मरे 32 बचे।

- श्री गंगानगरः राजस्थान में एक पाक घुसपैठिया की बी.एस.एफ ने मारा गिराया।

- नैनीतालः एक बस खाई में गिरी 4 की मौत हुई। 20 अन्य घायल हुए।

26 दिसम्बर

- पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का निधन हुआ वे 92 वर्ष के थे।

- काँग्रेस के अजय माकन ने आप के संयोजक अरविंद केजरीवाल को फर्जीवाल कहा।

- भारतीय वन्य जीव संस्थान की रिपोर्ट अनुसार मध्यप्रदेश में 785 बाघ और कर्नाटक में 363 उत्तराखंड 560 बाघ है।

27 दिसम्बर

- लाहौरः भारत में मुम्बई आतंकी हमले में मास्टर माइंड हाफिज अब्दुल रहमान मक्की हार्टअटैक से मरा।

- चेन्नईः भाजपा अध्यक्ष के अन्ना भलई ने खुद को कोडे मार कर विरोध प्रदर्शन किया अन्ना यूनिवर्सिटी में छात्रा के साथ हुए दुष्कर्म का विरोध कर रहे थे।

- सुप्रीम कोर्ट ने किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल को अस्पताल में भर्ती नहीं कराने पर पंजाब सरकार पद नाराजगी जताई।

28 दिसम्बर

- मुम्बई की 16 वर्षीय काम्याकार्ति केयन ने माउंट विसेन पर फतेह की।

- के. एन. रेणुका कर्नाटक में ट्रांस जेंडर की प्रोफेसर के रूप में नियुक्ती हुई।

- जयपुरः भाजपा सरकार की कैबिनेट ने 9 जिले और 3 संभाग खत्म करने का फैसला लिया।

29 दिसम्बर

- सोलः दक्षिण कोरिया में लेडिंग करता विमान क्रैश हुआ विमान आग का गोला बना 179 यात्री राख हुए।

- भरूचः रासायनिक फैक्ट्री में जहरीली गैस का रिसाव होने से 4 कर्मचारियों की मौत हुई।

- वैष्णोदेवी रोपवें प्रोजेक्ट का विरोध जारी रहा भाजपा विधायक बलदेव राज शर्मा ने भूख हड़ताल की घोषणा की।

30 दिसम्बर

- अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जिमि कार्टर का निधन हुआ वे 100 वर्ष के थे नोबेल शांति पुरुस्कार से नवाजे गये।

- एम एस पी गारंटी मांग को लेकर किसान आंदोलन का पंजाब बंद सफल रहा।

- इंथोपिया में एक ट्रक नदी में गिरने से 66 लोगों की मौत हुई।

31 दिसम्बर

- ढाकाः मार्च कार यूनिटी निकला संविधान बदलने की मांग।

- मणिपुर के मुख्यमंत्री वीरेन सिंह ने हिंसा के 20 माह बाद माफी मांगी।

- रूस ने मिसाईल ड्रोन से कीव सहित कई शहरों पर हमला किया।

इसे भी जानिये

रूस के राष्ट्रपति

01	बोरिस येल्तासीन	1991-1999
02	वाल्डिमिर पुतिन	2000-2008
03	दिमित्री मेदवेदेव	2008-2012
04	वाल्डिमिर-पुतिन	2012-

चीन के राष्ट्रपति

रिपब्लिक ऑफ चाइना

01	सुन यात् सेन	1912
02	युआन शिकइू	1912-1916
03	लि युआन हाँग	1916-1917
04	फेंग गुओझांग	1917-1918
05	सु शिचांग	1918-1922
06	काओ कुन	1922-1924
07	दुआन किरुई	1924
08	झांग झुओलिन	1924-1928
09	चांग काइ शेक	1928-1949

पिपल रिपब्लिक ऑफ चाइना

01	माओ झेडाँग	1949-1959
02	लिओ शाउकी	1959-1968
03	डाँग बिल	1968-1975
04	झु डे	1975-1978
05	ये जिआंनिंग	1978-1983
06	लि शियानिंग	1983-1988
07	यांग शांगकुन	1988-1993
08	जियांग झेमिन	1993-2003
09	हु जिननाओ	2003-2013
10	शी जिनपिंग	2013-

दिशा बोध

कीर्ति

1. गरीबों को दान दो और कीर्ति कमाओ, मनुष्य के लिए इससे बढ़कर लाभ और किसी में नहीं हैं।
2. प्रशंसा करने वालों के मुख पर सदा उन लोगों का नाम रहता है, जो गरीबों को दान देते हैं।
3. जगत् में सब वस्तुएँ नश्वर हैं, परन्तु मनुष्य की एक अतुल कीर्ति ही नश्वर नहीं हैं।
4. देखो, जिस मनुष्य ने दिगन्तव्यापी स्थायी कीर्ति पायी है, स्वर्ग में देवता लोग उसे साधु-सन्तों से बढ़कर मानते हैं।
5. वह विनाश जिससे कीर्ति में वृद्धि हो और वह मृत्यु जिससे लोकोत्तर यश की प्राप्ति हो-ये दोनों चीजें महान् आत्मबलशाली पुरुषों के मार्ग में ही आती है।
6. यदि मनुष्य को इस जगत् में पैदा ही होना है, तो उसको चाहिए कि वह सुयश उपार्जन करे। जो ऐसा नहीं करता, उसके लिए तो यही अच्छा था कि वह जन्म ही न लेता।
7. जो लोग दोषों से सर्वथा रहित नहीं हैं, वे स्वयं निज पर तो नहीं बिगड़ते; फिर वे अपनी निन्दा करने वालों पर क्यों क्रुद्ध होते हैं? अर्थात् स्वयं को ही दोषों से मुक्त होना चाहिये, किसी पर क्रोध नहीं करना चाहिए।
8. निःसन्देह यह मनुष्यों के लिए बड़ी लज्जा की बात है कि वे उस चिरस्मृति का सम्पादन नहीं करते, जिसे लोग 'कीर्ति कहते' हैं।
9. बदनाम लोगों के बोझ से दबे हुए देश को देखो; उसकी समृद्धि भूतकाल में चाहे कितनी ही बढ़ी-चढ़ी क्यों न हो, धीरे-धीरे नष्ट हो जायेगी।
10. वही लोग जीते हैं, जो निष्कलंक जीवन व्यतीत करते हैं, और जिनका जीवन कीर्तिविहीन है, वास्तव में वे मुर्दे है।

मूकमृत्तिका महाकाव्य एवं धीवरोदय चम्पूकाव्य का भव्य लोकार्पण समारोह राष्ट्रीय विद्वत् संवाद सफलता पूर्वक हुआ सम्पन्न

सम्पूर्ण मानवता के लिए एक अमूल्य निधि है आचार्य श्री का साहित्य- आचार्य श्री समयसागर जी महाराज
निर्यापक श्रमण मुनि श्री अभयसागर जी महाराज ने सुनाए अनेक अविस्मरणीय दुर्लभ संस्मरण

(सतना से लौटकर डॉ. सुनील संचय ललितपुर की रिपोर्ट)

संत शिरोमणि आचार्य श्रेष्ठ श्री विद्यासागर जी महाराज की कालजयी कृति मूकमाटी के संस्कृत अनुवाद मूकमृत्तिका एवं धीवरोदय चंपूकाव्यम का भव्यातिभव्य लोकार्पण समारोह व राष्ट्रीय विद्वत् संवाद 11 व 12 जनवरी 2025 को दो दिवसीय आयोजन सतना मध्यप्रदेश में दिगम्बर जैन समाज सतना के आयोजकत्व में परम पूज्य आचार्य श्री 108 समयसागर जी महाराज जी, निर्यापक श्रमण श्री अभयसागर जी महाराज, आर्यिका श्री ऋजुमती माताजी सहित 16 मुनिराज, 11 आर्यिका, 11 क्षुल्लक जी के मंगल सान्निध्य में अभूतपूर्व सफलता के साथ संपन्न हुआ। संयोजक डॉ. ब्र. धर्मेन्द्र जयपुर एवं डॉ. सोनल कुमार जैन दिल्ली रहे। निर्देशक पंडित सिद्धार्थ जैन सतना एवं प्रबंध संयोजक पंडित महेश जैन सतना रहे।

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की समाधि उपरान्त उनकी जीवन्त स्मृतियों की छाया में उनकी कालजयी कृतियों पर दो दिन में चार सत्रों सारगर्भित में चर्चा-परिचर्चा हुई।

मूकमृत्तिका एवं धीवरोदयम् चंपूकाव्यम का भव्यातिभव्य लोकार्पणः इस मौके पर 11 जनवरी को मूकमृत्तिका का भव्य लोकार्पण विद्वानों एवं अतिथियों द्वारा किया गया। मूकमाटी का संस्कृत अनुवाद संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान प्रोफेसर अभिराज राजेन्द्र मिश्र शिमला ने किया है। धीवरोदयम चंपूकाव्यम का विमोचन 12 जनवरी को अतिथियों और विद्वानों द्वारा किया गया। कृतियों के कुशल संपादक प्रोफेसर जयकुमार जैन मुजफ्फरनगर, डॉ. ब्र. धर्मेन्द्र कुमार जैन जयपुर एवं डॉ. सोनल कुमार जैन दिल्ली ने कृतियों का विमोचन कराने के बाद आचार्य श्री समयसागर जी महाराज के करकमलों में एक-एक प्रति भेंटकर आशीर्वाद लिया।

सम्पूर्ण मानवता के लिए अमूल्य निधि आचार्य श्री का साहित्यः इस अवसर पर आचार्य श्री समयसागर जी महाराज ने कहा कि आगम अथाह है, श्रुत का अंत नहीं है, समय कम है। मूकमाटी क्या कह रही है इसको समझो। गुरुदेव ने जो कहा है वह आत्मसात हो जाये तो मूकमाटी की सार्थकता है। पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज अवर्णनीय साधक थे। उनको तलस्पर्शी ज्ञान था।

आचार्य श्री ने कहा कि मन को संयमित करना बहुत कठिन है। जो ज्ञान के साथ-साथ चारित्र के क्षेत्र में आगे बढ़ता है उसी का मन संयमित हो सकता है। आचार्य गुरुदेव विद्यासागर जी ने कहा था कि तुम पुण्य के उदय में दीक्षित हो गये हो लेकिन मन को संयमित रखना। आचार्य गुरुदेव विद्यासागर जी महाराज ने साधना के साथ-साथ साहित्य का सृजन किया। आचार्य विद्यासागर जी की विद्वत्ता, तपस्या और आध्यात्मिक उत्कर्ष का प्रतिबिंब उनके साहित्य में देखा जा सकता है। मूकमाटी महाकाव्य में आचार्य गुरुदेव विद्यासागर जी ने अपनी गहन आध्यात्मिक समझ और ज्ञान के ताने-बाने को बड़ी ही रोचकता से काव्य के माध्यम से साझा किया है। गुरुदेव के साहित्य में जीवन की सार्थकता, आध्यात्मिक जागृति और आत्म-साक्षात्कार की ओर ले जाने वाले विचारों का समावेश है।

दो दिवसीय विद्वत् संगोष्ठी में सबने आनंद की अनुभूति का अनुभव किया है, यह अवर्णनीय है। आचार्य श्री समयसागर जी महाराज ने संगोष्ठी में आचार्य गुरुदेव विद्यासागर जी महाराज से जुड़े अनेक प्रसंग भी सुनाए। आचार्य श्री द्वारा दिये गये सारगर्भित प्रवचनों से अपने मन और इन्द्रियों को जीकर संयमित होकर मनुष्य पर्याय सार्थक करने का प्रभावी संदेश सभी को प्राप्त हुआ है।

50 विश्वविद्यालयों में मूकमाटी महाकाव्य पाठ्यक्रम में है शामिलः निर्यापक मुनि श्री अभयसागर जी- आयोजन में निर्यापक श्रमण मुनि श्री अभयसागर जी महाराज के तथ्यपरक संस्मरणात्मक प्रवचन एक अविस्मरणीय दुर्लभ उपलब्धि रही है। उन्होंने बताया कि आचार्य गुरुदेव विद्यासागर जी महाराज सहजता और सरलता सेअपनी बात हम शिष्यों का सिखा देते थे। जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी गुरुदेव के दर्शन करने आए थे तब आचार्य श्री गुरुदेव ने उनसे कहा था कि देश को प्रगति की ओर ले जाना है तो आत्म निर्भर भारत बनाओ। तभी से प्रधानमंत्री ने आत्मनिर्भर भारत की बात शुरु कर दी थी। नई शिक्षा नीति में मानव मात्र के लिए देश की उन्नति के लिए आचार्य श्री के अनंत उपकार हैं।

गुरुदेव विद्यासागर जी महाराज ने 1984 में जबलपुर में मूकमाटी लिखना शुरु की थी तथा 11 फरवरी 1987 को सिद्धक्षेत्र नैनागिरी में इसका समापन किया था। 658 दिन में यह कृति पूर्ण हुई थी। उन दिनों जो देश में विषम परिस्थितियाँ थी उनका वर्णन मूकमाटी में किया गया है। देश और देश से बाहर 1. पंडित रविशंकर शुक्ला विश्वविद्यालय रायपुर, 2. विश्वविद्यालय राजकोट गुजरात,3. राष्ट्रसंत तुकाजो जी महाराज विश्वविद्यालय नागपुर, 4.बरकातुल्हा युनिवर्सिटी भोपाल, 5. विक्रमादित्य महाविद्यालय उज्जैन, 6.देवी अहित्या विश्वविद्यालय इंदौर, 7. रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर, 8. बनारस हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी, 9. अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय भोपाल, 10. सरदार पटेल विश्वविद्यालय बालाघाट, 11. ए.के.एस विश्वविद्यालय सतना, 12. शेज युनिवर्सिटी इंदौर, 13. शासकीय मानकुंवर बाई आर्ट्स एण्ड कॉमर्स महिला विश्वविद्यालय जबलपुर, 14. माता गूजरी महाविद्यालय जबलपुर, 15. शासकीय महाकौशल कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय जबलपुर, 16. सेट एल्योसिस इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी जबलपुर, राजशिला केन्द्र 17. म.प्र. राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल द्वारा कक्षा 9वीं हिन्दी पुस्तक में मूकमाटी में स्वाभिमान शीर्षक कविता के नाम से, 18. म.प्र. निजी विश्वविद्यालय नियमिक आयोग भोपाल द्वारा 08.01.19 को 32 निजी विश्वविद्यालय कुलपतियों को पाठ्यक्रम में शामिल किया। इस प्रकार 50 विश्वविद्यालयों में मूकमाटी महाकाव्य पाठ्यक्रम में शामिल है। मूकमाटी पर दो डीलिट्, 27 पी.एच.डी. 4 एम.फिल, 2. एम.एड., 5 एम.ए इस प्रकार 40 शोधार्थी शोध कर चुके हैं। मूकमाटी का अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। धीवरोदय गुरूदेव ने 1998 में लिखना शुरु किया था और 2001 में नेमावर में इसका समापन किया था।

प्रमुख विद्वान रहे शामिलः आयोजन में प्रमुख रूप से अभिराज राजेन्द्र मिश्र शिमला, प्रोफेसर जानकी प्रसाद द्विवेदी वाराणसी, शास्त्रि परिषद के अध्यक्ष डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत, श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर के अधिष्ठाता डॉ. जयकुमार जैन मुजफ्फरनगर, विद्वत् परिषद के अध्यक्ष प्रोफेसर अशोक कुमार वाराणसी, शास्त्रि परिषद के महामंत्री ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़, ब्र. विनोद भैया छतरपुर, डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन भारती बुरहानपुर, ब्र. जिनेश मलैया इंदौर, ब्र. मनीष भैया ज्ञान जहाजपुर, प्रतिष्ठाचार्य विनोद कुमार जैन रजवांस, पंडित महेश जैन

सतना, ब्र. अशोक भैया, डॉ. ब्र. अनिल जैन प्राचार्य जयपुर, पंडित सिद्धार्थ जैन सतना, डॉ. सुनील संचय ललितपुर, डॉ. सोनल कुमार जैन दिल्ली, डॉ. आशीष कुमार जैन सागर, डॉ. पंकज कुमार जैन इंदौर, डॉ. अमित जैन आकाश वाराणसी, डॉ. शैलेष जैन बांसवाडा, डॉ. आशीष जैन बम्होरी दमोह, पंडित विनोद शास्त्री गौना, पंडित अभिषेक शास्त्री सागर, पंडित शिखर जैन दिल्ली, प्रोफेसर संगीता मेहता इंदौर, ब्र. वीरेन्द्र कुमार जैन शास्त्री हीरापुर, पंडित संजीव जैन शास्त्री महरौनी, डॉ. नीलम जैन ललितपुर, पंडित सुदर्शन जैन पिण्डरई, पंडित हेमंत जैन शास्त्री आदि विद्वान प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। चर्चा-परिचर्चा में भाग लिया।

गणमान्य अतिथिगण हुए शामिलः इस मौके पर राजकुमार कुलपति अवधेशप्रताप विश्वविद्यालय रीवा, डॉ. भरत मिश्रा कुलपति ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, ए.के.एस विश्वविद्यालय के कुलपति बी.ए चौपड़े, रीवा विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति डॉ. हर्षवर्धन, डी.के राय प्राचार्य शासकीय महाविद्यालय सतना, डॉ. अशोक भौमिक कृषि वैज्ञानिक, माननीया प्रतिमा बागरी राज्यमंत्री मध्यप्रदेश सरकार, सतना विधायक सुरेन्द्र सिंह गहरवार, आर.के. श्रीवास्तव, आर के त्रिपाठी प्रति कुलपति, कवि चंद्रसेन जैन कवि अजय अहिंसा वाकल वास्तुविद राजेन्द्र जैन आदि अतिथिगण प्रमुख रूप से मंचासीन रहे।

विद्वानों का बहुमानः इस मौके पर महावीर दिगम्बर जैन पारमार्थिक संस्था एवं सकल जैन समाज द्वारा समागत विद्वानों का अंग वस्त्र, तिलक, माला, स्मृति चिह्न, साहित्य, प्रशस्ति पत्र आदि के द्वारा अध्यक्ष अरविंद सराफ, मंत्री अंशुल जैन, सिंघई जयकुमार जैन, पंडित महेश जैन, पंडित सिद्धार्थ कुमार जैन, संदीप जैन (एल.आई.सी), वर्धमान जैन आदि ने भावभीना बहुमान सम्मान किया। विद्वानों के अतिथि सत्कार की सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। आचार्य श्री समयसागर महाराज की समयबद्धता शास्त्रानुभाषित चर्या और कुशल संघ संचालन देखकर आचार्य श्री विद्यासागर महाराज की जीवन्त छवि मानस पटल पर बार-बार उभर रही थी।

विभिन्न कृतियों का भी हुआ विमोचनः आयोजन में दृष्टांत समुच्च, स्मरणांजलि (पंडित गुलाबचंद पुष्प), भारतीय डाक विभाग द्वारा जारी चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की डाक टिकट एवं डाक आवरण, सर्वोदयी संत की राष्ट्रीय देशना, मिरेकल, ध्यानोपदेश, लघु नयचक्र, परमागमसार, जैन विद्या ज्योतिष पंचाग, संस्कार पत्रिका (जनवरी अंक) आदि अनेक कृतियों का विमोचन किया गया।

6 फरवरी को मनाएं प्रथम समाधिमरण दिवसः निर्यापक श्रमण अभयसागर जी महाराज ने शास्त्रि परिषद एवं विद्वत् परिषद के विद्वानों से कहा कि आगामी 6 फरवरी को आचार्य श्री की प्रथम पुण्यतिथि आ रही है। दोनों परिषद के विद्वान इस अवसर पर अपनी सार्थकता भूमिका को निर्वाह करें। 18 फरवरी को भारत मंडपम दिल्ली में माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ समस्त सांसदों एवं मंत्री मंडल की उपस्थिति में आचार्य श्री का प्रथम समाधिदिवस मनाया जायेगा।

आचार्य श्री का अतुलनीय साहित्यिक अवदानः प्रोफेसर अभिराज राजेन्द्र मिश्र मूकमाटी के संस्कृत अनुवादक देश के शीर्षस्थ संस्कृत साहित्यकार और विश्वविख्यात संस्कृतकवि प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र (पूर्व कुलपति संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी) अपने इस मौके पर अपने संबोधन में कहा कि सभी कवि किसी नदी, झरने या सरोवर की तरह हैं, परन्तु आचार्य श्री विद्यासागर महाराज तो उन सभी का सङ्गम हैं। वे अप्रतिम काव्य प्रतिभा, अगाध वैदुष्य ओर दुर्लभ

चारित्र के महासागर थे। मूर्धन्य साहित्यकार प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र का यह अभिकथन आचार्य श्री के अतुलनीय साहित्यिक अवदान को प्रकट करता है।

उन्होंने कहा कि एकलव्य की भांति मृत्तिका की मूर्ति बनाकर मैंने आचार्य श्री विद्यासागर जी को पूजा। मुझे मेरी दक्षिणा भी मिल गयी, हमें तो सब कुछ अनूठा दिए ही मिल गया है। महाकवि प्रसाद की कामायनी जिस भारतीय दर्शन का वर्णन करती है वैसी ही मूकमाटी महाकाव्य है। अर्थववेद की तरह इसमें पृथिवी का वर्णन है। इस महाकाव्य का हिंदी अनुवाद सभी विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में रखा जाना चाहिए।

प्रत्येक भारतीय के लिए प्रणम्य है, मूकमाटीः कुलपति राजकुमार आचार्य आयोजन में अवधेश प्रताप विश्वविद्यालय रीवा के कुलपति राजकुमार आचार्य ने कहा कि मूकमाटी एक ऐसा ग्रंथ है जो प्रत्येक भारतीय के लिए प्रणम्य है। उन्होंने 2021 का जबलपुर का आचार्य श्री के साथ संस्मरण सुनाते हुए कहा कि जब आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से पूछा कि नई शिक्षा नीति में क्या होना चाहिए ? तो उन्होंने एक लाइन उत्तर दिया था कि - शिक्षा में भारत को पढ़ाइये।

आचार्य श्री की देन अविस्मरणीयः राज्यमंत्री प्रतिमा बागरे आयोजन में शामिल विशिष्ट अतिथि मध्यप्रदेश सरकार की राजधानी माननीय प्रतिमा बागरे ने कहा कि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का योगदान अविस्मरणीय है। उनके दिखाए पदचिह्नों पर हम सब सभी चलें।

यशस्वी व्रती कवि श्री चन्द्रसेन जी भोपाल का गुरुभक्ति से ओतप्रोत काव्यपाठ के श्रवण से सभी श्रोता गुरुभक्ति में निमग्न हो गये।

दस देशों से आए श्रद्धलुओं ने लिया आशीर्वादः इस मौके पर पुष्पकरणी पार्क सतना का नाम आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के नाम से रखने की घोषणा की गई। आयोजन में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज एवं आचार्य श्री समयसागर जी महाराज पूजन भक्ति संगीत के साथ के साथ ही गई जिसका मंत्रोच्चार आर्यिका ऋजुमती माताजी द्वारा किया गया। आयोजन में दस देशों से आए श्रद्धालुओं ने आचार्य श्री से आशीर्वाद प्राप्त किया। अफ्रीका से नारियल लेकर आए अजीत गांधी मुंबई ने नारियल भेंट किया। इसी नारियल से कमण्डलु तैयार होते हैं।

महत्वपूर्ण आलेख हुए प्रस्तुतः इस दौरान चार सत्रों में दोनों कृतियों से संर्भित शोधालेख विद्वानों द्वारा प्रस्तुत किए गए। जिसमें प्रोफेसर राजेन्द्र मिश्र ने मूकमृत्तिका, प्रोफेसर जानकी प्रसाद द्विवेदी वाराणसी ने धीवरोदय में माहेन्द्र व्याकरण का प्रयोग, डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत ने मूकमृत्तिका में जैन सिद्धांत, डॉ. जयकुमार जैन मुजफ्फरनगर ने मूकमृत्तिका के संस्कृत अनुवाद की विशेषताएं, डॉ. ब्र. धर्मेन्द्र भैया जयपुर ने मूकमृत्तिका में जीवन मूल्य, डॉ. सोनल कुमार जैन दिल्ली ने धीवरोदय की मूल्यात्मक मीमांसा, डॉ. आशीष जैन सागर ने मूकमृत्तिका में सूक्तियां, पंडित शिखर जैन दिल्ली ने चम्पूकाव्य की परंपरा में धीवरोदय का स्थान, पंडित विनोद जैन शास्त्री गौना धीवरोदय का उपजीव्य एवं कथा विस्तार विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। जिन पर चर्चा-परिचर्चा विद्वानों द्वारा की गयी।

मूकमाटी एनीमेशन फिल्म का किया गया प्रदर्शन : 11 जनवरी को रात्रि में 7.30 बजे से परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की कालजयी कृति मूकमाटी पर आधारित मूकमाटी एनीमेशन फिल्म को दिखाया गया जिसे देखने श्रद्धालु उमड़ पड़े। संगोष्ठी में समागत विद्वानों में भी फिल्म को देखा और इसे बहुत अच्छा कदम बताया।

कहानी

पुण्य अपना अपना

लेखकः 105 एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

दोपहर के दो बज रहे थे 9 अक्टूबर को जब सारी ओर चहल पहल थी और शरद पूर्णिमा की यह पुण्य बेला सिरपुर में धूमधाम से मनाई जा रही थी सभी लोग परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की गुण गान को अपनी जुबान पर ला रहे थे और वे यह तय कर रहे थे कि आज परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जीमहाराज का जन्म दिन है उनके जन्मदिन को हम विशेष तौर पर कैसे मनाये विशेष व्यवस्था की गई थी सुबह सुबह से ही लोग अपनी अपनी उत्साह उत्सव के लिये तैयार थे आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के जन्मदिन के लिए आज विशेष पूजन का भी निकलंक निकेतन मे उपक्रम जारी था आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज शौच के लिए आज जाने वाले थे और जब शौच के लिए जा रहे थे कतार बद्ध लोग निकलंक निकेतन से लेकर पवली के मंदिर के अंदर तक भी दो दो की पंक्तियों में महिला पुरुष बच्चे सभी प्रतीक्षा में खड़े हुए थे कि आचार्य विद्यासागर जी महाराज निकलेंगे तो हमें दर्शन हो जायेंगे हर जगह यह बात देखी जाती थी आचार्य श्री के दर्शन लोगों को प्रायः बाहर नहीं हो पाते थे लेकिन सिरपुर की यह व्यवस्था इतनी अच्छी थी कि आचार्य श्री के दर्शन लोगों को बाहर जब भी निकलते थे दिन में चार बार हो जाते थे सुबह जब गुरु भक्ति में आचार्य श्री बाहर निकालते थे तो दर्शन होते थे आहार के लिए निकलते थे तो दर्शन होते थे शौच के लिए जाते थे तब भी दर्शन होते थे और आचार्य श्री जब शाम के समय गुरुभक्ति के लिए बाहर निकलते थे तब भी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी के दर्शन सब लोगों को हुआ करते थे यह व्यवस्था देखकर की प्रायः प्रत्येक यात्री ने हमेशा सिरपुर की व्यवस्था की तारीफ की परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी आज शरद पूर्णिमा के दिन अपने उद्बोधन के लिए पूजन के उपरांत तैयार बैठे हुए थे तभी लोगों के बीच में यह अंदाज लगाया जा रहा था कि आज आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी के आहार किस चौके में होंगे कई लोग इस धारणा के साथ कि आचार्य श्री के लिए उनकी योजनाओं में जो भी सर्वाधिक दान देगा उसके यहां आहार हो सकते हें लेकिन यात्रीगण एक यात्री आपस में अपने यात्री से कह रहा था भाई आचार्य श्री के आहार तो उनके यहा होते हैं जो सर्वाधिक दान देते है दूसरे यात्री ने कहा ऐसा नहीं है मैं भी इसी मालेगांव का रहने वाला हूँ मैंने ऐसा भी देखा है जिनने कुछ भी दान नहीं दिया चिवरा के संतोष रोकडे उनके यहाँ भी आचार्य श्री के

आहार हो चुके है। तो इसलिये यह कहना व्यर्थ की बकवास सी लगती है।

आचार्य श्री उनके यहाँ आहार लेते हैं जिनके लिये दान देने की अधिक से अधिक घोषणा होती है परंतु आचार्य श्री के इस आहार दान की व्यवस्था पर लोग भले ही कुछ भी कहे पर मैं नहीं मानता हूँ आचार्य श्री की दृष्टि में सब समान हैं हाँ यह बात अवश्य है कि आहार के बाद आचार्य श्री की योजना के लिए लोग अपनी खुशी से कौन क्या देता है इसे कभी बाध्य नहीं किया जाता है किसी को यह नहीं कहा जाता है कि आप इतना दान दे दूसरा यात्री बोला आखिर यह बात उठती है तब पहले यात्री ने कहा यह इस बात के उठने का कारण कुछ विरोधी लोग होते हैं या कुछ फितरती लोग होते हैं जिन्हें सिर्फ यह एक फितरत रहती है कि किसी भी अच्छी व्यवस्था के लिए बदनाम कैसे किया जाए कुछ लोग ब्रह्मचारी तात्या जी पर भी उंगली उठाने लगते हैं कि तात्या जी जिस तरफ इशारा कर देते हैं आचार्य श्री उसी तरफ जाते हैं जबकि ऐसा नहीं है आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज हमेशा अपनी ही व्यवस्था अनुसार या अपने मन के अनुसार ही आहार के लिये किसी के यहां जाते हैं।

अब कुछ लोगों का यह भी एक कहना है पहले यात्री ने कहा कि आचार्य श्री आज कल कई घरों में जा नहीं रहे है तो दूसरे यात्री ने कहा नहीं सबके यहां जा रहे हैं पर बात यह है मैं मालेगांव का रहने वाला हूँ जहाँ सीढ़ियां है आचार्य श्री के स्वास्थ्य की दृष्टि से सीढ़ियों पर आचार्य श्री ऊपर नहीं चढ़ पाते हैं उनकी अनुकूलता नहीं है उमर और स्वास्थ्य दोनों को देखकर के जहां अधिक सीढी होती है वहां पर आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी आहार के लिए नहीं जाते हैं लेकिन तात्या जी ने किसी भी चौके को बंद नहीं किया है उन्होंने तो यह एक व्यवस्था बताई है कि जिसके पास ज्यादा सीढ़ियां हो वो चौका नीचे लगा सकते हैं और आहार व्यवस्था किसी भी प्रकार से भंग नहीं हो सकती है जब यही चर्चा चल रही थी तब वहीं से अंकुश पाटनी वाशिम का गुजरा और वहीं भी उनके साथ हो लिया यात्रियों की चर्चा में उसने कहा आज में आचार्य श्री के चरण का प्रक्षालन करूंगा पाद प्रक्षालन करूंगा तो उसी समय एक पदाधिकारी जो अपने आप को बहुत बड़ा पदाधिकारी मानते थे और चातुर्मास समिति पर उनका रौब भी था लेकिन उन्होंने आ करके कहा अंकुश तू छोटी मुंह बड़ी बातें करना कब छोड़ेगा वाशिम का तू भी है वाशिम का मैं भी हूँ अंकुश तेरे घर तेरी दुकान मेरी दुकान में देखता हूँ आज किसके यहा आचार्य श्री का पाद प्रक्षालन होता है वैसे तो आचार्य श्री पाद प्रक्षालन कराते भी नहीं है और हर जगह भी नहीं करते हैं लेकिन आज देखना इस बात के लिए है कि पाद प्रक्षालन किस बात को अंकुश ने कहा भाई साहब आज तो तुम शर्त ले लो भले आपने करोड़ों का दान दिया होगा मुझे मालूम है कि आपने एक करोड़ का कलश लिया है इसलिए आप सीमित प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकता हूं और आचार्य श्री के पास आपकी बहुत पहुँच भी है और मैंने तो अपनी ताकत के अनुसार ग्यारह हजार रूपये तक का भी दान अभी तक चातुर्मास के लिए नहीं दिया है फिर भी मेरा मन मेरी इच्छा इस बात के लिए मेरे अंदर की भावना कह रही है कि आज में आचार्य श्री के पाद प्रक्षालन का पुण्य अवश्य लूट लूँगा यह बात कहते हुए अंकुश पाटनी अपनी दुकान पर जाकर की पहुंच गया और वह वहां जाकर के अपने कार्य में लग गया परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज आहार के लिए उठे तो उनके आहार के मार्ग में अंकुश की दुकान तो पड़ती नहीं थी

इसलिये अंकुश जो है अपनी दुकान पर खड़े होकर के हाथ जोड़कर के खड़ा रहा आचार्य श्री की आहार व्यवस्था में किसी प्रकार की भीड़ न हो इसके लिए कुछ स्वयं सेवक एवं कुछ ब्रह्मचारी व्यवस्था के लिए साथ में आचार्य श्री के चल रहे थे ताकि कोई धक्का मुक्की भी ना हो जिससे कि आचार्य श्री के लिए किसी भी प्रकार की क्षति पहुँच सके लेकिन इसके लिए भी लोगों को बड़ा अलग ही आश्चर्य लगता था आचार्य श्री अपनी व्यवस्था को एक सुरक्षा भित्ति जैसी बना करके रखते हैं लेकिन इसमें उन्हें भूल हो जाती थी कि आचार्य श्री किसी प्रकार की भी अपनी सुरक्षा व्यवस्था नहीं बनाते है अपितु ब्रह्मचारी गण या स्वयं सेवक उनकी सुरक्षा की व्यवस्था बनाते रहते हैं आचार्य श्री के मार्ग में दर्शन में आज एक शिलान्यास भी हुआ था जिसके लिए साधिका आश्रम की आचार्य श्री जी योजना थी सिरपुर में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज 9 जुलाई 2022 में प्रवेश कर चुके थे चातुर्मास की स्थापना परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की 17 जुलाई को हुई थी 17 जुलाई की प्रभात बेला में बड़े-बड़े सृष्टि गण भी आचार्य श्री के पास बैठे थे और एक योजना भी बन रही थी उस योजना के अंतर्गत एक मंदिर भव्य निर्माण की योजना भी चली थी और जिसके लिए छब्बीस एकड़ जमीन का क्रय किया जा चुका था उसका सौदा भी हो चुका था।

आचार्य श्री के पास दानदाताओं ने 17 जुलाई को सब मिलाकर बीस करोड़ घोषणा कर दी ताकि यह जमीन की रजिस्ट्री व्यवस्थित तौर पर हो सके यह सब बात देखकर के जब अंकुश को यह बात कान में पड़ी तो भाई सोचने लगा मेरा कभी पुण्य नहीं जगेगा कि मैं आचार्य श्री के पाद प्रक्षालन किसी पर्व विशेष पर कर सकूं लेकिन यह बात चलती चली गई उसके मन में भावना थी वह रोज अंतरिक्ष पार्श्वनाथ भगवान के दर्शन खिड़की में से किया करता था और उसे समय भी एक भावना आती थी हे भगवान कब यह दरवाजा खुलेगा जब मैं भीतर से जाकर दर्शन करूंगा मेरे पापा ने भी दर्शन नहीं कर पाए ओर उनका तो स्वर्गवास भी हो गया और उन्होंने कभी भी भगवान पार्श्वनाथ के अपनी उम्र में भीतर से दर्शन नहीं किए जब कभी वो छोटे होंगे बचपन में किये हो तो ही उन्होंने कभी मुझे बताया नहीं कि मैं भगवान पार्श्वनाथ के दर्शन करने के लिए अंदर गया था वो तो हमेशा यह बात कहते रहते थे कि मेरे अपने कभी होशो हवास में भगवान अंतरिक्ष पार्श्वनाथ के दर्शन नहीं किए अंकुश जब अपने पिताजी से पूछा करता था पापा ये बताओ यहं मंदिर में ताला क्यू डला है तो उसके पिताजी बताया करते थे कि ये श्वेतांबर और दिगम्बर का झगड़ा था इस झगड़े में जब लेप की बात आई तो श्वेताम्बर लोग लेप करना चाहते थे और लेप कर रहे थे लेकिन मूर्ति का लेप जब चल रहा था तो मेरे पिताजी अर्थात् मेरे दादाजी जो है शुक्ला जी पाटनी जब आते थे तो मुझे बताते रहतेथे कि बेटा ये जो मंदिर का लेप जो भगवान का हो रहा है इसमें भगवान के श्वेतांबरी करने की पद्धति को अपनाने का प्रयास किया जा रहा है जिसे दिगंबर भरसक तोर पर रोकते रहे हें और इस बार भी रोका है तो रोकने के कारण से मूर्ति का जब लेप निकाला गया तो एक कमिश्नर झामरे थे उन झामरे की देख रेख में लेप होना शुरु हुआ था लेकिन झामरे ने जब मूर्ति का लेप उतरा तो यह देखा कि मूर्ति में कंदोरा और कचोटा नहीं है तो इस बात को लेकर के आपत्ति की और जब बनाने लगे लेप में कंदोरा कंचोटा तो उसे रुकवाया गया आखिरकार श्वेतांबरों ने कहा कि हमारा लेप करने का अधिकार है तो लेप नहीं

करने का भी हमारा अधिकार है और उन्होंने मूर्ति का लेप वहीं अधूरा छोड़कर के कहा हम अब आगे लेप नहीं करना चाहते हें और इस बात लेकर के झामरे साहब को किसी भी अपने विशेष कार्यवश जाना पड़ा तो उन्होंने मंदिर का ताला लगवा कर पुलिस स्टेशन पर चाबी दे दी और मंदिर का 13 अप्रैल 1981 में ताला लग गया तब से बेटा आज तक भी ताला लगा है।

अब देखो ताला खुलेगा तो मैं जरूर भगवान के भीतर से दर्शन करूंगा और तेरे लिये भी कराऊंगा तब से अंकुश पाटनी की यही एक ललक और संभावना दिखती थी कि कभी में जरूर भगवान अंतरिक्ष पार्श्वनाथ का भीतर से दर्शन करूंगा और अब तो सारी जनता में एक ही चर्चा हो रही थी कि आचार्य विद्यासागर जी महाराज और उनके साथ एलक सिद्धांतसागर जी भी हैं तो निश्चित तौर पर कोई बड़ा कार्य अवश्य होगा और इसको लेकर के सबके लिए उम्मीदें थी आचार्य श्री ने हथकरघा के उद्घाटन भी 11 अगस्त को करा दिया था चलचरखा हथकरघा केन्द्र और सहानुभूति केन्द्र दोनों की स्थापना और दोनों के कार्यक्रम शुरु हो चुके थे आज जब 9 अक्टूबर को सारी धूमधाम थी तो एक साधिका आश्रम का भी शिलान्यास कार्यक्रम प्रारंभ हो रहा था इसी प्रारंभ कार्यक्रम के बाद आचार्य श्री प्रवचन के लिए जाने वाले थे तो अंकुश को यह उम्मीद थी कि जब आचार्य श्री प्रवचन को जायेंगे तो शायद उस समय भी हम प्रयास करेंगे कि आचार्य श्री का पाद प्रक्षालन शरद पूर्णिमा के दिन अवश्य करें।

जब उनका अवतरण दिवस तो तब हम क्यों नहीं करे क्योंकि जिस सम्यक दृष्टि जीव ने सम्यक्त्व को प्राप्त किया है और आत्मा के कल्याण के मार्ग को सुनिश्चित कर लिया है ऐसे परम पुनीत परमात्मा के निकट होने वाले महान आचार्य श्री का अगर पाद प्रक्षालन मेरा घर मेरी दुकान के सामने और मेरी लगाई साधारण सी स्टील की थाली में यदि प्रक्षालन हो जायेगा आज में धन्य हो जाऊंगा लेकिन उसके लिये यह पता था कि मेरे आगे उनकी दुकान है जिन्हें बहुत लोग कहते हैं कि बहुत पैसे वाले हैं जिन्होंने कलश भी लिया है सब कुछ किया है तब आचार्य श्री जाने वाले थे प्रवचन के लिए उसी समय शिलान्यास समाप्त होने के बाद आचार्य श्री निकले तब अंकुश ने और उन करोड़पति श्रेष्ठी ने भी अपनी थाली रखी तो न तो अंकुश की थाली में आचार्य श्री ने पैर रखे और ना ही उन कलश लेने वाले श्रेष्ठी की थाली में रखे सीधे चले गये तब वह बोली क्या रे तू क्या सोचता है अंकुश तेरी थाली में आचार्य श्री पाद प्रक्षालन करेंगे पैर धुलवायेंगे नहीं जब मेरी थाली में नही धुलवाया तो तेरी थाली में कैसे धुलवायेंगे तब अंकुश ने कहा भावना भगवती शक्ति को प्रगट करने वाली होती है भावना बहुत शक्तिमान होती है मेरी भावना आज मुझे लग रहा है पूरी अवश्य होगी अगर आचार्य श्री इसी रास्ते से लौटे तो निश्चित तौर पर मैं फिर प्रयास करूंगा होगा तो ठीक नहीं होगा तो आपका पुण्य भी है मेरा पुण्य भी है। पुण्य अपना अपना होता है जब आचार्य श्री ने अपने रामकथा पर प्रवचन दिया आचार्य श्री ने उस रामकथा के प्रवचन के साथ साथ यह शुरुआत कर दी कि देखो प्रवचन में आचार्य श्री कहा कि जब भगवान राम के लिए पार होना था नदी को पार करना था तब केवट एक पुण्यशाली बताया था जिसकी नाव में बैठकर के भगवान राम उस पार गये थे सीता लक्ष्मण गये थे और जटायु जैसा उनका मित्र बना था ऐसी कहानी आचार्य श्री ने सुनाई तो अंकुश वहीं प्रवचन सुन रहा था आज उसने अपनी दुकान पर थोड़ी देर के लिए दूसरे को बिठालकर के छोड़ दी थी ओर

उसने कहा था आज में प्रवचन आचार्य श्री के अवश्य सुनूंगा क्योंकि आज आचार्य श्री अवतरण दिवस है और उनके अवतरण दिवस पर आचार्य श्री के प्रवचन में विशेष बात कोई जरूर आएगी उसे भी यह लगा कि सौभाग्य जिसका होता है वहीं गुरु के चरण थम जाते हैं भाग्य के आगे किसी का बस नहीं चलता है पुण्य जिसने कमाया होता है वह पुण्य जरूर फलवान होता है आज मेरे पुण्य की परीक्षा है कि मैं पवित्र भावना के साथ आचार्य के चरण को प्रक्षलित कराना चाहता हूँ और मेरे इस विश्वास के साथ मैं आज भी उम्मीद यही रखे हूं कि आचार्य श्री के पाद प्रक्षालन मेरे दरवाजे पर मेरी दुकान के सामने मेरी थाली में अवश्य ही होंगे यह भावना लेकर के वह प्रवचन के समाप्त होने के पूर्व ही उठकर अपनी दुकान के सामने चला गया और फिर उसने थाली रख दी उसकी थाली रखने के बाद उन सृष्टि ने भी अपनी थाली रख दी और आचार्य श्री बैंड बाजे के साथ प्रवचन से लौटकर के आ रहे थे तभी भीड़ बहुत थी क्योंकि आज आचार्य श्री का अवतरण दिवस था और अवतरण दिवस के कारण से भी लोग आते थे यद्यपि आचार्य श्री इस जन्मदिन को कभी भी मनाने का समर्थन नहीं करते थे अंकुश के लिए एक घटना सुनाई अंकुश प्रायः एलक सिद्धांतसागरजी के पास बेठा करता था उसे यह घटना भी याद आई कि आचार्य श्री जब मुक्तागिरि में थे तो मुक्तागिरि में उन्होंने ब्रह्मचारी सुमन जी को एक दिन बुलाया और यह कहा कि तुम यह शहनाईया क्यों बजवा रहे हो क्या तुम भी मिथ्यादृष्टि हो गए हो यह बात को सुनकर के अंकुश को यह बात लगी कि आचार्य श्री अवतरण दिवस पर कोई महत्त्व नहीं देते हैं लेकिन दिन ऐसा रविवार का होने से प्रवचन तो अवश्य ही अच्छे वाले देंगे और जब आचार्य श्री लौटकर के आ रहे थे जयकारा लग रहा था चारों तरफ से भीड़ भाड़ उमड़ रही थी धक्का मुक्की भी हो रही थी लेकिन उसने अपनी थाली को रखा एक वालेंटियर आया उसने कहा थाली हटा लो अंकुश ने कहा भाईसाहब आज हम जो आचार्य श्री का पाद प्रक्षालन करने की भावना रखते है आज के बाद में कभी नहीं करूँगा और यदि तुम जबरदस्ती हटा भी लोगे थाली में फिर भी रख लूंगा लेकिन आज तो मैं आचार्य श्री के सामने थाली रखूंगा उनको पैर धुलवाना नहीं धुलवाना उनकी इच्छा है और उसने थाली रख दी और थाली रखने के बाद आचार्य श्री जब पास में आये तो उसकी आँखों में से भी थोड़े से आंसू झलक रहे थे कि मेरे गुरुदेव आज हमारी भावना आज हमारी इज्जत आप रख ले और आप मेरे इस पात्र में अपने पवित्र पाद पंकज स्थापित कर दे तो वह देखा तो सचमुच में जब आचार्य श्री पास में आए तो उन्होंने अंकुश के निवेदन पर अपने दोनों पैर अंकुश के पात्र में रख दिए और अंकुश ने झलकती हुए आंखों के आंसू से भी और गरम नीर से आचार्य श्री का पाद प्रक्षालन किया और पाद प्रक्षालन करने के बाद जैसे ही आचार्य श्री आगे बढ़ तो उस करोड़पति अरबपति श्रेष्टी ने भी अपनी दुकान के सामने अपना पात्र रखा हुआ था लेकिन आचार्य श्री ने उसके पात्र में पैर नहीं रखे और सीधे चले गए जब सीधे चले गये उनके जाने के बाद उनकी एक परिवार की सदस्य कहती है अंकुश यह तो मेरे साथ अन्याय हुआ हैं मैंने एक करोड़ का कलश लिया और फिर भी आचार्य श्री ने मेरे पात्र में अपने पाद पंकज को नहीं रखा तेरे पात्र में रखा क्या बात है तो अंकुश के आँखों में से उसने आंसू पोछते हुए कहा दीदी ये तो अपने अपने पुण्य का फल है।

हमारे गौरव

गरिमामयी व्यक्तित्व ब्र. पं. गौरीलाल सिद्धान्तशास्त्री

ऐसे महान व्यक्तित्व अल्प ही हैं जिनके लौकिक जीवन के विषय में जानकारी न हो और उनका कार्य/सेवा ही यथार्थ परिचय हो। ब्र. पं. गौरीलाल जी शास्त्री को घटना इनके ही अंतर्गत है। इनका आरंभ से ही अध्ययन के प्रति लगाव था। तत्कालीन परिस्थितियां इनके अध्ययन में बाधक न बन सकी। कारण कि इन्होंने बनारस में रहकर ब्राह्मण विद्वानों से संस्कृत का अध्ययन किया अनंतर जैन बद्री तथा मढ़बद्री में रहकर जयधवला आदि ग्रंथों का स्वाध्याय किया।

सेवाकार्यः संस्कृत के अध्ययन के उपरान्त श्री गौरीलाल ने सर्वप्रथम मथुरा में दिगम्बर जैन महाविद्यालय की स्थापना कर उसे जैन शिक्षा का केन्द्र बनाया। पद्मावती परिषद की स्थापना कर पद्मावती पोरवाल नामक पत्र निकाला। वे स्वयं इस पत्र के सम्पादक बने, कुछ समय पश्चात शास्त्री परिषद की स्थापना की। इनके सम्पादकत्व में जैन सिद्धांत पत्र का भी प्रकाशन आरंभ हुआ।

योग्यता एवं व्रताचरणः पंडित जी विद्वर्य तो थे ही। उनकी विद्वत्ता से प्रभावित हो उन्हें धर्म दिवाकर, जाति भूषण आदि पदवियों से सम्मानित किया गया था।

आपने जीवन का सच्चे अर्थों में पोषण किया। अपने ज्ञान की सुगन्ध के साथ चारित्र भी जीवन में धारण किया। आपने सात प्रतिमा के व्रत लेकर इस मानव तन को चिर पवित्र बनाने का प्रयास किया।

अंत में आत्मसाधना में तत्पर रहते हुए विक्रम संवत् 1997 में आपका स्वर्गवास समता परिणामों के साथ हुआ।

कविता

धर्म हृदय का प्रक्षालन हो

डॉ निर्मल शास्त्री, टीकमगढ़

आदिनाथ प्रभु प्रथम तीर्थंकर, षट कर्मों के उपदेश थे।
जिनधर्मी राजा अनुयायी सब, शाकाहार के संदेशक थे॥
भरत चक्रवर्ती राजा थे जिनसे, जो भारत नाम पड़ा प्यारा।
हा मा धिक् की न्याय व्यवस्था, चिंतन शुभ सबसे न्यारा।
बहुसंख्यक थे जिनधर्मी भाई, न्याय नीति शुभ प्रीत रही।
धर्म और धर्मायतन अतिभारी, उपदेश धर्म सब नीत रही॥
मंदिर खूब रहे जिन प्रतिमा भी, अवशेष वही तो मिलते हैं।
पर बहुमत के आगे हारे हम भी, अब कुछ ना कह सकते हैं॥
सब मत मिलकर एक रहे तो, संघ शक्ति का पालन हो।
साधर्मी वात्सल्य हृदय से ही, धर्म हृदय का प्रक्षालन हो॥

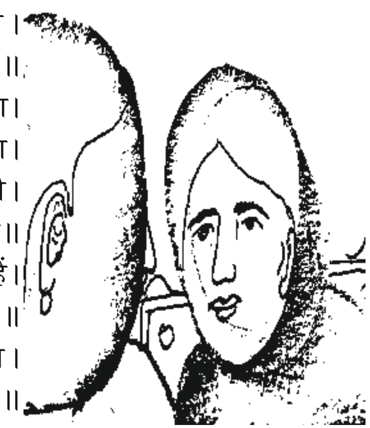

क्रमांक-47 वरिष्ठ नागरिक

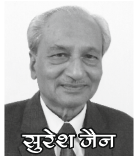

जीवन छोटा है, उसे खूबसूरत बनायें

आपने किसी दरिया (नदी) को देखा है ? जब तक इसमें पानी बहता रहता है, एक ताजगी बनी रहती है। बहते हुए यह अपने अंदर कितनी ही जिंदगिया पालता है, यदि इसका पानी कही खड़ा हो जाए तो कुछ ही दिनों में बदबू मारने लगता है, फिर यह दरिया न रहकर नाला बन जाता है। ऐसे में कोई इसके पास आना तो क्या, खड़े भी नहीं होना चाहेगा। हम जिंदगी को भी किसी बहते दरिया की तरह ही देख सकते हैं।

जब तक इंसान खुद में सीखने के जज्बे को कायम रखता है, जिंदगी में खानी बनी रहती है। यह सीखने की ललक यदि जवानी से ही कायम रहे, तो बुजुर्गावस्था में भी इसमें बासीपन नहीं आता। इंसान बचपन से बुढ़ापे तक विद्यार्थी बना रह सकता है, लेकिन जो लोग इस जज्बे का त्याग कर देते हैं, वह जिन्दगी की खूबसूरती से दूर होते जाते हैं।

जिंदगी के बढ़ते रहने के लिए कुछ सीखने की ललक होनी बहुत जरूरी है। लेकिन जब लोग बुजुर्गावस्था की तरफ बढ़ने लगते हैं, तो उनमें यह भावना आ जाती है कि अब सीखकर क्या करना है। सीखने के लिए अब बचा ही क्या है। यह भावना उस समय देखी जा सकती है, जब वे दूसरों को उम्र और अनुभव में कम होने और अपने को ज्यादा होने का अहसास दिलाते हैं। एक बुजुर्ग सहित्यकार श्री जसवंत सिंह कंवल ने एक बार कहा था कि मेरी तंदरूस्ती और बुजुर्गावस्था में चेतन रहने का राज मेरा सदैव सीखते रहने की मानसिकता है। आप भी खुद का आंकलन करिए और देखिए कहीं आपको भी तो बदलने की आवश्यकता नहीं।

कुछ अलग तरह से और सकारात्मक सोचें। जब जिन्दगी रोने के सौ अवसर उपलब्ध कराती है, तो हसने के हजार मौके भी देती है।

आपके पास जो कुछ भी है उसके प्रति ईश्वर को धन्यवाद दीजिए। रचनात्मक बने कुछ अलग तरह से और सकारात्मक सोचें। जब जिन्दगी रोने के सौ अवसर उपलब्ध कराती है, तो हसने के हजार मौके भी देती है। जीवन एक रहस्य है सुलझाने का। उसे समस्या की तरह लेकर समाधान खोजने में जुटे रहें।

कुछ काम की बातें इन पर ध्यान दें।

- कंजूस व्यक्ति की संगत से बचो।
- धन का होना इसलिये जरूरी है, क्योंकि कई बार केवल धन ही काम आता है।
- यदि दृढ़ मित्रता चाहते हो, तो मित्र से बहस करना, उधार लेना-देना और उसकी पत्नी से ज्यादा बातचीत करना छोड़ दो। यही तीन बातें बिगाड़ पैदा करती हैं।
- दूसरों के अनुभवों से लाभ उठाने वाला बुद्धिमान है।
- वास्तविक शक्ति शाली पुरुष कसम नहीं खाया करते।
- जो दुश्मन रह चुका है वह मित्र नहीं हो सकता।
- यदि तुम अपने रहस्य को किसी शत्रु से छिपाएं रखना चाहते हो तो, किसी मित्र को भी उसका उल्लेख मत करो।
- यदि इन थोड़ी सी बातों का ध्यान रखेगे तो अपने जीवन को खूबसूरत बनायेंगे।

प्रतिष्ठा पितामह का जन्म शताब्दी महोत्सव

❋ सुनील संचय, ललितपुर ❋

पं. गुलाबचन्द्र जी पुष्प सर्वमान्य प्रतिष्ठाचार्य थे, आपने अपनी अनुभव पूंजी निस्पृह भाव से प्रतिष्ठारत्नाकर ग्रंथ के माध्यम से प्रदत्तकर प्रतिष्ठा विधि की विकृत्तियों का निरसन करके प्रतिष्ठा पितामह के नाम से प्रसिद्ध हुए। आपने ककरवाहा जैसे साधन विहीन ग्राम में जन्म लेकर पिता श्री पं. मन्नूलाल जी प्रतिष्ठाचार्य से प्रतिष्ठा अनुष्ठान विधि, चिकित्सा एवं ज्योतिष की सौगात प्राप्त करके अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त की।

सर्वमान्य- पं. पुष्प जी आगमोक्त प्रतिष्ठाविधि, अनुशासन, समयबद्धता, निष्पृह वृत्ति एवं मांत्रिक शुद्धि के लिए विख्यात थे। आपने कभी कोई समझौता नहीं किया। आपने तत्कालीन सभी आचार्य, मुनि श्री एवं आर्यिका माता जी के साथ अनुष्ठान एवं पंचकल्याणक कराने का गौरव प्राप्त करके द्विशताधिक पंचकल्याणक कराकर कीर्तिमान स्थापित किया है।

संयोजना- वर्ष 2025 की 5 जनवरी को आपकी 10वीं पुण्यतिथि एवं जन्म शताब्दी वर्ष था। आपकी स्मृति को अक्षुण्ण बनाने के लिए देश की शीर्षस्थ विद्वत् संस्थाओं, प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़ समिति, श्री नवागढ़ गुरुकुलम् एवं पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प' स्मृति ट्रस्ट ने स्मरणांजलि ग्रंथ लोकार्पित करने की संयोजना की।

इस ग्रंथ में आचार्यों/मुनियों के शुभाशीष, व्यक्तित्व, कृतित्व, संस्मरण, नवागढ़ के अन्वेषण से वर्तमान तक की विकास यात्रा के साथ विशेष जिज्ञासा समाधान नियोजित करके इसे सर्वोपयोगी बनाया है।

विनयांजलि- 5 जनवरी 2025 को आपके समाधि स्थल पंचबालयति मंदिर इंदौर में आचार्य श्री उदारसागर महाराज के ससंघ सान्निध्य में आयोजित विनयांजलि सभा का नवागढ़ गुरुकुलम् के छात्रों के मंगलाचरण तथा आमंत्रित विद्वानों एवं श्रेष्ठियों द्वारा दीप प्रज्वलन करके शुभारंभ किया गया।

देश के ख्याति प्राप्त विद्वानों में डॉ. नलिन के शास्त्री दिल्ली, डॉ. अनुपम जैन, डॉ. संगीता मेहता, डॉ. भरत शास्त्री, डॉ. बाहुबली शास्त्री, डॉ. समता अनुराग जैन, डॉ. शुभि जैन इंदौर, डॉ. मुकेश जैन दिल्ली, डॉ. पंकज जैन भोपाल, ब्र. सुरेश मलैया, ब्र. जिनेश मलैया, ब्र. नितिन, ब्र. राजेश टड़ा, ब्र. सुनीता दीदी बांसा, डॉ. ब्र. समता मारौरा, ब्र. शशि दीदी टीकमगढ़, पं. विनोद जी रजवांस, पं. सुरेश मारौरा, पं. प्रदीप शास्त्री, पं. राजीव निराला, पं. कमलकुमार लार ने पुष्प जी के अनुशासन कठोर दिनचर्या, आगम के प्रति दृढ़ श्रद्धान, संत शिरोमणि आचार्य श्री से व्रत ग्रहण से समाधि तक की साधना, निष्पृह वृत्ति, पंचकल्याणकों में आई शिथिलता, प्रमाद, रूढ़ियों, मंत्रीय कार्यक्रमों में अतिरेक पर अंकुश लगाकर समयबद्धता, पात्र चयन की योग्यता, अनुष्ठान में शुद्धि तथा आगमोक्त क्रियाओं की परिपालना का विवेचन करते हुए अपने-अपने संस्मरणों को समाहितकर विनयांजलि समर्पित की।

उद्बोधन- मुनि श्री उपशांत सागर महाराज ने कहा मुझे ब्रह्मचर्य अवस्था में पुष्प जी द्वारा दी गयी प्रेरणा, आगम निष्ठचर्या करने का उत्साहवर्धन प्राप्त होने से श्रमणोचित चर्या का सम्यक् मार्ग प्रशस्त हुआ। आपके द्वारा कराये गये अनुष्ठानों से मुझ जैसे कई श्रावकों को सम्यक् चर्या का निर्देशन प्राप्त होता था। श्रावकों को देव-शास्त्र-गुरु के प्रति समर्पित होकर गृहस्थ धर्म के परिपालन की मंगल प्रेरणा प्राप्त होती थी। आज में इस अवसर पर उनके द्वारा किए गये उपकारों को स्मरण कर अभिभूत हूँ।

आचार्य श्री उदारसागर महाराज ने 'पुष्प' जी के प्रति उद्गार व्यक्त करके कहा पुष्प जी तत्कालीन सर्वश्रेष्ठ प्रतिष्ठाचार्य थे, आपकी दृढ़ता, आगमोक्त क्रिया विधि, कठोर अनुशासन, शुद्धता एवं निष्ठा सभी नवोदित ब्रह्मचारियों , विद्वानों एवं श्रावकों के लिए अनुकरणीय है।

आपने खुरई नगर में मुनि श्री क्षमासागर महाराज के सान्निध्य में होने वाले गजरथ महोत्सव में होने वाली प्राकृतिक प्रतिकूलता का स्मरण करते हुए कहा, पुष्प जी को विशेष मंत्र सिद्धि थी। उनके अनुष्ठानों में कई बार दैवीय शक्तियों का कौतुक एवं पुष्प जी द्वारा उनका प्रतिकार देखने को मिला।

वर्तमान में प्रदर्शन की होड़ में मांगलिक अनुष्ठान विधि में शिथिलता, प्रमाद, जल्दबाजी के दुष्परिणाम भी देखने में आ रहे हैं, 'पुष्प' जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि तभी होगी जब हम उनके द्वारा बताए गये मार्ग का अनुसरण करें ।

पुष्प परिवार को आशीर्वाद देते हुए कहा आपने पुष्प जी की परम्परा का संरक्षण करते हुए आदर्श प्रस्तुत किया है, आगामी पीढ़ियों को भी पुष्प जी की विरासत सौंपकर अपने कर्तव्य का पालन करना है। डॉ. प्रदीप जी छतरपुर ने सभी का आभार व्यक्त किया।

लोकार्पण- संध्या कालीन वेत्ता में संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज के प्रभावक शिष्य गुणायतन प्रणेता मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज के साथ मुनि श्री निर्वेगसागर, मुनि श्री संधानसागर एवं क्षुल्लक महाराजों के पावन सान्निध्य में आयोजित जिज्ञासा समाधान में गुरुकुलम् के छात्रों द्वारा मंगलाचरण किया गया। पूज्य प्रमाणसागर ने 5 जनवरी के सत्र को पुष्प जी के लिए समर्पित स्मरणांजलि ग्रंथ लोकार्पण के लिए घोषित करते हुए कहा आज का दिन महामनीषी, सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वमान्य प्रतिष्ठाचार्य, व्रती श्रावक, गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त कर समाधिपूर्वक जीवन समापन करने वाले आदर्श व्यक्तित्व के लिए समर्पित है ।

नवागढ़ संरक्षण- पुष्प जी परिवार की पौत्री अनुपमा जैन द्वारा नवागढ़ की विरासत के संरक्षण में पुष्प परिवार के पौत्र-पौत्रियों को क्या करना चाहिए ? जिज्ञासा के समाधान में मुनि श्री ने कहा- नवागढ़ एक वीरान सा क्षेत्र था, गुरुदेव के साथ हम भटककर पहुँचे थे 1986 में, उस समय नवागढ़ साधन विहीन था आज नवागढ़ ने नया रूप प्राप्त किया है, इसका पूरा श्रेय जयनिशांत को जाता है

इससे संदेश मिलता है यदि कोई व्यक्ति बीड़ा उठाये तो उनका परिणाम निकलता है, संस्कृति का संरक्षण होता है।

डॉ. नलिन के शास्त्री के ओजपूर्ण एवं विशिष्ट शब्दावलि में विनयांजलि समर्पित करते हुए मुनि श्री के पादमूल की वंदना करके युगपुरुष पुष्प जी के अनुभव उत्कृष्ट श्रावकोचित चर्या आगम निष्ठा एवं अन्तर्वेदना में स्थिरता की गाथा की अधिव्यक्ति करने वाली स्मरणांजलि आगामी पीढ़ी के लिए प्रेरणा, विद्वानों के लिए अनुकरणीय एवं समाज के लिए मार्ग निर्देशिका बताया। इसके प्रत्येक शब्द में अनुभव जीवन्तता का संदेश, पुष्प जी की जनकल्याणी जगकल्याणी विचारधारा, गुरुओं के प्रति समर्पण की भावना प्रतिलक्षित है।

इस कृति का लोकार्पण कार्यक्रम जैन धर्म एवं दर्शन, तत्त्वविद्या जैसे ग्रंथों के सृजेता मुनि श्री प्रमाणसागर जी के अशीर्वाद से उनके मध्य स्वयं ही महत्त्वपूर्ण है। मुनि श्री वीतरागता के पथिक, निरामय, नवयुग की चेतना के अक्षय स्रोत हैं। आपने जिनशासन की अक्षुण्णता दर्शाने वाली गुणायतन की परिकल्पना और साकारता से अतिशय प्रभावना करके उपकृत किया है।

आपने प्रतिष्ठा के साथ सांस्कृतिक एवं धार्मिक विरासत को संरक्षित करने वाले महापुरुष को आशीर्वाद देते हुए इन्हीं के अनुकरण करने वाले पुत्र ब्र. जय निशांत को धर्म एवं संस्कृति का संरक्षण करने की प्रेरणा देकर अनुगृहीत किया है।

पुष्प जी के चतुर्थ पुत्र ब्र. जयकुमार निशांत ने सफल संचालन करते हुए मुनि श्री से उनके संस्मरण हेतु निवेदन पर मुनि श्री ने कहा पं. गुलाबचन्द्र जी पुष्प जैन जगत् की महान् विभूति रहे हैं । प्रतिष्ठा के क्षेत्र में उन्होंने कीर्तिमान स्थापित किया है। प्रतिष्ठाचार्य होने के साथ आप एक आदर्शव्रती भी थे। आदर्श जीवन के साथ उन्होंने व्रतों को संयोजित कर संल्लेखना पूर्वक समाधि करने का सौभाग्य पाया है।

आज का प्रसंग संस्कृति के संरक्षण का विशेष क्षण है उनके जन्म शताब्दी के अवसर पर उनके होनहार पुत्र जय भाई ने भगीरथ प्रयत्नकर **स्मरणांजलि** की संयोजना करके अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हुए पिताजी के यश को चतुर्दिक में बढ़ाते हुए पितृ ऋण को चुकाने का पुरुषार्थ किया है। आपने आचार, विचार एवं व्यवहार से उनके यश को विस्तारित करके आदर्श स्थापित किया है।

जय भाई ने पूरा व्रती जीवन जीते हुए संस्कृति एवं जिनवाणी का संरक्षण करके पिताजी के प्रति स्मरणांजलि समर्पित करके कर्तव्य का पालन किया है, जो अनुकरणीय है । आयोजन में आये सभी जनों को बहुत-बहुत आशीर्वाद।

इस अवसर पर नवागढ़ क्षेत्र के श्री वीरचन्द्र जी, अनंदीलाल जी, पं. इन्द्रकुमार, प्रसन्न कुमार, प्रकाशचन्द्र जी पुष्प परिवार के सभी पुत्र इंजी शिखर चंद, डॉ उत्तमचंद जी, राजकुमार जी, ब्र. जय निशांत, डॉ. प्रदीप कुमार जी तथा समस्त पुत्र वधु पौत्र-प्रपौत्र उपस्थित थे। सभी ने मुनि श्री के प्रति समर्पित होकर आभार व्यक्त किया।

धर्म रोग- सोरायसिस कारण व नियत्रंण उपाय

❊ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ❊

यह आम और दीर्घकालिक त्वचा रोग है यह त्वचा पर लालिमा और पपड़ीदार धब्बों का कारण बनता है। यह किसी भी उम्र में हो सकता है लेकिन अक्सर 20 से 30 वर्ष में स्त्री पुरुष किसी को भी हो सकता है। यह एक गंभीर चर्म रोग है और उसका समय पर इलाज जरूरी है वरना यह फैलता है।

लक्षण: सोरायसिस जिसे विचर्चिका भी कहते हैं एक स्व प्रतिरक्षित (आटो इम्यून) स्थिति है जिसमें रोग आरंभ होने के पहले रोग वाली जगह में खुजली होती है जो त्वचा में सूजन का कारण बनती है, सूजन पुरानी हो जाती है। त्वचा पर लाल-लाल गोल-गोल निशान पड़ जाते हें जिन पर सफेद-सफेद चमकदार चिपके हुए छिछड़े होते हैं। पहले ये निशान छोटे होते व धीरे धीरे बढ़कर गोल हो जाते है व इनके छिछड़े उतरते है त्वचा पर खून निकल आता है दाने निकल आते हैं। प्रभावित भागों में खुजली सूखापन दरारें महसूस होती है। यह रोग प्रायः, घुटनों, कोहनी, धड़, खोपड़ी टांगों के पीछे आस-पास से शुरु होता है। इसके कारण जोड़ो में दर्द, खुजली तथा जलन होती है व दरारें महसूस होती है तो बहुत दर्दनाक होते हें।

कारण: 1. यह रोग संभवतः वंशानुगत, गठिया, वात-व्याधि, कब्जियत शरीर में विटामिन डी की कमी, ऋतु परिवर्तन से चमचमाती तेज धूप में रहना।

2. प्रदूषण युक्त वातावरण, तंग गलियों में शुद्ध हवा का अभाव, गंदगी, तेज गंध युक्त केमिकल उद्योग परिसरों में काम करने से प्रतिरोधक क्षमता में कमी आदि।

3. शरीर में जैव पदार्थो के कार्य में गड़बड़ी आ जाने से दूषित पदार्थ शरीर की त्वचा व अन्य द्वार या श्लैष्मिक झिल्ली को भेदकर रोग उत्पन्न करते हैं।

परहेज: 1. प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ, डेयरी उत्पाद, शर्करायुक्त स्नेक्स, बाजारू पेय व तले पदार्थों का अधिक मात्रा में उपयोग, गरिष्ठ तथा मसालेदार भोजन, चाय, काफी का अत्याधिक मात्रा में उपयोग करना, अधिक मात्रा में मादक पदार्थ का सेवन नहीं करना।

2. ऋतु परिवर्तन गर्मियों के बाद शीत ऋतु में यह रोग उभर आता है अतः सुरक्षा अपनाना।

सावधानियाँ: 1. अच्छी तरह से नहाने के बाद साफ नरम तौलियो से शरीर नमी रहित रखना प्रभावित भाग को कुनकुने पानी से साफ करके इसके बाद गर्म करके ओलिव आइल को ठंडा करके उसे रुई के फोहे से साफ करके लगाने से राहत मिलती है।

2. उपयोग में लाये जाने वाले कपड़े कंधी तेल को दूसरे से सुरक्षित रखना, अच्छी गुणवत्ता के साबुन का उपयोग करना।

विशेष: 1. यह संक्रामक रोग नहीं है अतः दूसरे व्यक्तियों में फैलता नहीं है।

2. किसी भी प्रकार की क्रीम , मलहम, लोशन आदि का उपयोग प्रभावी नहीं है अतः बचे।

3. शरीर के अंदर लम्बे समय तक रहने वाली सूजन हृदय और रक्त वाहिकाओं को प्रभावित कर सकती है जिससे हृदय रोग या स्ट्रोक होने का खतरा बना रहता है।

उपचार- अन्य चिकित्सा पद्धति अधिक प्रभावी नहीं है अतः होम्योपैथी पद्धति द्वारा

इलाज से रोग शरीर से धीरे-धीरे बाहर निकलकर पूरी तरह से ठीक हो जाता है। प्रमुख औषधियों सल्फर, सोराइनम, आर्सेनिक एल्व, आर्सेनिक ब्रोमाइड, प्रेट्रोलियम, ग्रेफाइटिस, साइक्यूटा, रसटॉक्स, रेडियम ब्रोम आदि। शुद्ध बायोकेमिक औषधियों में कैलि सल्फ, कैलिफास, कैलकेरिया फास, नेट्रम सल्फ, नेट्रम म्यूर आदि का उपयोग किया जाता है। उक्त औषधियों की मात्र जानकारी दी गई है उपचार के पूर्व अनुभवी कुशल चिकित्सक की सलाह व देख रेख में उपचार कराना चाहिये।

इस रोग में त्वचा में जलन खुजली दर्द के साथ ही नींद में बाधा उत्पन्न होना, ध्यान केन्द्रित न कर पाना मुश्किल बनता है व एक बार रोग होने पर पुनः बार-बार हो सकता है। अतः समय पर अनुभवी चिकित्सक से उपचार, सावधानियां से नियंत्रण करके नव वर्ष 2025 में जीवन को नई दिशा नई उड़ान देवे व जागरूकता पूर्वक अपनी उचित जीवन शैली को अपनाते हुए स्वस्थ रहें।

कविता

नमामि आचार्य श्री विद्यासागर नमः ।

❊ नकुल चंद्रकांत फुलाड़ी अमरावती ❊

प्रथम समाधि दिवस पर मैं रखता हुँ एक राज
दुनिया की संत परंपरा में विद्यासागर है ताज
उसने सिखाया कैसे मरना, जीना एक हीं बार
शिक्षा प्रणाली में अभ्यागत है, मुकमाटी सुविचार
विद्याधर से विद्यासागर है समयसार का सार
मुकमाटी से तुने हमें ज्ञान है पिलाया
हाईकू से भी हमें आपने अवगत है कराया
अमानुष बनते बनते मानुष है बनाया
दिया इतना प्रेम तुने, तू वीर का दुल्हारा
जग जग गुंज उठा है नारा तू सबसे न्यारा
मिट्टी पे रहती है नजर तेरी, आँख कभी ना उठती
आँस लगाते बहतें नयना, आशीष को तरसती
जिस पथ से चलते गुरुवर उस पथ से मिलती मुक्ति
न जन में आप विराजों, सृष्टि सुमंगल होगी
आचरण में नाम है तेरा, आगम का तू है ज्ञाता
नियमों के सरताल हो तुम हो, धर्म विधाता
चांदी सी है काया तेरी जीवन में सहजता
तु ही मेरा प्रभू है, तुही मुझे सुहाता
विद्यासागर मेरे तुम अहिंसा की गाथा
मुनियों का संघ तुने एक संघ है निभाया
नियमसार को दीक्षा देकर निर्यापक बनाया
प्रमाणसागर हमको देकर शंका को भगाया
चाँद से भी प्यारा तुने सुधारस पाया
आओ विद्यासागर बाबा तेरी चांदी सी काया
ज्ञानसूर्य के तेजोमय तुम संस्कृत तुम्हारी विद्वता
प्राकृत से तुम रसपान करें समयसार में समरसता
तत्वार्थ अंगोपांग तुम्हारे, स्वभाव ने पाई सरलता
तुम ना हो सिर्फ अध्यात्म के सागर
हो तुम भारत उत्थान कि गागर
गौशाला को तुमने पुरुस्कृत किया
भारत रत्न को आप हमारे वंदन करता हूँ
आचार्य श्री विद्यासागर महाराज

हास्य तरंग

1. मोटी लड़की - डॉक्टर साहब मेरा वजन बढ़ता जा रहा है। डॉ. आपको एक कसरत करना पड़ेगी, लड़की- मुझे बैठने के बाद खड़े होने में परेशानी होती है वह शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती हूँ आप मुझे कसरत करने की सलाह दे रहे है। डॉ.- कसरत अत्यंत सरल है बताईये क्या करना है, आपको सिर्फ गर्दन हिलानी है दाये से बाये जब कोई भोजन करने को कहे।

2. महिला- दुकानदार से- मुझे एक किलो लाल मिर्च देना, दुकानदार नौकर से हरी मिर्च दे दे। महिला गुस्से से बोली मुझे तो लाल मिर्च चाहिए और आप बार-बार नौकर से हरी मिर्च देने को कह रहे है। दुकानदार- यह मेरे नौकर का नाम है।

3. डॉक्टर ने फोन सुनकर अपनी पत्नी को जगाते हुए कहा फोन करने वाले व्यक्ति की तबियत बहुत खराब है बार-बार कह रहा है तुमसे मिले बिना जीवित नही रह सकता। पत्नी बुद्धु कही केयह फोन तुम्हारी लड़की केलिए है।

4. मंत्री जी पागल खाने का निरीक्षण करने गये उन्होंने एक पागल व्यक्ति को सीने से फोटो लगाये देखा तो पूंछा क्या बात है। पागल ने फोटो दिखाते हुए कहा इस लडकी के साथ मेरी शादी न हो पाने से मैं पागल हो गया हूँ। मंत्री जी ने अन्य कमरों में मुलाकात में एक पागल व्यक्ति फोटो लिए उदास बैठा था। मंत्री ने पूछा तो उसने फोटो बताते हुए कहा इससे मेरी शादी होने के बाद पागल हो गया हूँ। मंत्री फोटो देखकर आश्चर्य में पड़ गये क्योंकि दोनों फोटो एक ही लड़की की थी।

5. भावित की परीक्षा कॉपी में नोट लगाया जिसे भावित के पढ़ने में समझ नहीं आने पर टीचर मेडम से पूछा कि आपने क्या लिखा टीचर ने कहा सुन्दर राइटिंग लिखो।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

पाक कला

स्वादिष्ट नूडल्स

✻ सामग्री ✻

चावल का आटा 1 कटोरी

नमक स्वादानुसार

पानी

शिमला मिर्च, लाल, हरी, पीली 1 कटोरी

बीन्स 1/2 कटोरी सब्जियों को लंबा कटकर लेना है।

✻ मसाले ✻

लाल मिर्च की पेस्ट 3 चम्मच, कश्मीरी लाल मिर्च साबुत उसे गर्म पानी में भिगायेंगे फिर पानी अलग करके मिक्सी में पीसे फिर छान कर उसमें नमक और नींबू रस डालेंगे।

नींबू का रस- 1 चम्मच

काली मिर्च 1/4 चम्मच

नमक- सौंठ - 1 चम्मच

✻ विधि ✻

चावल के आटे में नमक डालकर आटा गूंथेगे। फिर गैस पर कढ़ाई रखेंगे उसमें पानी डालेंगे और बड़ा छलनी उल्टा रखेंगे या स्टीमर में स्टीम की प्लेट रखेंगे। फिर चावल के आटे को सेव (भुजिया) बनाने की मशीन में डालकर सेव की तरह स्टीमर पर निकाले और ढंक दे। और 5-7 मिनट स्टीम करें फिर निकाल कर ठंडा कर लें।

एक कढ़ाई में तेल रखें और उसमें बीन्स डालें और पकायें फिर शिमला मिर्च डालें उसे भी पकायें अब इसमें मिर्ची का पेस्ट डालिये नींबू रस, नमक, काली मिर्च पाउडर, सौंठ पाउडर डालें अच्छे से हिलायें व मिलाये फिर नूडल्स डालकर मिक्स करें इसे एक बाउल में निकालकर परोसें। तैयार है नूडल्स।

बाल कहानी

डी.जे. से मौत

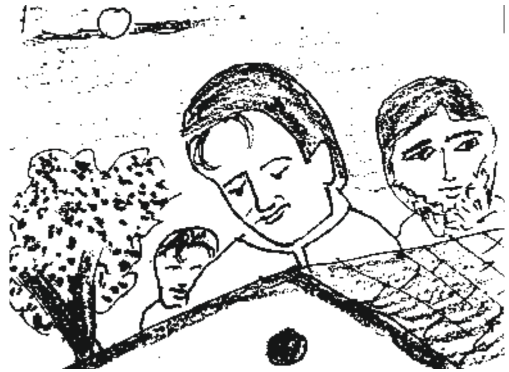

औरंगाबाद शहर के राजापेट पर गणेशोत्सव का जुलूस रूका हुआ था। उपेन्द्र बाधे के पिताजी इन्द्रजीत बाधे का स्वास्थ्य बिगड़ रहा था। डीजे के कारण से सब खिडकियाँ बंद कर दी थी। फिर भी खिड़की की काँच डीजे के आवाज से खडखड कर रही थी। इंद्रजित ने अपने बेटे उपेन्द्र से कहाँ बेटे आवाज बहुत तेज आ रही है मुझे घबराहट हो रही है। उपेन्द्र ने कहाँ बाबुजी मैं कोशिश कर रहा हूँ मेरी बात सब मान जायेंगे और मैं डीजे बंद करवा दुंगा।

गली के ही गणेशात्सव की झाँकी निकल रही थी। उपेन्द्र भी गणोशत्सव समीति का एक सदस्य था। सब लोग उपेन्द्र की बहुत इज्जत करते थे। कई बार उपेन्द्र समिति का अध्यक्ष भी बना, परंतु जब से वह सर्विस में गया तब से उपेन्द्र ने समिति में पद लेना बंद कर दिया था। उपेन्द्र ने 1101 रूपये और एक श्रीफल ले करके झाँकी के समक्ष पहुँच गया जब 1100 रूपये चढ़ायें तो सारे सदस्यों ने ताली बजाकर उपेन्द्र का स्वागत किया फिर उपेन्द्र ने समिति के अध्यक्ष से कहाँ अश्विन बाबुजी का वीपी बहुत बढ़ रहा है उन्हें घबराहट भी हो रही है, तुम एक काम कर दो या तो इस जुलूस को आगे बढ़ा दे या फिर डीजे बंद करा दे।

अश्विसन ने डीजे गाडी वाले से कहाँ बस हो गया जुलूस आगे बढ़ाओ। परंतु सुनील देशमुख ने ड्राईवर को धमकी दे दी कि अगर एक कदम भी आगे बढ़ाया तो अगले साल तेरा डीजे नहीं लगवाऊंगा। सुनील देशमुख की बात सुनकर ड्राईवर ने गाड़ी को ज्यों का त्यों रखा। अश्विन पर सब डांस करने वाले गरम हो गये और कहने लगे, साल में एक बार तो डांस करने को मिलता है और उसमें भी आप रोड़े अटका रहे हो। चौराहे पर ही तो डांस होता है, गलीकुचियों में डांस करने का क्या फायदा?

आखिरकार रात के 10 भी बज गये थे और पुलिस वाले ने आकर डीजे बंद करवाने की कोशिश की परंतु उधर इन्द्रजीत को अटैक आ ही गया और इन्द्रजीत का पूरा शरीर ठंडा पड गया। उपेन्द्र ने डॉक्टर को बुलाया, डॉक्टर ने कह दिया कि इन्द्रजीत अब इस दुनिया में ना रहें। उपेन्द्र ने कहाँ ऐसा भी कोई धर्म होता है क्या? जब गणेशोत्सव समिती को घटना का पता लगा, तब सुनील देशमुख सहित पुरी समिति को अपनी गलती का एहसास हुआ और पुरी समिति ने बैठकर तय किया कि अगले साल से जुलूस में डीजे नहीं रहेगा।

संस्कार गीत

क्षमा की मूरत पारसनाथ

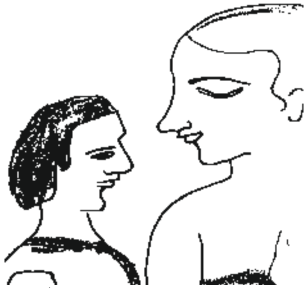

संकट हरण, तारण तरण,
अंतरिक्ष प्रभु पारसनाथ
शिरपुर विराजे, सब दुख निवारे
उपसर्ग जीते पारसनाथ

1

मूल स्वरूप दिगम्बर प्रभु का
शाजिस रची श्वेताम्बर का फेरा
प्रेम का झूठा स्वांग रचाया
झगड़ा बढ़ाया लेप चढ़ाया
कब तक सहेंगे उपसर्ग प्रभु जी
क्षमा की मूरत पारसनाथ

2

बलिदान दे जिनने तीर्थ बचाया
बलिदानी को शीश नवाया
कुंदकुंद ने महिमा गाई
मदनकीर्ति नेत्र मूरत सुहाई
युग युग से दिगम्बर शासन बताये
जन जन के रक्षक पारसनाथ

3

तीरथ पर आओ भक्ति रचाओ
मनवाँक्षित फल तुरंत ही पाओ
वीतराग प्रभुकर्ता न धरता
फिर भी भक्तों का भंडार भरता
मंगल आरति पूजन रचाओं
महिमा निराली पारसनाथ

बाल कविता

सिद्ध प्रभु की भक्ति

सिद्ध प्रभु की भक्ति करते
घोर पाप सब क्षण में नशते
आत्म शक्ति का बोध जगाते
सिद्धालय प्रभु शीश नवाते
जो गुणगान करें सिद्धों का
शुद्ध ज्ञान सुख समृद्धों का
सिद्ध प्रभू के दास बने हम
सिद्धचक्र का पाठ रचें हम
मेरी आतम सिद्ध प्रभु राम
सिद्ध सुमरन से मिटे सभी गम
सिद्ध भक्ति से संकट टलते
फिर क्यों सिद्ध प्रभु नहीं भजते

समाचार

आर्यिका दीक्षा सम्पन्न

बड़ागांव खेकड़ा- आचार्य श्री ज्ञेयसागर महाराज जी के करकमलों से 20 जनवरी 2025 को श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बड़ागांव खेकड़ा (उ.प्र.) में ब्र. अनीता दीदी सागर, ब्र. ललिता दीदी मुरैना, ब्र. चक्रेश दीदी दिल्ली को आर्यिका दीक्षा दी गई जिनके नाम क्रमशः आर्यिका श्री सुज्ञानमति माताजी, आर्यिका श्री दयामति माताजी, आर्यिका श्री दर्शनमति माताजी रखा गया।

कातंत्र जैन संस्कृत व्याकरण शिक्षण प्रशिक्षण शिविर

इंदौर- श्री दिगम्बर पंचबालयति मंदिर विद्यासागर नगर इंदौर में दिनांक 23 फरवरी से 2 मार्च 2025 तक कातंत्र रूपमाला पंचसंधि जैन संस्कृत व्याकरण शिक्षण प्रशिक्षण शिविर पंडित श्री रतनलाल जी, ब्र. सुरेश मलैया, ब्र. जिनेश मलैया, ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़ के निर्देशन में, ब्र.समता दीदी मारौरा के संयोजन में जिसे प्रशिक्षित करेंगे बाल ब्र. प्रदीप शास्त्री (पियूष) जबलपुर आप पढ़ने के इच्छुक ब्र. भैया, ब्र. बहने अथवा विद्वत्जन अपने आने की स्वीकृति 15 फरवरी 2025 तक देने की कृपा करें । जिससें आपकी समुचित व्यवस्थायें सुव्यवस्थित की जा सके। कुएं के पानी द्वारा शुद्ध भोजन की व्यवस्था रहेगी।

कमिश्नर श्री अशोक जैन स्वर्ण पदक से अलंकृत

वाराणसी- वाराणसी के पुलिस कमिश्नर श्री अशोक जी मुथा (आई.पी.एस) को 26 जनवरी 2025 को गणतंत्र दिवस पर अपनी विशिष्ट सेवाओं के लिए स्वर्ण पदक से अलंकृत किया गया। संस्कार सागर परिवार की ओर से आपको बहुत बहुत शुभकामनायें

मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग के परिणाम

18 जैन व्यक्तियों का चयन किया गया सुरभि जैन डिप्टी कलेक्टर, प्रियांशी जैन डिप्टी कलेक्टर, शुभम जैन डीएसपी, प्रतिमा जैन, लेबर ऑफिसर, पूजा जैन असिस्टेंट डायरेक्टर, एजुकेशन, सलोनी जैन-असिस्टेंट डायरेक्टर एजुकेशन, एनिश जैन-असिस्टेंट डायरेक्टर एजुकेशन, रूपल जैन-असिस्टेंट डायरेक्टर एजुकेशन, गौरव जैन-जनपद सीईओ, आस्था जैन ब्लॉक डेवलपमेंट ऑफिसर, आहिना जैन असस्टिंट ट्रेजरी ऑफिसर, अनामिका जैन, असिस्टेंट ट्रेजरी ऑफिसर, मयंक जैन असिस्टेंट ट्रेजरी ऑफिसर, सुची जैन आरटीओ सब इंस्पेक्टर, अनूप जैन, कॉपरेटिव एक्सटेंशन ऑफिसर, संस्कार जैन कॉपरेटिक एक्सटेंशन ऑफिसर, मीनू जैन, कॉपरेटिव एक्सटेंशन ऑफिसर सभी को संस्कार सागर परिवार की ओर से बहुत-बहुत शुभकामनायें।

श्रद्धांजलि

इंदौर-विख्यात सिविल इंजीनियर, फिल्म निर्माता, फिल्म डायरेक्टर, फिल्मी सितारा बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी डॉ. आजाद जैन कोठिया सुपुत्र पंडित ब्र. सुदेश तारा जी कोठिया का अति अल्प समय तक अस्वस्थ रहते असमय शरीर परिवर्तन (निधन) हो गया। इस विषम वेदना दायम समय में उनके परिवार में भाई इंजीनियर डॉ. अजित कोठिया, इंजीनियर डॉ. रजनी कोठिया भाई इंजीनियर आलोक कोठिया डॉ. सोनाली कोठिया बहिन प्रो. दीप्ति जैन इंजीनियर निरंजन जैन, डॉ. प्रोफेसर शालिनि जैन डॉ. प्रोफेसर नीलेश जैन और समस्त कोठिया परिवार, इष्ट मित्रों को इस दुख की घड़ी में श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

समाधिमरण

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की आज्ञानुवर्ती ब्र. कीर्ति दीदी (शीलू), राहतगढ़ वाले चौधरी कमलचंद जैन की सुपुत्री, वैशाली जैन की बहन, मनोज जैन की साली, ऋषिश और दर्शन की मौसी का आकस्मिक समाधिमरण दिनांक 18 नवम्बर 2024 को हुआ। श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करती है। तथा अनेक स्थानों पर विनयांजलि सभाओं का आयोजन किया गया।

वर्ग पहेली 304

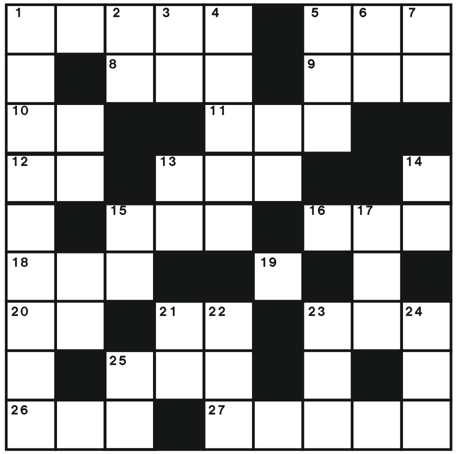

ऊपर से नीचे

1. 18 फरवरी को जिनकी समाधि हुए ऐसे आचार्य परमेष्ठी -9
2. आदत, व्यसन -2
3. सर्फ, सांप विषधर -2
4. रुकना -3
5. वरदान देने वाला -3
7. गीला आर्द्र -2
13. सखा, मित्र -2
14. काल्पनिक प्राणी सुन्दरी -2
15. चित्त अंतः करण -2
17. गाँव, बड़ागाँव, ग्राम -3
21. निशा रजनी -2
24. एक ऋतु का नाम, सितम्बर में आने वाली ऋतु का पहला शब्द -3

बाये से दाये

1. 13वें तीर्थंकर का नाम -5
8. पदक -3
9. करुणा, दया -3
10. संग -2
11. देवर्षि, समाचार देने वाले ऋषि -3
12. बन्दूक, तमंचा -2
15. बड़ा, विशाल -3
16. अज ध्वग विक्षनरी -3
18 कामदेव, दमोदर, श्रीकृष्णजी का एक नाम -3
19. वह (संस्कृत) -1
20. पराभव, पराजय कंठाभरण -2
21. चंद्रमा, पूर्णिमा का चंद्रमा -2
23. वाहवाही, खुशी प्रोत्साहन -3
25. मणि जवाहर नगीना -3
26. जलयान पोत -3
27. हवालात, दृष्टिबंधक -5

वर्ग पहेली 303 का हल

1 ने	2 ता	जी	3 सु	4 भा	ष	5 चं	द	■
6 क	ल	■	7 म	ग	■	च	■	8 ज
■	■	9 दा	न	■	10 म	ल	11 म	ल
12 वि	13 भा	ग	■	14 प	द	■	15 सा	या
16 वे	त	■	17 पा	र	■	18 नि	■	न
का	■	19 अ	■	20 बा	ग	वा	न	■
21 नं	22 द	न	व	न	■	23 स	र	24 स
25 द	ख	ल	■	■	26 र	■	■	म
■	त	■	27 कः	■	28 स	वि	न	य

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

....

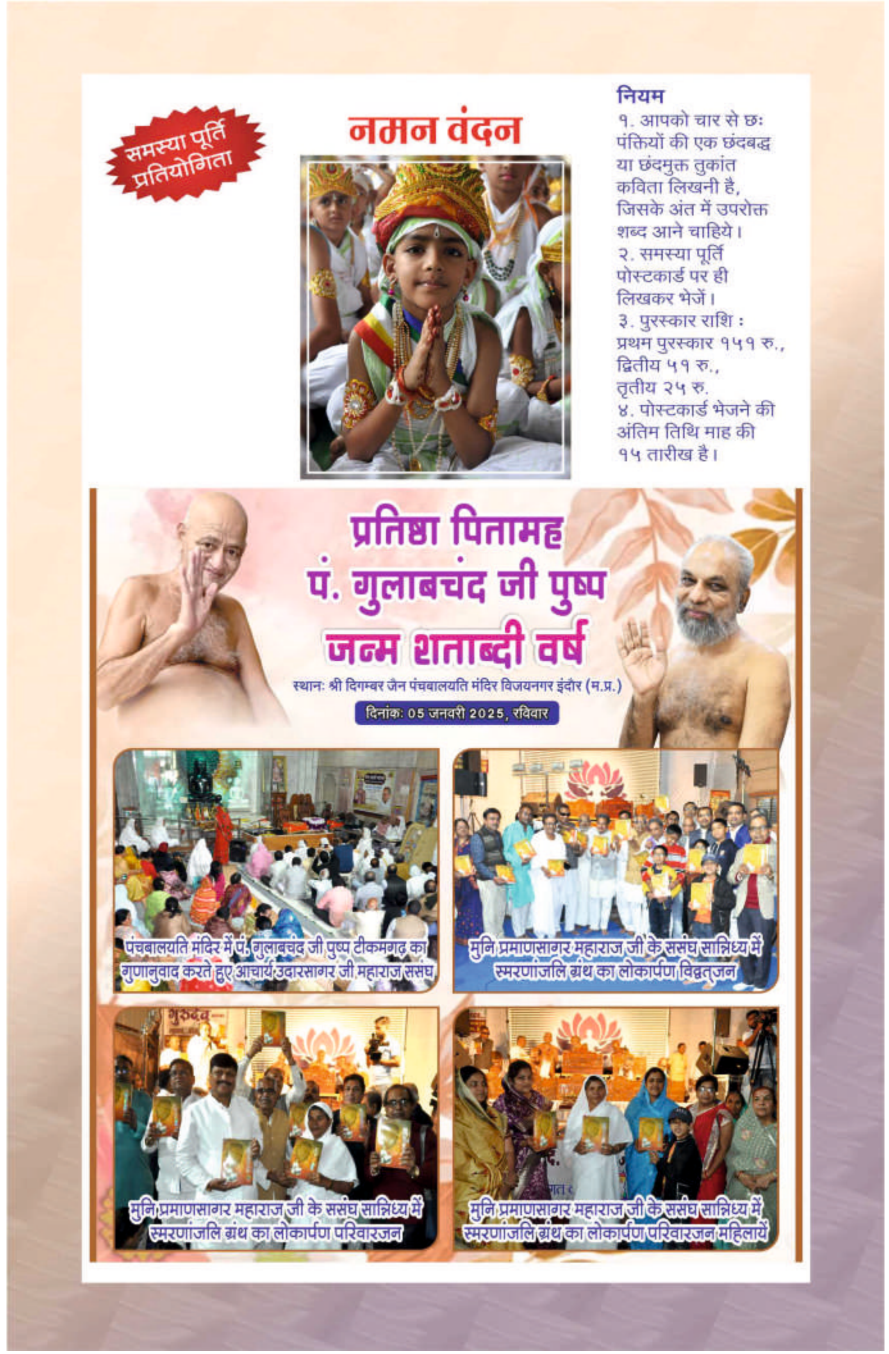

आचार्य श्री समयसागर जी महाराज ससंघ
एवं निर्यापक श्रमण अभयसागर महाराज जी ससंघ
आर्यिका ऋजुमति माताजी के ससंघ सान्निध्य में

दिनांक: 11 व 12 जनवरी 2025, सतना

मूकमृत्तिका महाकाव्य एवं धीवरोदय चम्पूकाव्य अनूठी कृतियों का भव्य लोकार्पण समारोह राष्ट्रीय विद्वत् संवाद सफलता पूर्वक सम्पन्न

मूकमृत्तिका महाकाव्य (मूकमाटी संस्कृत) ग्रंथ का लोकार्पण करते हुए विद्वत्जन

धीवरोदय चम्पूकाव्य ग्रंथ का लोकार्पण करते हुए विद्वत्जन

स्मरणांजलि ग्रंथ का लोकार्पण करते हुए विद्वत्जन

जैन ज्योतिष विद्या पंचांग कैलेण्डर का लोकार्पण करते हुए विद्वत्जन

संस्कार सागर जनवरी अंक का लोकार्पण करते हुए विद्वत्जन

सर्वोदयी संत की राष्ट्रीय देशना ग्रंथ का लोकार्पण करते हुए विद्वत्जन

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 29/01/2025, पोस्टिंग दिनांक : 03/02/2025